

# नगेन्द्र शर्माको निबन्धकारिता

त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा सामाजिक  
शास्त्र सङ्काय नेपाली केन्द्रीय विभागअन्तर्गत  
स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौं  
पत्रको प्रयोजनका लागि  
प्रस्तुत

## शोधपत्र

शोधार्थी  
निर्मला कार्की  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
कीर्तिपुर  
२०७०

## शोध निर्देशकको सिफारिस पत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभाग एम.ए. दोस्रो वर्षकी विद्यार्थी निर्मला कार्कीले नगेन्द्र शर्माको निबन्धकारिता शीर्षकको शोधपत्र मेरा निर्देशनमा तयार पारेकाले यसको आवश्यक मूल्याङ्कनका लागि नेपाली केन्द्रीय विभाग समक्ष सिफारिस गर्दछु ।

मिति : २०७०/१२/२६

.....  
डा. गोविन्दप्रसाद शर्मा  
उपप्रध्यापक  
नेपाली केन्द्रीय विभाग,  
त्रि.वि.कीर्तिपुर  
काठमाडौँ

त्रिभुवन विश्वविद्यालय  
मानविकी तथा सामाजिकशास्त्र सङ्काय  
नेपाली केन्द्रीय विभाग  
कीर्तिपुर

मिति : २०७०/१२/३०

स्वीकृतिपत्र

त्रिभुवन विश्वविद्यालय, मानविकी तथा सामाजिक शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत नेपाली केन्द्रीय विभाग, कीर्तिपुरकी छात्रा निर्मला कार्कीले स्नातकोत्तर तह, दोस्रो वर्षको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि तयार पार्नुभएको नगेन्द्र शर्माको निबन्धकारिता शीर्षकको शोधपत्र सोही प्रयोजनका लागि स्वीकृत गरिएको छ ।

मूल्याङ्कन समिति

हस्ताक्षर

विभागीय प्रमुख

प्रा.डा. देवीप्रसाद गौतम

.....

शोधनिर्देशक

डा. गोविन्दप्रसाद शर्मा

.....

बाह्य परीक्षक

प्रा.डा. रामनाथ ओझा

.....

शोधार्थी

निर्मला कार्की

नेपाली केन्द्रीय विभाग

कीर्तिपुर

## कृतज्ञता ज्ञापन

प्रस्तुत नगेन्द्र शर्माको निबन्धकारिता शीर्षकको शोधपत्र मैले त्रिभुवन विश्वविद्यालय मानविकी तथा समाज शास्त्र सङ्कायअन्तर्गत नेपाली विषयको स्नातकोत्तर तह दोस्रो वर्षको दसौं पत्रको प्रयोजनका लागि तयार पारेकी हुँ । प्रस्तुत शोधपत्र आदरणीय गुरु डा. गोविन्दप्रसाद शर्माज्यूको निर्देशनमा तयार पारेको हुँ । यस शोधपत्र तयार गर्ने क्रममा आफ्नो अमूल्य समय उपलब्ध गराई पथप्रदर्शन/निर्देशन गर्नुहुने शोधनिर्देशकप्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट गर्दछु ।

प्रस्तुत शोध विषयमा शोध कार्य गर्न अवसर जुटाउने नेपाली केन्द्रीय विभाग तथा विभागीय प्रमुख प्रा. डा. देवीप्रसाद गौतमप्रति म हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । शोधपत्रको निर्माणमा आफ्नो समय, श्रम खर्च गरी सहयोग गर्नु हुने शोधनायक नगेन्द्र शर्माप्रति हार्दिक आभार प्रकट गर्दछु । शोधपत्र तयार गर्ने कार्यमा आफ्नो कार्यव्यस्ततालाई परवाह नगरी अमूल्य समय निकालेर समय समयमा सल्लाह, सुभाष तथा हौसला दिई उत्प्रेरित गर्ने नेपाली केन्द्रीय विभागका सम्पूर्ण गुरुहरूप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु ।

यसरी नै आर्थिक र व्यावहारिक समस्यासँग सङ्घर्ष गर्दै आफ्नो अमूल्य श्रम र पसिना खर्चेर मेरो अध्ययनलाई यस अवस्थामा ल्याइ पुऱ्याउने पिता चक्रबहादुर कार्की माता धनमाँया कार्की तथा महङ्गो सहरमा मेरो उच्च शिक्षा अध्ययनको चाहनालाई मार्ग प्रदर्शन गर्नु हुने श्रीमान भीम कुमार थापाज्यूप्रति आजीवन ऋणी छु । मेरो अध्ययनलाई यहाँ सम्म ल्याउनलाई सहयोग र हौसला उचित मार्ग निर्देशन प्रदान गर्नुहुने दाजु भवेन्द्र, टोलेन्द्र र भाइ देवेन्द्रप्रति कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । शोधपत्र तयार गर्दा मेरो अमूल्य समय ख्यलगरी सहयोग गर्नुहुने छोरा निर्भीक थापा र बहिनी लक्ष्मी, स्मीता र भान्जाहरूलाई हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन गर्दछु । मेरा सम्पूर्ण मित्रहरूका साथै साथी कान्ता पोखरेल र भगवती सिग्देलप्रति कृतज्ञ छु । त्यसैगरी प्रस्तुत शोधपत्रको पाण्डुलिपिलाई टङ्कन गरी सहयोग गर्ने भाइ विष्णुप्रति आभार प्रकट गर्दछु । प्रस्तुत शोधपत्र तयार पार्दा आवश्यक पुस्तकहरू उपलब्ध गराइदिने त्रि. वि. पुस्ताकालयप्रति पनि हार्दिक आभार प्रकट गर्न चाहन्छु ।

अन्त्यमा, म यस शोधपत्रको समुचित मूल्याङ्कनका लागि त्रिभुवन विश्वविद्यालय नेपाली केन्द्रीय विभाग समक्ष प्रस्तुत गर्दछु ।

मिति : २०७०/१२/२७

शैक्षिकसत्र: २०६५/६७

त्रि.वि.दर्ता नम्बर: ६-२-२०६-२७६-९८

क्रमाङ्क: ४०

.....

निर्मला कार्की

नेपाली केन्द्रीय विभाग

कीर्तिपुर

## विषय सूची

पृष्ठ

### परिच्छेद - एक शोध परिचय

|       |   |   |
|-------|---|---|
| १.१   | विषय परिचय .....                                  | १ |
| १.२   | समस्याकथन .....                                   | २ |
| १.३   | शोधकार्यको उद्देश्यहरू .....                      | २ |
| १.४   | पूर्वकार्यको समीक्षा .....                        | ३ |
| १.५   | शोधकार्यको औचित्य .....                           | ५ |
| १.६   | शोधविधि.....                                      | ५ |
| १.६.१ | सामग्री सङ्कलन विधि .....                         | ६ |
| १.६.२ | सामग्री विश्लेषणको सैद्धान्तिक आधार र ढाँचा ..... | ६ |
| १.७   | शोधकार्यको सीमाङ्कन .....                         | ६ |
| १.८   | शोधपत्रको रूपरेखा .....                           | ६ |

### परिच्छेद- दुई नगेन्द्र शर्माको निबन्ध यात्रा

|       |  |    |
|-------|--|----|
| २.१   | विषय परिचय .....                         | ८  |
| २.२   | नेपाली निबन्ध परम्परामा शर्मा.....       | १० |
| २.३   | शर्माको निबन्ध यात्राको चरण विभाजन ..... | ११ |
| २.३.१ | प्रथम चरण .....                          | १२ |
| २.३.२ | द्वितीय चरण .....                        | १४ |
| २.४   | निष्कर्ष .....                           | १७ |

तेस्रो परिच्छेद  
निबन्धको सैद्धान्तिक परिचय

|      |   |    |
|------|---|----|
| ३.१  | विषय परिचय .....                                | १८ |
| ३.२  | निबन्ध विधाको परिचय .....                       | १८ |
|      | ३.२.१ निबन्धको व्युत्पत्ति र परिभाषा .....      | १८ |
|      | ३.२.२ पूर्वीय दृष्टिमा निबन्धको परिभाषा.....    | २० |
|      | ३.२.३ पाश्चात्य दृष्टिमा निबन्धको परिभाषा ..... | २१ |
|      | ३.२.४ नेपाली विद्वान्हरूको परिभाषा .....        | २३ |
| ३.३  | निबन्धको विशेषता .....                          | २५ |
|      | ३.३.१. आकारगत लघुता .....                       | २६ |
|      | ३.३.२. विचारात्मक पक्ष .....                    | २६ |
|      | ३.३.३. वस्तुगतता .....                          | २६ |
|      | ३.३.४. आत्मपरकता .....                          | २७ |
|      | ३.३.५. स्रष्टाको प्रकृतिको प्रस्तुति .....      | २७ |
|      | ३.३.६. आख्यानरहित गद्यभाषा .....                | २७ |
|      | ३.३.७. परिष्कृत भाषा .....                      | २८ |
| ३.४. | निबन्धका तत्त्वहरू .....                        | २८ |
|      | ३.४.१ विषय .....                                | ३० |
|      | ३.४.२ उद्देश्य / प्रयोजन .....                  | ३० |
|      | ३.४.३ भाषाशैली .....                            | ३१ |
| ३.५  | निबन्धको वर्गीकरण .....                         | ३१ |
|      | ३.५.१ निजात्मक निबन्ध .....                     | ३३ |
|      | ३.५.२ परात्मक निबन्ध .....                      | ३४ |
|      | ३.५.३ निबन्ध र प्रबन्ध बीच भिन्नता .....        | ३४ |
|      | ३.५.४ अन्य विधासँग निबन्धको सम्बन्ध.....        | ३६ |
| ३.६. | निबन्ध विश्लेषणका आधारहरू .....                 | ३९ |
| ३.७. | निष्कर्ष .....                                  | ४२ |

परिच्छेद चार  
नगेन्द्र शर्माका निबन्धको विषय

|      |  |     |
|------|--|-----|
| ४.१. | विषय परिचय .....   | ४३  |
| ४.२  | नगेन्द्रका निबन्ध निबन्धसङ्ग्रहको विश्लेषण.....            | ४३  |
|      | ४.२.१ आत्मपरक निबन्धहरू .....                              | ४३  |
|      | ४.२.२ संस्मरणात्मक निबन्धहरू .....                         | ५३  |
|      | ४.२.३ समीक्षात्मक निबन्धहरू .....                          | ५४  |
| ४.३  | अण्डादेखि भ्यगुतोसम्म निबन्धसङ्ग्रहको विश्लेषण .....       | ६०  |
|      | ४.३.१ आत्मपरक निबन्धहरू .....                              | ६१  |
|      | ४.३.२ संस्मरणात्मक निबन्धहरू .....                         | ६३  |
| ४.४  | बनारसका बेचिएकी बहिनी निबन्ध निबन्धसङ्ग्रहको विश्लेषण..... | ६८  |
|      | ४.४.१ सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरू .....                   | ६८  |
|      | ४.४.२ संस्मरणात्मक निबन्धहरू .....                         | ७०  |
|      | ४.४.३ भाषा व्यकरणा समीक्षात्मक निबन्धहरू .....             | ७२  |
| ४.५  | सम्झाउनि- बिसाउनि लघु निबन्ध निबन्धसङ्ग्रहको विश्लेषण..... | ७३  |
|      | ४.५.१ सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरू .....                   | ७३  |
|      | ४.५.२ संस्मरणात्मक निबन्धहरू .....                         | ७५  |
|      | ४.५.३ समीक्षात्मक निबन्धहरू .....                          | ७६  |
| ४.६  | छासमिस-मासमिस लघु निबन्ध निबन्धसङ्ग्रहको विश्लेषण.....     | ७७  |
|      | ४.६.१ पौराणिक आत्मपरक निबन्धहरू .....                      | ७८  |
|      | ४.६.२ समीक्षात्मक निबन्धहरू .....                          | ७९  |
| ४.७  | अनुस्मरण निबन्ध निबन्धसङ्ग्रहको विश्लेषण.....              | ८३  |
|      | ४.७.१ आत्मपरक निबन्धहरू .....                              | ८४  |
|      | ४.७.२ संस्मरणात्मक निबन्धहरू .....                         | ८६  |
|      | ४.७.३ राजनीतिक निबन्धहरू .....                             | ९४  |
|      | ४.७.४ भाषा व्यकरणा समीक्षात्मक निबन्धहरू .....             | ९७  |
| ४.८  | फुटकर रचनाहरूको अध्ययन .....                               | ९९  |
|      | ४.८.१ संस्मरणात्मक निबन्धहरू .....                         | ९९  |
|      | ४.८.२ भाषा व्यकरणा समीक्षात्मक निबन्धहरू .....             | १०२ |

|                    |     |
|--------------------|-----|
| ४.९ निष्कर्ष ..... | १०३ |
|--------------------|-----|

**परिच्छेद पाँच**  
**नगेन्द्र शर्माका निबन्धको उद्देश्य**

|  |     |
|--|-----|
| ५.१ विषय परिचय .....                         | १०४ |
| ५.२ नगेन्द्र शर्माको निबन्धको उद्देश्य ..... | १०४ |
| ५.३ निष्कर्ष .....                           | ११२ |

**परिच्छेद छ**  
**नगेन्द्र शर्माका निबन्धको भाषाशैली**

|  |     |
|--|-----|
| ६.१ विषय परिचय .....                         | ११३ |
| ६.२ नगेन्द्र शर्माको निबन्धको भाषाशैली ..... | ११३ |
| ६.२ 'नगेन्द्रका निबन्ध' निबन्ध.....          | ११३ |
| ६.३ 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' निबन्ध .....    | ११५ |
| ६.४ 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' निबन्ध .....     | ११६ |
| ६.५ सम्झाउनि- बिसाउनि निबन्ध .....           | ११६ |
| ६.६ 'छासमिस्-मासमिस्' निबन्ध .....           | ११७ |
| ६.७ 'अनुस्मरण' निबन्ध .....                  | ११८ |
| ६.८ निष्कर्ष .....                           | ११९ |

**परिच्छेद- सात**  
**उपसंहार**

|                    |     |
|--------------------|-----|
| ७.१ उपसंहार .....  | १२० |
| ७.२ निष्कर्ष ..... | १२५ |

**सन्दर्भसामग्री सूची**

## परिच्छेद एक

# शोधपरिचय

### १.१ विषय परिचय

नगेन्द्र शर्माको जन्म वि.सं. १९८७ साल मङ्सिर ७ गते कृष्ण पक्ष दशमी तिथिका दिन भारतको दार्जिलिङको खरखाङ अन्तर्गत डाउहिल रोडस्थित सिंहवाहिनी मन्दिरको पुजारी घरमा भएको हो । उनका बाबुको नाम नन्दप्रसाद शर्मा र आमाको नाम हरिप्रिया शर्मा हो (सिग्देल, २०६९ : पृ. १८) । उनको अक्षरारम्भ घरमा बुबा र हजुरबुबाबाट मिलेको देखिन्छ (सिग्देल, २०६९ : पृ. १८) । शर्माको प्राथमिक तहको शिक्षा 'डेभिस प्राइमारी स्कूल' डाउहिलबाट र पुष्पराणी रोय मेमोरियल हाइस्कूलबाट प्रवेशिका प्रथम श्रेणीमा पास गरे (सिग्देल, २०६९ : पृ.१९ ) । शर्माले दार्जिलिङको सरकारी क्याम्पसबाट विज्ञान विषयको परीक्षामा प्रथम श्रेणीमा प्रवीणता प्रमाणपत्र पास गरी स्नातकतह मानविकी सङ्काय अन्तर्गत अर्थशास्त्रमा अनर्स गरेका छन् । शर्माले कलकत्ता युनिभर्सिटीबाट कानून विषयमा स्नातक गरेका छन् भने स्नातकोत्तरमा प्राचीन इतिहास र संस्कृति तथा अंग्रेजी विषयमा भर्ना भई अध्ययन गरेको पाइन्छ । शर्माले वि.सं. २०१९ मा त्रिभुवन विश्वविद्यालयबाट स्नातकोत्तर तहमा नेपाली विषयको प्राइभेट परीक्षा दिई प्रथम भएका थिए (सिग्देल, २०६९ : पृ.१९ ) । शर्माले औपचारिक शिक्षाका साथै अनौपचारिक शिक्षा तिब्बती, फ्रान्सेली, जापानी, उर्दू, अङ्ग्रेजी, नेवारी आदि भाषाको अध्ययन गरेका छन् (सिग्देल, २०६९ : पृ. १९) ।

शर्माले विद्यालय र क्याम्पसमा शिवकुमार राई, महानन्द सापकोटा, धरणीधर कोइराला, सूर्यविक्रम ज्ञवाली, ईश्वर बराल, पारसमणि प्रधान, लैनसिंह बाङ्देल आदिबाट लेखन प्रेरणा पाएका हुन् । शर्माका निबन्ध र अन्य विषयका गरी जम्मा बीसवटा कृतिहरू प्रकाशित छन् । शर्माले कथा, निबन्ध,संस्मरण, समालोचना, भाषा साहित्यका खोजकर्ताका रूपमा कलम चलाए पनि शर्मालाई नेपाली साहित्यमा परिचित गराउने विधा भने निबन्ध हो । नेपाली साहित्यका क्षेत्रमा निबन्धकार, कथाकार, सम्पादक, समालोचक, अनुवादक, खोजकर्ताका साथै निबन्धकारका रूपमा परिचित छन् । उनको साहित्यिक लेखनको मुख्य क्षेत्र भने निबन्ध नै

देखिन्छ । उनका 'नगेन्द्रका निबन्ध' (२०२६), 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' (२०२४), 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' (२०४७) र 'अनुस्मरण' (२०६८) जस्ता चार निबन्धसङ्ग्रहका साथै 'सम्भाउनि बिसाउनि' (सन् २००५) र 'छासमिस मासमिस' (सन् २००५) र जस्ता दुई लघु निबन्धसङ्ग्रह पनि प्रकाशित छन् । अन्य नेपाली भाषामा प्रकाशित कृतिहरू 'नेपाली जनजीवन' (२०३२) परिचयात्मक निबन्धसङ्ग्रह, 'ईसाई पुराण : नेपाल खण्ड' (२०३९) खोज पुस्तिका हो भने 'कथा क्यानाडा' (२०६६) यात्रा संस्मरण र 'दोभानको मान्छे' (२०६८) आत्मसंस्मरण ग्रन्थ प्रकाशित छन् । त्यस्तै नगेन्द्र शर्माले अङ्ग्रेजी र जापानी भाषामा पनि पुस्तक प्रकाशित गरेका छन् । शर्माका निबन्धहरूमा समाजमा रहेका विकृति, विसङ्गति, प्रचलित गलत संस्कार, परम्परा र सोचाइ आदिका बारेमा अपत्यारिलो र चित्त नबुझे कुराहरूमाथि गहिरो तर्क गरेका छन् ।

## १.२ समस्याकथन

नगेन्द्र शर्माका निबन्धहरूका बारेमा आंशिक रूपमा अध्ययन भए पनि हालसम्म प्राज्ञिक रूपमा निबन्धकारिताको अध्ययन हुन सकेको छैन । त्यसैले प्रस्तुत शोधपत्रमा नगेन्द्र शर्माको निबन्धकारिताको अध्ययन गर्नु प्रमुख समस्या रहेको छ । यसै प्रमुख समस्यासँग गाँसिएर निम्नलिखित समस्याहरू यस शोधपत्रमा आएका छन् ।

१. नगेन्द्र शर्माका निबन्धमा के कस्तो विषयको प्रयोग गरिएको छ ?
२. नगेन्द्र शर्माका निबन्धमा के कस्ता उद्देश्य रहेका छन् ?
३. नगेन्द्र शर्माका निबन्धमा के कस्तो भाषा शैलीको प्रयोग गरिएको छ ?

## १.३ शोधकार्यको उद्देश्यहरू

प्रस्तुत शोधपत्रको प्रमुख उद्देश्य नगेन्द्र शर्माको निबन्धकारिताको अध्ययन रहेको छ भने यही मूल उद्देश्यसँग सम्बन्धित यस शोधपत्रका निम्नलिखित उद्देश्यहरू रहेका छन् :

१. नगेन्द्र शर्माका निबन्धको विषयको अध्ययन गर्नु

२. नगेन्द्र शर्माका निबन्धको उद्देश्यको अध्ययन गर्नु
३. नगेन्द्र शर्माका निबन्धको भाषाशैलीको अध्ययन गर्नु

#### १.४ पूर्वकार्यको समीक्षा

नगेन्द्रका निबन्ध (२०२६) निबन्धसङ्ग्रहका निबन्धहरूका बारेमा यसभन्दा पूर्व पनि विभिन्न पुस्तक तथा पत्रपत्रिकामा आंशिक रूपमा चर्चा गरिएको पाइन्छ, जसको सङ्क्षिप्त विवरण कालक्रमिक रूपमा यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ ।

रामलाल अधिकारी (सन् १९७५)ले 'नेपाली निबन्धयात्रा' नामक कृतिमा, नगेन्द्र शर्माले आफ्नू वर्ण्य विषयवस्तुको पुष्टिका निमित्त पूर्वीय र पश्चिमी दुवैतिरका ग्रन्थ र शास्त्रहरूको प्रशस्त अवलम्बन गरी उद्धरण र सन्दर्भ लिनुभएको भए पनि तिनले निबन्धलाई प्रबन्ध बनाउने दिशातर्फ बढ्ने आग्रह पटकै गरेका छैनन् र यही नै साँचो निबन्धकारको कौशल पनि हो भनी नगेन्द्र शर्माको निबन्ध लेखन शैलीको प्रशंसा गरेका छन् ।

तारानाथ शर्मा (२०२६)ले 'नगेन्द्रका निबन्ध' कृतिको भूमिका लेखनका क्रममा नगेन्द्र शर्माका निबन्धहरूलाई उच्च कोटिको ठानेका छन् । यिनका व्यक्त विचारहरू युग सुहाउँदा प्रगतिशील र सुन्दर छन् भनी उनले चर्चा गरेका छन् ।

दयाराम श्रेष्ठ र मोहनराज शर्मा (२०३४)ले 'नेपाली साहित्यको सङ्क्षिप्त इतिहास' नामक कृतिमा नगेन्द्र शर्माका निबन्धहरू विचारोत्तेजक भएर पनि भावनात्मक धरातलमा टेकाइएकाले कलात्मक भएका छन् भनी चर्चा गरेका छन् ।

रविलाल अधिकारी (२०४७)ले गरिमामा 'नेपाली निबन्धको विकासक्रम' भन्ने शीर्षक दिई सामाजिक विषयवस्तु वा यात्रा वर्णनबाट कलम कुदाएर सङ्ग्रह प्रकाशित गरी नेपाली निबन्धलाई सहयोग पुऱ्याएको कुरा भुल्न नसकिने तथ्य हो भनी नगेन्द्र शर्मा र उनको निबन्धसङ्ग्रहको उल्लेख गरेका छन् ।

कृष्णप्रसाद पराजुली (२०५०)ले 'पन्ध्र तारा नेपाली साहित्य' नामक कृतिमा नगेन्द्र शर्मालाई सामाजिक र ऐतिहासिक, साहित्यिक र सांस्कृतिक विषयमा केन्द्रित भएर निबन्ध लेख्ने निबन्धकार भनी उल्लेख गरेका छन् ।

खगेन्द्रप्रसाद लुइटेल र देवीप्रसाद गौतम (२०५४)ले 'नेपाली निबन्ध' नामक कृतिमा नगेन्द्र शर्माको नगेन्द्रका निबन्ध (२०२६) निबन्धसङ्ग्रहको उल्लेख गर्दै सरल भाषाशैलीमा तार्किक ढङ्गले अन्धपरम्पराको विरोध गर्नु यिनको विशेषता हो भनेका छन् ।

तारानाथ शर्मा (२०५६)ले 'नेपाली साहित्यको इतिहास' नामक कृतिमा नगेन्द्र शर्मालाई सरस शैली र कर्मकाण्डविरोधी विषयवस्तु लिएर देखापरेका निबन्धकार हुन् भन्दै पुराना र थोत्रा परम्पराहरूको वैज्ञानिक विरोध गर्नुमा उनको वैशिष्ट्य देखिएको छ भनी चर्चा गरेका छन् ।

राजेन्द्र सुवेदी (२०५८)ले 'स्रष्टा-सृष्टि : द्रष्टा दृष्टि' नामक कृतिमा नगेन्द्र शर्माको परिचय दिँदै उनको कृतिबाट प्रचलित संस्कार र मान्यतालाई वैज्ञानिक र वस्तुवादी परिष्कार गर्नुपर्ने, वास्तविक मूल्य र मान्यता स्थापना गर्नुपर्ने कुरामा नगेन्द्रका निबन्धबाट स्पष्ट हुँदै आएको छ भन्ने कुरा व्यक्त गरेका छन् ।

गोपीकृष्ण शर्मा (२०६३)ले 'नेपाली निबन्ध परिचय' नामक कृतिमा निबन्ध साहित्यलाई भरिलो बनाउन आफ्नो लेखनी तिखाउँदै लगेका साहित्यकारको कोटीमा नगेन्द्र शर्मा र उनको नगेन्द्रका निबन्ध कृतिको चर्चा गरेका छन् ।

तेजप्रसाद भण्डारी (२०६५)ले 'नगेन्द्र शर्माको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन' शोधपत्रमा नगेन्द्रका निबन्ध निबन्धसङ्ग्रहमा सामाजिक समस्या, नारी समस्या, जातभात समस्या, धर्म र संस्कृति समस्या, दाम्पत्य समस्या आदिलाई लेखकले प्रगतिशील तर्कद्वारा समाधान गर्न खोजेको पाइन्छ भनी चर्चा गरेका छन् ।

प्रमोद प्रधान (२०६६)ले 'नेपाली निबन्धको इतिहास' नामक कृतिमा नगेन्द्र शर्मालाई सुस्पष्ट दृष्टिकोणका साथ देखापरेका निबन्धकार हुन् भन्दै उनी निबन्धका माध्यमबाट साभा राष्ट्रिय मान्यताको स्थापना, सामाजिक सांस्कृतिक विषमताको अन्त्य तथा अन्धविश्वास, रुढि र

धर्मका नाममा प्रचलित विकृति एवम् विसङ्गतिप्रति प्रहार गर्न कम्मर कसेर लागेका देखिन्छन्, यस क्रममा उनी आफ्नो विचारको पक्षमा घतलाग्दो पाराले तर्कको प्रस्तुति गर्छन् भनी उल्लेख गरेका छन् ।

भगवती सिग्देल (२०६९)ले 'नगेन्द्र शर्माका निबन्ध' निबन्ध संग्रहको अध्ययन शोधपत्रमा निबन्ध संग्रहभित्रका निबन्धहरूको भाषा सरल र बोधगम्य रहेकोछ । तत्सम, तद्भव र आगन्तुक तीनै स्रोतका शब्दहरूको समानुपातिक प्रयोग यस निबन्धसंग्रहमा निबन्धकारले गरेका छन् ।

शर्माका निबन्ध कृतिका विषयमा व्यक्त विचारहरूलाई मनन गर्दा उनका कृतिमा युग सुहाउँदा प्रगतिशील र सुन्दर विचारहरू रहेका स्पष्ट हुन्छ । उनका कृतिबाट प्रचलित संस्कार र मान्यतालाई वैज्ञानिक र वस्तुवादी ढङ्गले परिष्कार गर्नुपर्ने, वास्तविक मूल्य र मान्यता स्थापना गर्नुपर्ने कुरामा जोड दिइएको पाइन्छ ।

#### १.५ शोधकार्यको औचित्य

नगेन्द्र शर्माको निबन्ध सङ्ग्रहहरूका बारेमा विभिन्न कृतिगत शोध भएका छन् तर प्राज्ञिक रूपमा नगेन्द्र शर्माको निबन्धकारिताको शोध अहिले सम्म नभएको स्पष्ट छ । यस परिप्रेक्ष्यमा नगेन्द्र शर्माको निबन्धकारितामा शोधपत्र तयार गरिएको छ । यस शोधपत्रबाट शर्माका निबन्ध सङ्ग्रहका विषयमा जानकारी लिन चाहने पाठकहरू लाभान्वित हुनुका साथै पुस्तकालयीय परम्पराको विकासमा महत्त्वपूर्ण योगदान समेत पुग्ने देखिन्छ । विश्लेषणात्मक रूपमा अध्ययन गरी तयार पारिएको यस शोधपत्रबाट भावी शोधकर्ताहरूका निमित्त मार्गदर्शन समेत हुने भएकाले यस शोधपत्रको प्राज्ञिक तथा अनुसन्धानात्मक औचित्य पुष्टि हुन्छ ।

#### १.६ शोधविधि

शोधविधिको प्रयोग अन्तर्गत सामग्री सङ्कलन विधि र सामग्री विश्लेषणको ढाँचा राखिएको छ ।

### १.६.१ सामग्री सङ्कलन विधि

प्रस्तुत शोध कार्य कृतिकेन्द्री साहित्यिक अनुसन्धान हो । त्यसैले यसका लागि आवश्यक सामग्रीहरू पुस्तकालयीय स्रोतबाटै सङ्कलित गरिएको छ । यस शोधकार्य सम्पन्न गर्न शोध विषयसँग सम्बन्धित पुस्तक, पत्रपत्रिका जस्ता द्वितीयक सामग्रीको सङ्कलन पुस्तकालयीय कार्यद्वारा गरिएको छ । यस क्रममा सम्बन्धित विषयसँग सम्बन्ध राख्ने सौद्धान्तिक सामग्रीको प्रयोग पनि गरिएको छ ।

### १.६.२ सामग्री विश्लेषणको सैद्धान्तिक आधार र ढाँचा

प्रस्तुत शोध निबन्ध कृतिको विश्लेषणमा आधारित रहेको छ । यसको अध्ययन गर्न तिनै निबन्ध तत्त्वपूर्ण लाई मूल सैद्धान्तिक पर्याधार बनाइएको छ । निबन्धका तत्त्व भन्नाले निबन्धका आवश्यक अङ्ग/अवयव/घटक हुन् । निबन्धका विषय, उद्देश्य र भाषाशैली प्रमुख तत्त्व मानिन्छ । ती तत्त्वहरू मध्ये प्रस्तुत शोधकार्यमा विषय, उद्देश्य र भाषाशैलीलाई मूल सैद्धान्तिक पर्याधार बनाइएको छ ।

### १.७ शोधकार्यको सीमाङ्कन

प्रस्तुत शोधपत्र कृतिपरक विवेचनामा आधारित छ । यस शोधपत्रमा निबन्धकार नगेन्द्र शर्माद्वारा रचिएका निबन्ध सङ्ग्रहको कृतिपरक विवेचना गरिएको छ र त्यसबाट उनका निबन्धत्मक प्रवृत्तिहरूको निरूपण गरिएको छ । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण गर्न निबन्धका तत्त्वहरू केन्द्रीय विषय, उद्देश्य र भाषाशैली जस्ता विविध सान्दर्भिक कोणलाई मूल आधार बनाइएको छ । यही नै प्रस्तुत शोधकार्यको सीमा हो ।

## १.८ शोधपत्रको रूपरेखा

प्रस्तुत शोधपत्रलाई विभिन्न परिच्छेदमा विभक्त गरी प्रस्तुत गरिएको छ । यसमा सात परिच्छेद छन् । यसको रूपरेखा यस प्रकार छ :

- परिच्छेद एक : शोधपरिचय
- परिच्छेद दुई : नगेन्द्र शर्माको निबन्ध यात्रा
- परिच्छेद तीन : निबन्धको सैद्धान्तिक परिचय
- परिच्छेद चार : नगेन्द्र शर्माका निबन्धको विषय
- परिच्छेद पाँच : नगेन्द्र शर्माका निबन्धको उद्देश्य
- परिच्छेद छ : नगेन्द्र शर्माका निबन्धको भाषाशैली
- परिच्छेद सात : उपसंहार तथा निष्कर्ष

## नगेन्द्र शर्माको निबन्ध यात्रा

### २.१ विषय परिचय

प्रस्तुत परिच्छेदमा नगेन्द्र शर्माको निबन्ध यात्राको अध्ययन गरिएको छ । नगेन्द्र शर्मा निबन्ध विधाको आधुनिक कालमा देखापरेका निबन्धकार हुन् । नगेन्द्र शर्मालाई नेपाली साहित्यमा परिचित गराउने विधा निबन्ध हो । उनले सर्वप्रथम वि.सं. २००६ तिर **भारती** ( दार्जिलिङ) पत्रिकामा 'हाम्रो अस्तित्व' नामक निबन्ध सार्वजनिक गरेको पाइन्छ (भण्डारी : २०६५ : ३०) । उनका विभिन्न फुटकर रचनाहरू विभिन्न पत्र-पत्रिकामा प्रकाशित छन् । शर्माका निबन्धात्मक कृतिहरू पनि प्रकाशित छन् । ती हुन् : 'नगेन्द्रका निबन्ध' (२०२६), 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' (२०४२) र 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' (२०४७) 'अनुस्मरण' ( २०६८) । शर्माले नेपाली निबन्ध साहित्यमा चार निबन्धसङ्ग्रह प्रकाशित गरिसकेका छन् । लामा निबन्ध लेखन सिपालु भइसकेका शर्माले नेपाली साहित्यमा लघुनिबन्ध पनि लेखेका छन् । शर्माका **सम्झाउनि-बिसाउनि** (सन् २००५) र **छासमिस-मासमिस** (सन् २००५) दुई लघु निबन्धसङ्ग्रह पनि प्रकाशित छन् ।

शर्माको निबन्धकलाका बारेमा विभिन्न विद्वान्हरूले चर्चा गरेका छन् । नेपाली निबन्ध साहित्यका गहन अध्येता रामलाल अधिकारीले शर्माको निबन्धकारिताको चर्चा गर्दै भन्दछन् - "प्रचलित परम्परा र मान्यतालाई वैज्ञानिक दृष्टिले पर्गेल्न चाहने यथार्थ र सुधारवादका कट्टर समर्थक श्री नगेन्द्र शर्मा आफ्ना निबन्धहरूमा आत्मपरक शैलीमा छोटो, मीठा र चुटुकिला स्वकीय घटनाहरू इमानदारीपूर्वक सुनाउन आरम्भ गरी पाठकलाई फकाउँदै फुल्याउँदै कति गहिरिएर अन्त्यमा जटिल विषयहरू सम्बन्धी पाठकसँग गफ गर्न थालिसकेको हुनुहुन्छ, त्यो पाठकले धरि थाहा नपाईकनै सबै भइसकेको हुन्छ (अधिकारी, सन् १९७५ : ९९) । **नगेन्द्रका निबन्ध** (२०२६) को भूमिकामा नगेन्द्र शर्माको निबन्धकलाको चर्चा गर्दै डा. तारानाथ शर्मा भन्छन् - "राम्रा राम्रा उपमाहरू प्रयोग गरेर मुटु छुने पाराले जीवनका महत्त्वपूर्ण कुराहरूबारे

वैज्ञानिक तर्क गरेर लेखिएका यी निबन्धहरू नेपाली साहित्यमा विशेष स्थान ओगट्न समर्थ भएका छन् । ...यिनमा व्यक्त विचारहरू युगसुहाउँदा, प्रगतिशील र सुन्दर छन्, समाजमा अभै जुको टाँसिएभै रहेका घृणित रुढिहरूलाई यी निबन्धले गतिलो भापट दिएका छन् । कति चटक नगरी चतुरतापूर्वक चित्तबुभदा तर्कहरूको सहायताले आफ्नो दृष्टिकोण उपस्थित गर्नु र आफ्नो दृष्टिकोणप्रति पाठकहरूको पत्यार जगाउनु यस पुस्तकका दक्ष निर्माताको विशिष्टता देखिन्छ । समाजका नारी समस्या, जातभात समस्या, धर्म र संस्कृति समस्या, साहित्य समस्या र दाम्पत्य समस्यालाई लेखकले आफ्नो प्रगतिशील तर्कद्वारा समाधान गर्न खोज्नुभएको छ । पुराना रुढिग्रस्त मान्यताहरूलाई गर्ल्याम-गुर्लुम पार्नु मात्र नभएर राष्ट्रिय र साभा मान्यताहरूको स्थापनातर्फको चेष्टा गर्नु पनि उहाँको समाधान हो (शर्मा, २०२६ : २-३) । त्यस्तै नेपाली साहित्यका अर्का विद्वान् दयाराम श्रेष्ठ शर्माको निबन्धकारिताको चर्चा गर्दै भन्छन् - “शर्मा गम्भीरभन्दा गम्भीर विषयमा तर्क दिन अधि सर्नुहुन्छ, र यसो गर्न उहाँ डराउनुहुन्न । केवल सतही प्रभाव वा क्षणिक आवेशको भ्रममा परेर तर्कको एकोहोरो प्रवाह छुटाउने प्रवृत्तिबाट उहाँ टाढा हुनुहुन्छ । वहाँ बौद्धिक रूपले पहिले चिन्तन गर्नुहुन्छ, त्यसपछि ग्रन्थका पृष्ठहरू केलाउनुहुन्छ, अनि मात्र तर्कका निमित्त युद्धक्षेत्रमा प्रवेश गर्न तम्तयार हुनुहुन्छ । अतः वहाँको तार्किक रणनीति हाम्रा लागि आकर्षक बन्दछ । ...वहाँको निबन्धकारितामा केवल भावना र अनुभूतिको भुलभुल मात्र छैन, जीवनमा आर्जित ज्ञान, अनुभव तथा बौद्धिक उचाइको पृष्ठाधार पनि छ । वहाँमाथि कलाको सुदृष्टि छ । मन तथा मस्तिष्कको मिलन-बिन्दुमा वहाँका निबन्धहरू सृजित छन् । साँच्चै हो, तर्क र अनुभूतिको निरन्तरता भन्नु नै नगेन्द्रका निबन्धहरू हुन् (शर्मा, २०४२ : भूमिका क - ज) । माथिका विभिन्न विद्वान्हरूका भनाइबाट नै नगेन्द्र शर्माको निबन्धकार व्यक्तित्व प्रस्ट भएको पाइन्छ, साथै **भारती** पत्रिकाबाट सुरु भएको शर्माको निबन्ध लेखन **गोरखापत्र**, **रूपरेखा**, **फूलपाती**, **रेषा**, **मधुपर्क**, **हाम्रो संस्कृति**, **प्रगति**, **हाम्रो संसार**, **अञ्जली**, **गरिमा**, **सञ्चय**, **परिवेश**, **नेपाली** आदि नेपाल र भारतका विभिन्न स्थान तथा समयमा प्रकाशित भएका पत्रिकाका निबन्धहरूले गर्दा उनमा निबन्धकार व्यक्तित्व बढी रहेको थाहा हुन्छ । अतः शर्माको आधुनिक नेपाली निबन्धको विकासमा उल्लेख्य स्थान रहेको छ ।

नगेन्द्र शर्मा संस्मरणकारका रूपमा पनि सफल रहेका छन् । शर्माको संस्मरण ग्रन्थ **कथा क्यानाडा** (२०६६) प्रकाशित छ । शर्माको आफ्नै आत्म-वृत्तान्त **अनुस्मरण** (२०६८) कृति पनि

प्रकाशित छ । त्यस्तै संस्मरणात्मक लेखहरू विभिन्न पत्रपत्रिकामा प्रकाशित छन् । शर्माको 'धनुषदाइको धोको' शीर्षकको संस्मरण २०६४ सालको गरिमा मासिकको साउन अङ्कमा प्रकाशित भएको छ । त्यस्तै अर्को संस्मरण चीन भ्रमणको 'नीलो नदीमा हरिया पहाडका छायाँ' मधुपर्क (२०६५) पत्रिकामा प्रकाशित छ । शर्माका संस्मरणात्मक लेख रचनाले गर्दा उनलाई संस्मरणकारका रूपमा पनि लिन सकिन्छ

## २.२. नेपाली निबन्ध परम्परामा शर्मा

नेपाली साहित्यका विविध विधाहरूमध्ये कान्छो विधा निबन्ध हो । यस विधाको सुरुवात विश्व साहित्यमा सोह्रौँ शताब्दीमै भइसके पनि नेपाली साहित्यमा उन्नाइसौँ शताब्दीतिर मात्र भएको मानिन्छ । नेपाली साहित्यका अन्य विधाको जस्तै निबन्ध विधाको इतिहासलाई पनि कालक्रममा हेर्न सकिन्छ । निबन्ध विधालाई तीन चरणमा विभाजन गरेर अध्ययन गरिन्छ । ती यस प्रकार छन् -

प्रारम्भिक काल - १८३१ देखि १९५७ सम्म

माध्यमिक काल - १९५८ देखि १९९१ सम्म

आधुनिक काल - १९९२ देखि हालसम्म

नगेन्द्र शर्मा निबन्ध विधाको आधुनिक कालमा देखापरेका निबन्धकार हुन् । शर्माले वि.सं. २००६ सालमा 'हाम्रो अस्तित्व' नामक निबन्ध **भारती** (दार्जिलिङ) पत्रिकामा प्रकाशित गरी निबन्ध लेखन प्रारम्भ गरेका हुन् । शर्माले छ दशक लामो निबन्ध यात्रा पार गरिसकेका छन् । उनी अझै लेखनमा क्रियाशील रहेका छन् । उनको यस निबन्धात्मक यात्रामा चार निबन्धसङ्ग्रहहरू र दुई लघुनिबन्धसङ्ग्रहहरू प्रकाशित छन्, ती यस प्रकार छन् -

- |                           |        |                |
|---------------------------|--------|----------------|
| १. नगेन्द्रका निबन्ध      | (२०२६) | (निबन्धसंग्रह) |
| २. अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म | (२०४२) | (निबन्धसंग्रह) |

|                          |            |                   |
|--------------------------|------------|-------------------|
| ३. बनारसमा बेचिएकी बहिनी | (२०४७)     | (निबन्धसंग्रह)    |
| ४. सम्झाउनि-बिसाउनि      | (सन् २००५) | (लघुनिबन्धसंग्रह) |
| ५. छासमिस-मासमिस         | (सन् २००५) | (लघुनिबन्धसंग्रह) |
| ६ अनुस्मरण               | (२०६८)     | (निबन्धसंग्रह)    |

निबन्धकार शर्माको निबन्ध यात्रालाई हेर्दा मुख्य रूपले दुई चरणमा विभाजन गर्न सकिन्छ । प्रथम चरण (वि.सं. २००६- २०४७ सम्म) र दोस्रो चरण (वि.सं. २०४८ - हालसम्म) पहिलो चरणमा लामो निबन्धहरूका सङ्ग्रहहरूलाई राखिएको छ भने दोस्रो चरणमा लघु निबन्धसङ्ग्रहलाई राखिएको छ ।

### २.३. शर्माको निबन्ध यात्राको चरण विभाजन

नगेन्द्र शर्मा निबन्ध विधाको आधुनिक कालमा देखापरेका निबन्धकार हुन् । शर्माले वि.सं. २००६ सालमा 'हाम्रो अस्तित्व' नामक निबन्ध **भारती** (दार्जिलिङ) पत्रिकामा प्रकाशित गरी निबन्ध लेखन प्रारम्भ गरेका हुन् । शर्माले ६ दशक लामो निबन्ध यात्रा पार गरिसकेका छन् । उनी अझै लेखनमा क्रियाशील रहेका छन् । उनको यस निबन्धात्मक यात्रामा छ निबन्धसङ्ग्रहहरू प्रकाशित छन्, ती यस प्रकार छन् - १. 'नगेन्द्रका निबन्ध' (२०२६), २. 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' (२०४२), ३. 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' (२०४७), ४. 'सम्झाउनि-बिसाउनि' (सन् २००५), ५. 'छासमिस-मासमिस' (सन् २००५) र ६. 'अनुस्मरण' (२०६८) । कुनै पनि साहित्यकारको लामो साहित्यिक यात्रामा विभिन्न मोड या चरण र घुम्तीहरू आउँछन् । साहित्य यात्रामा विभिन्न घुम्ती र चरणहरू देखापर्नुमा विभिन्न कारणहरू हुन सक्छन् । त्यस्तै, निबन्धकार शर्माको निबन्ध यात्रा परिवर्तन हुनमा समय, परिस्थिति, उमेरको परिपक्वता र अध्ययनको गहनता जस्ता कारणहरूले प्रभाव पारेका छन् । समयको गतिसँगै साहित्यकारको रचनात्मक दृष्टिकोणमा आएको परिवर्तनलाई हेर्दा मुख्य रूपले दुई चरणमा विभाजन गर्न सकिन्छ । प्रथम चरण (वि.सं. २००६- २०४७ सम्म) र द्वितीय चरण (वि.सं. २०४८ - हालसम्म) पहिलो चरणमा लामो निबन्धहरूका सङ्ग्रहहरूलाई राखिएको छ भने दोस्रो चरणमा लघु निबन्धसङ्ग्रहलाई राखिएको छ ।

### २.३.१. प्रथम चरण (वि.सं. २००६ - २०४७)

‘हाम्रो अस्तित्व’ (२००६) बाट निबन्धयात्रा प्रारम्भ गर्ने शर्माको निबन्ध यात्राको प्रथम चरण वि.सं. २००६ देखि २०४७ सम्मको अवधिलाई मानिन्छ । शर्माका यस चरणका निबन्धहरू फुटकर रूपमा भारतीय पत्रिका भारतीय, अञ्जली, प्रगति, हाम्रो संसार पत्रिकामा प्रकाशित छन् भने नेपाली पत्रिका गोरखापत्र, फूलपाती, रूपरेखा, हाम्रो संस्कृति, मधुपर्क, रेषा, सञ्चयन, नेपाली, गरिमा, परिवेशहरूमा प्रकाशित छन् । यिनै प्रकाशित फुटकर निबन्धहरूलाई सङ्ग्रह गरेर पुस्तकाकार कृतिका रूपमा निकालिएको छ । यस चरणका निबन्धहरू आयामगत दृष्टिले हेर्दा लामा छन् । यस चरणमा प्रकाशित निबन्धात्मक कृतिहरू यस प्रकार छन् - क. ‘नगेन्द्रका निबन्ध’ (२०२६), ख. ‘अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म’ (२०४२), ग. ‘बनारसमा बेचिएकी बहिनी’ (२०४७) ।

प्रथम चरणमा प्रकाशित निबन्धहरूलाई हेर्दा समाजमा रहेका सबै प्रचलित सामाजिक, सांस्कृतिक, परम्परागत मान्यताहरू सधैं मान्य भएर रहिरहन सक्दैनन्, तिनीहरूलाई समयसँगै परिवर्तन गर्नुपर्छ भन्ने मान्यता निबन्धकारले राखेका छन् । यस चरणमा समाजको नारी समस्या, जातभात समस्या, धार्मिक र सांस्कृतिक समस्या, साहित्यिक समस्याका साथै त्यसमा देखिएका विकृति र विसङ्गतिको विरोध स्वरूप निबन्ध लेखिएका छन् । समाजमा रहेका त्यस्ता गलत संस्कार, चालचलन र मान्यतालाई बदल्नुपर्ने र समय अनुकूल बनाउनुपर्ने शर्माको धारणा निबन्धमा रहेका छन् । पूर्वीय र पाश्चात्य दर्शनको ज्ञानले खारिएका शर्मा कुनै पनि विषयलाई पुष्टि गर्नका निम्ति गहकिला तर्क राख्छन् र पाठकलाई चित्तबुझ्ने गरी पुष्टि गर्छन् । यस चरणका निबन्धमा परम्परा र संस्कृतिलाई वर्तमान युगसुहाउँदो तुल्याएको पाइन्छ । समाजलाई सभ्य, अनुशासित, नयाँ युगसुहाउँदो बनाई सन्तुलनमा राख्न उनका निबन्धले सबैलाई आग्रह गरेका छन् ।

शर्माका यस चरणमा देखिएका विशेषताहरू यस प्रकार छन् :-

#### २.३.१.१. आत्मपरकता

शर्माको यस चरणमा देखिएको मूल विशेषता आत्मपरकता हो । उनका निबन्धको यस चरणमा आत्मपरकताको विभिन्न प्रकारहरू देखिएका छन् । उनका निबन्धमा सामाजिक

आत्मपरकता, पौराणिक आत्मपरकता, सांस्कृतिक आत्मपरकता जस्ता प्रवृत्तिहरू देखिएका छन् । उनका निबन्धमा नारी समस्यामूलक आत्मपरकता पनि यसै चरणमा देखिएको छ ।

### २.३.१.२. संस्मरणात्मकता

शर्माको यस चरणमा देखिएको अर्को विशेषता संस्मरणात्मकता हो । उनका जीवनमा उनले भोगका र अनुभाव गरेका विषयमा उनले आत्मपरक तथा वस्तुपरक किसिमबाट संस्मरणहरू लेखेको पाइन्छ । उनका यस प्रकारका संस्मरणात्मक निबन्धमा आफूले गरेको यात्रा संस्मरण तथा व्यक्ति संस्मरणहरू पनि समावेश गरेको पाइन्छ ।

### २.३.१.३. समीक्षात्मकता

शर्माको यस चरणमा देखिएको अर्को विशेषता समीक्षात्मकता हो । उनका बौद्धिक तथा वैचारिक निबन्धहरू यस अन्तर्गत रहेको पाइन्छ । यस्ता निबन्धमा पनि उनले आफ्नो वैचारिक चेतनाको प्रयोग गरेका छन् । उनका निबन्धमा विशेषगरी व्यक्ति समीक्षात्मकता भाषा व्याकरण समीक्षात्मक, भाषा लोकसाहित्यिक समीक्षात्मकता जस्ता विशेषता देखिएका छन् ।

### २.३.१.४ .सामाजिकता

शर्माको यस चरणमा देखिएको अर्को विशेषता सामाजिकता हो । जुनसुकै साहित्यकारले आफ्नो रचनाका विषयवस्तु समाजलाई बनाएका हुन्छन् । उनीहरूले आफू जन्मेको समाज, संस्कृति आदिलाई विषयवस्तु बनाएर विभिन्न साहित्यिक विधाहरूको रचना गरेका हुन्छन् । निबन्धकार शर्माले पनि आफ्ना निबन्धमा सामाजिक परम्परा, सामाजिक मान्यताहरू, समाजमा चलिआएका भनाइहरू आदिलाई विषयवस्तु बनाएका छन् ।

### २.३.१.५. प्रगतिशीलता

शर्माको यस चरणमा देखिएको अर्को विशेषता प्रगतिशीलता हो । नगेन्द्र शर्मा प्रगतिशील निबन्धकार हुन् । उनका निबन्धमा समाजमा जरा गाडेर बसेका रुढि, अन्धविश्वास, गलत किसिमका संस्कारहरूलाई हटाउने; समयसापेक्ष, युगसुहाउँदो संस्कारहरूलाई मान्यता दिने; समाजमा प्रचलित असमानता, शोषण, रुढिवादी जस्ता सङ्कीर्ण मूल्य मान्यतालाई नवीन दृष्टिकोणबाट हेर्नुपर्ने धारणा राखिएको छ ।

### २.३.१.६. व्यङ्ग्यात्मकता

शर्माको यस चरणमा देखिएको अर्को विशेषता व्यङ्ग्यात्मकता हो । व्यङ्ग्य भनेको शिष्ट शैली, सभ्य भाषा र परिष्कृत विचार प्रयोग गरी कसैलाई तीक्ष्ण रूपले भन्नु परेमा घुमाउरो वा प्रतीकात्मक स्वरूपबाट मन चास्स घोच्ने गरी गरिने अभिव्यक्ति हो । यो साहित्यकारहरूले सोभै व्यक्त नगरी लक्ष्यार्थ वा व्यञ्जनार्थका रूपमा प्रकट गर्दछन् । शर्माका निबन्धमा पनि व्यङ्ग्यात्मकता प्रचुर मात्रामा पाइन्छ ।

### २.३.२. द्वितीय चरण (वि.सं. २०४८ - हालसम्म)

निबन्ध यात्राको दोस्रो चरणमा शर्माले लघुलिपि र लघुनिबन्ध लेखनको आरम्भ गरेका छन् । यस चरणमा उनले दुई लघु निबन्धसङ्ग्रह र एक निबन्धसंग्रह प्रकाशित गरेका छन् । यस चरणमा उनले १. 'सम्भाउनि - बिसाउनि' (सन् २००५) र २. 'छासमिस- मासमिस' (सन् २००५) र ३. 'अनुस्मरण' (२०६८) गरी तीन निबन्धसङ्ग्रह प्रकाशित गरेका छन् । यी सङ्ग्रहका निबन्धहरू काठमाडौँबाट प्रकाशित हुने जनसत्ता साप्ताहिकलगायत स्पेसटाइम, कान्तिपुर र नयाँ सडक दैनिक तथा सिलिगुढीबाट प्रकाशित हुने सुनचरी दैनिक पत्रिकामा विभिन्न समयमा छापिएका निबन्धहरू नै हुन् ।

दोस्रो चरणका निबन्धसङ्ग्रहहरूमा सम्भाउनि-बिसाउनि तीन खण्डमा विभाजित छ । यसमा निम्ताकार देशहरू, सम्भाउनि-बिसाउनि र केही जिज्ञासाहरू अलग-अलग खण्डमा प्रयुक्त छन् । पहिलो खण्डमा यात्राबाट प्राप्त अनुभवलाई कलात्मक र विश्वसनीय रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । दोस्रो खण्डमा आफ्नो नजिकका र आफूलाई सम्झनामा आएका व्यक्तित्वको संस्मरण तथा लघुलिपि आन्दोलन नै प्रयोग गरिएको छ । तेस्रो खण्डमा जिज्ञासाहरूलाई तार्किक अनुसन्धानात्मक रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ । छासमिस-मासमिस निबन्धसङ्ग्रह सात परिच्छेदमा विभाजित छ । यसमा प्राचीन पुस्तकहरू, केही प्राचीन व्यक्तिहरू पढे-सुनेका धर्ममतहरू, पुरखा अधिका, छिमेकी भाषा साहित्यहरू, पूर्व र पश्चिम, समवेदना छन् । छासमिस-मासमिसका विषयवस्तु प्राचीन पुस्तकहरू, केही पौराणिक व्यक्तिहरू, पढे-सुनेका धर्ममतहरू, छिमेकी भाषा साहित्यहरू आदि देखिन्छन् । यस सङ्ग्रहमा पूर्वीय ग्रन्थ,

व्यक्तित्व, धर्म, भाषा, साहित्य आदिलाई समेटिएको छ । अनुस्मरणमा आफ्नै आत्माकथा लेखिएको छ । निबन्धकारले आफ्नो जीवनकालमा घटेका घटना र भोगेका भोगाईहरूको कथा अनुस्मरणमा छ । निबन्धकारले आफ्ना जीवनमा आइपरेका घटनाहरूलाई निबन्धमा उतारेका छन् । यस निबन्धमा बिछोड हुदाको व्यथा, आफूले जागिर खान गरेको कसरत, लेखन पेशाको थालनी, जीवनमा अपनाइएका पेशा, राजनीतिक अवस्था, मातृभूमिको वर्णन, काठमाण्डुको काथाव्यथा, रोगसंगको कुस्ती र बुढेस कालमा परेको बज्रपात आदिको राम्ररी चित्रण गर्दै निबन्ध लेखेका छन् ।

शर्माका यस चरणमा देखिएका विशेषता यस प्रकार छन् -

### २.३.२.१. .संस्मरणात्मकताको प्रबलता

शर्माको यस चरणमा देखिएको पहिलो विशेषता संस्मरणात्मकता प्रबलता हो । उनका जीवनमा उनले भोगेका र अनुभव गरेका विषयमा उनले आत्मपरक तथा वस्तुपरक किसिमबाट संस्मरणहरू लेखेको पाइन्छ । उनका यस प्रकारका संस्मरणात्मक निबन्धमा आफूले गरेको यात्रा संस्मरण तथा व्यक्ति संस्मरणहरू पनि समावेश गरेको पाइन्छ । यस चरणमा उनी पहिलो चरणमा भन्दा संस्मरणात्मकतातिर बढि सक्रिय रहेका छन् । यस चरणमा उनका सबैजसो निबन्धमा कुनै न कुनै रूपमा संस्मरणात्मकताको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

### २.३.२.२. आत्मपरकता

शर्माको यस चरणमा देखिएको अर्को विशेषता आत्मपरकता हो । उनका निबन्धको यस चरणमा आत्मपरकताको विभिन्न प्रकारहरू देखिएका छन् । उनका निबन्धमा सामाजिक आत्मपरकता, पौराणिक आत्मपरकता, सांस्कृतिक आत्मपरकता जस्ता प्रवृत्तिहरू देखिएका छन् । यस चरणमा उनी आफ्ना निबन्धमा केही कम मात्रामा निजात्मकताको प्रयोग गर्न थालेका छन् । पहिलो चरणका तुलनामा यस चरणमा आत्मपरकता ठाउँमा संस्मरणात्मकताले स्थान लिएको पाइन्छ ।

### २.३.२.३. समीक्षात्मकता

शर्माको यस चरणमा देखिएको अर्को विशेषता समीक्षात्मकता हो । उनका बौद्धिक तथा वैचारिक निबन्धहरू यस अन्तर्गत रहेको पाइन्छ । यस्ता निबन्धमा पनि उनले आफ्नो वैचारिक चेतको प्रयोग गरेका छन् । उनका निबन्धमा विशेषगरी व्यक्ति समीक्षात्मकता र भाषा व्याकरण समीक्षात्मक जस्ता विशेषता देखिएका छन् । सामान्यतया उनको यो विशेषता पनि सामान्य र पहिलो चरणका तुलनामा कमजोर भएर गएको देखिएको छ । उनका निबन्धमा यस चरणको समीक्षामा भाषा व्याकरण तथा सांस्कृतिक समीक्षाले प्रथमिकता पाएको देखिन्छ ।

### २.३.२.४. आयामगत लघुताप्रति चासो

शर्माको यस चरणमा देखिएको अर्को विशेषता आयामगत लघुताप्रति चासो हो । उनी यस चरणमा लघु निबन्ध लेखन तर्फ आकर्षित भएका छन् । उनका यस चरणका प्रायः जसो निबन्धहरू लघुआयामकै देखिएका छन् । यस्ता निबन्धमा वैचारिक निबन्धहरू नै बढिरहेका छन् । उनका समीक्षात्मक निबन्धहरू यस अन्तर्गत पर्दछन् ।

### २.३.२.५. बौद्धिक प्रगतिशीलता

शर्माको यस चरणमा देखिएको अर्को विशेषता प्रगतिशीलता हो । उनका यस चरणका निबन्धमा समाजमा जरा गाँडे बसेका रुढि, अन्धविश्वास, गलत किसिमका संस्कारहरूलाई हटाउने; समयसापेक्ष, युगसुहाउँदो संस्कारहरूलाई मान्यता दिने; समाजमा प्रचलित असमानता, शोषण, रुढिवादी जस्ता सङ्कीर्ण मूल्य मान्यतालाई नवीन दृष्टिकोणबाट हेर्नुपर्ने धारणा राखिएको छ । उनका यस चरणका निबन्धमा प्रगतिशील चेतनामा ह्रास आउनुका साथै संयम क्रान्ति चेताना पाइन्छ । पहिलो चरणमा क्रान्ति चेतनाको मात्रा प्रबल भएपनि यस चरणमा बौद्धिक प्रगतिशीलता देखिएको पाइन्छ ।

पहिलो चरणमा आयामगत दृष्टिले हेर्दा लामा निबन्ध छन् । आफ्नो जीवनयात्राका अध्ययन, चिन्तन, दर्शनबाट समाजमा रहेका रुढि परम्परा, अन्धविश्वासप्रति तर्क, विचारमार्फत आफ्नो धारणा व्यक्त गरेका निबन्धहरू छन् । दोस्रो चरणमा लघुलिपिको प्रयोग गर्दै लघुनिबन्धहरू लेखिएका छन् । दोस्रो चरणमा लेखिएका लघुनिबन्धहरूका विषय भने आफ्नो देश-विदेशको यात्रा, आफ्नो जीवनमा भएका तीता-मीठा अनुभवहरू, साथी-सङ्गी, गुरुजन,

आफन्तहरूका संस्मरणात्मक लघुनिबन्धहरू साथै पौराणिक पात्रहरू, धर्म, विभिन्न व्यक्तित्व र भाषा साहित्यलाई समेत समेटेर निबन्ध लेखिएका छन् ।

## २.४. निष्कर्ष

निबन्धकार शर्मा निबन्ध विधाको आधुनिक कालमा देखापरेका निबन्धकार हुन । शर्मा वि.सं. २००६ सालमा 'हाम्रो अस्तित्व' नामक निबन्ध प्रकाशित गरी आफ्नो निबन्ध लेखन प्रारम्भ गरेका हुन । शर्माले ६ दशक लामो निबन्ध यात्रामा चार निबन्ध सङ्ग्रह र दुई लघु निबन्ध लेखेका छन् । शर्माको निबन्ध यात्रालाई पहिलो चरण र दोस्रो चरण गरी दुई चरणमा विभाजन गरिएकोछ । पहिलो चरणमा आयामगत दृष्टिले हेर्दा लामो निबन्ध छन् । आफ्नो जीवनयात्राको अध्ययन, चिन्तन, दर्शनबाट समाजमा रहेका रुढि परम्परा, अन्धविश्वासप्रति तर्क, विचारमार्फत आफ्नो धारणा व्यक्त गरेका निबन्धहरू छन् । दोस्रो चरणमा लघुलिपिको प्रयोग गर्दै लघुनिबन्धहरू लेखिएका छन् । दोस्रो चरणमा लेखिएका लघुनिबन्धहरूका विषय भने आफ्नो देश-विदेशको यात्रा, आफ्नो जीवनमा भएका तीता-मीठा अनुभवहरू, साथी-सङ्गी, गुरुजन, आफन्तहरूका संस्मरणात्मक लघुनिबन्धहरू साथै पौराणिक पात्रहरू, धर्म, विभिन्न व्यक्तित्व र भाषा साहित्यलाई समेत समेटेर निबन्ध लेखिएका छन् । शर्माका निबन्ध र अन्य विषयका गरी जम्मा बीसवटा कृतिहरू प्रकाशित छन् । शर्माले कथा, कविता, निबन्ध, संस्मरण, समालोचना, भाषा साहित्यका खोजकर्ताका रूपमा कलम चलाए पनि शर्मालाई नेपाली साहित्यमा परिचित गराउने विधा भने निबन्ध हो । शर्मा आफ्ना निबन्धमा बौद्धिक एवम् तार्किक भाषाशैलीको प्रयोग गर्छन् ।

## निबन्धको सैद्धान्तिक परिचय

### ३.१ विषय परिचय

साहित्यका प्रमुख विधाहरूमध्ये निबन्ध छोटो छरितो गद्य विधा हो । 'निबन्ध' अन्य साहित्यिक विधाभन्दा पछि विकसित भएको विधा हो । यसको आफ्नै संरचनागत स्वरूप रहेको हुन्छ । निबन्धको अध्ययन गर्ने सन्दर्भमा निबन्धको सैद्धान्तिक स्वरूपका बारेमा जान्नु आवश्यक हुन्छ । त्यसैले यस परिच्छेदमा निबन्धको परिचय, निबन्ध सम्बन्धी पूर्वीय र पाश्चात्य मान्यता, निबन्धको परिभाषा, निबन्धका तत्वहरूको निरूपण गर्दै निबन्ध विश्लेषणका आधारहरू निर्माण समेत गरिएको छ ।

### ३.२ निबन्ध विधाको परिचय

'निबन्ध' विश्व साहित्यको कान्छो गद्य विधा हो । आकारका हिसाबले एक बसाइमा पढिसकिने, लेखकको विचार स्वच्छन्द रूपले अभिव्यक्त भएका शृङ्खलित रूपमा बाँधिएको गद्यात्मक प्रस्तुति निबन्ध हो । निबन्ध लेखनमा साधना र अभ्यासले प्रौढता प्राप्त गरेपछि मात्र सशक्त निबन्ध सिर्जना हुन सक्दछ । निबन्धको विषयवस्तुमा सीमितता पाइँदैन, निबन्धमा अन्य विधाका गुण पनि समावेश हुन सक्छन् । विधा सिद्धान्तका आधारमा निबन्ध पाश्चात्य साहित्यको देन भए तापनि प्राचीन कालदेखि नै संस्कृत वाङ्मयमा यसको प्रयोग हुँदै आएको पाइन्छ । यसर्थ नेपाली साहित्यमा निबन्ध विधाको स्पष्ट सिद्धान्त पाश्चात्य साहित्यबाट आए तापनि यसलाई चिनाउने प्रयास पूर्व र पश्चिम दुवै क्षेत्रमा भएको छ ।

#### ३.२.१. निबन्धको व्युत्पत्ति र परिभाषा

साहित्यका प्रमुख विधामध्ये निबन्ध छोटो-छरितो एक गद्य विधा हो । निबन्ध संस्कृत व्याकरणको शब्दनिर्माण प्रक्रियामा 'नि' उपसर्ग लागेको बन्ध धातुमा 'घञ्' प्रत्यय लागेर बनेको व्युत्पन्न शब्द हो (आप्टे सन् १९६९: ५२७) । संस्कृत तत्सम शब्दका रूपमा 'निबन्ध' नेपालीमा

आएको हो । यसको खास अर्थ राम्ररी बाँध्नु, पूरै बन्धन वा कसिएको रूप भन्ने हुन्छ । 'निबन्ध' शब्दको अर्थ खोज्न संस्कृतमा पुग्नु परे पनि साहित्यिक विधाका रूपमा भने यसलाई अङ्ग्रेजी (Essay) को पर्यायवाची शब्दको रूपमा लिइन्छ । निबन्धको व्युत्पत्ति नि (राम्ररी) + बन्ध ( बाँधिएको)= निबन्ध, भनेर गरेको पाइन्छ । उपर्युक्त व्युत्पत्ति अनुसार निबन्ध शब्दको अर्थ राम्ररी बाँधिएको भन्ने हो (सुवेदी, २०५८ : ६)। बालचन्द्र शर्माले- 'कुनै विषयमा सम्बन्धित मत, विचार, सिद्धान्त आदिको तुलनात्मक र पाण्डित्यपूर्ण विवेचना गरिएको भावनायुक्त लेख' भनी निबन्धको परिभाषा गरेका छन् । नेपाली बृहत् शब्दकोशका अनुसार 'कुनै विषयलाई लिएर तुलनात्मक र पाण्डित्यपूर्ण विवेचना गरिएको भावनायुक्त लेख' भनी निबन्धको परिभाषा गरेका छन् । नेपाली बृहत् शब्दकोशका अनुसार 'कुनै विषयलाई लिएर कलात्मक वा वस्तुगत पाराले गद्यमा लेखिएको छोटो साहित्यिक रचना' भनिएको छ । प्राचीनकालमा लेख लेखिएका भोजपत्रहरूलाई तह लगाएर बाँध्ने वा सिउने जुन क्रिया हुन्थ्यो त्यसैलाई बुझाउने अर्थमा निबन्ध शब्दको प्रयोग हुन्थ्यो (सुवेदी, २०५८:६) । बन्ध धातुमा 'नि' उपसर्ग र 'अच्' प्रत्यय लागेर पनि 'निबन्ध' शब्द (नि+बन्ध+अच्) बन्दछ । यसरी बनेको निबन्ध शब्दको अर्थ निम्बकको बोक्रा सेवन गर्नाले कुष्ठरोगको रोकथाम हुन्छ (सुवेदी २०५८ : ६) भन्ने हो । निबन्धले एस्सेको अनुवादरूप अर्थ नसमात्दै पनि पूर्वीय साहित्यमा 'निबन्ध' शब्दको प्रयोग प्राचीन समयदेखि नै आएको पाइन्छ । याज्ञवल्क्य स्मृतिमा द्रव्यका अर्थमा र श्रीमद्भगवद्गीतामा सांसारिकी मायाँमा बाँधिने अर्थमा यसको प्रयोग भएको थियो । अहिले प्रयोग हुने निबन्ध शब्द बन्धनको नजिक-नजिक छ, र अर्थ सङ्कोच भई साहित्यका एक विधाको रूपमा प्रयुक्त छ (सुवेदी, २०५८:६) । प्रसिद्ध पश्चिमी विद्वान् जोनसनको भनाइ छ - 'नियमबद्ध होइन, व्यवस्थित होइन, मुक्तमनको तरङ्ग, अनियमित, अपरिपक्व जस्तो लाग्ने रचना विशेषलाई निबन्ध भनिन्छ' । संस्कृत र नेपालीमा प्रयोग हुने गरेको निबन्ध र अङ्ग्रेजीको 'एस्से' शब्दको व्युत्पत्तिलाई एकै ठाउँमा मिसाएर हेर्दा निबन्धलाई अभिव्यक्तिका लागि सुनियोजित र सुगठित प्रयास गरिएको रचना मानिन्छ । बन्ध धातुमा निबन्ध सरल र जटिल अभिव्यक्तिको दोसाँधमा हिँड्ने, आत्मा र वस्तु दुवै वा एक पक्षमा केन्द्रित तथा सुरुमा आयमिक र पछि गएर स्वतस्फूर्त पनि हुनसक्ने रमाइलो र छोटो गद्य विधा हो (सुवेदी, २०५८:९) । यसबाट आधुनिक निबन्ध शब्दको अर्थलाई पूर्वीय सन्दर्भले स्पष्ट रूपमा प्रस्तुत गर्न सकेको छैन भने निबन्धको व्युत्पत्ति

संस्कृतको नि+बन्धमा नपुगी पाउन सकिन्न । निबन्ध भनेको मनले खेल्न खोजेको स्वतन्त्र क्षेत्र हो, आफ्नो पहिचान दिने ठिक्क आयामको गद्य रचना हो (सुवेदी, २०५८:९) । त्यसैले संस्कृत र अङ्ग्रेजीबाट निबन्ध शब्द र त्यसले वहन गर्ने अर्थ निसृत भएको हो ।

निबन्ध विधाको थालनी सर्वप्रथम मोन्तेनले गरे । त्यसपछि अङ्ग्रेजी साहित्यमा निबन्ध विधाको सुरुवात बेकनले गरे भने यसपछिको विकास भने पछिल्ला निबन्धकारहरूले गरे । यसरी निबन्ध के हो भन्ने विषयमा पूर्वीय र पाश्चात्य नेपाली विद्वान्हरूले आ-आफ्ना दृष्टिकोणबाट निबन्धका बारेमा धारणा राखेका छन् । ती यस प्रकार छन् -

### ३.२.२. पूर्वीय दृष्टिमा निबन्धको परिभाषा

निबन्ध तत्सम शब्द हो । 'नि' उपसर्ग रहने 'बन्ध' धातुमा 'घञ्' प्रत्यय लागेर निबन्ध शब्दको निर्माण हुन्छ । यसको व्युत्पत्तिगत अर्थ 'निबध्नातीति निबन्ध' भन्ने हुन्छ । पूर्वीय संस्कृत साहित्यका गद्य वा पद्य जुनसुकै फाँटमा लेखिएका रचनालाई निबन्धको संज्ञा दिइने चलन थियो (सुवेदी, २०५८:७) । आज आएर निबन्ध शब्दले जुन अर्थ दिन्छ त्यो अर्थ प्राचीन युगमा पाइँदैनथ्यो । श्रीमद्भगवद्गीताका अनुसार 'दैवी समपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता' अर्थात् सांसारिक मायाँमा बाँध्ने साधन (अनुवाद : गोप, सन् १९९९:२६३) निबन्ध हो । कादम्बरी निबन्धको मङ्गलाचरण पद्यमा शब्दशिल्प र शाब्दिक कलालाई निबन्धको संज्ञा दिइएको पाइन्छ (सुवेदी, २०५८:७) । याज्ञवल्क्य स्मृतिका अनुसार 'निबन्धोद्रव्यमेव च' अर्थात् सांसारिक सम्पूर्ण पदार्थ निबन्ध हो (शर्मा, २०६३:५) । हेमचन्द्रले 'सङ्ग्रह ग्रन्थ', बन्धन र मूत्ररोग- निरोधकका अर्थमा निबन्धलाई लिएका छन् (शर्मा, २०६३:५) । वामन शिवराम आप्टेद्वारा सम्पादित संस्कृत-हिन्दी कोशमा निबन्धको अर्थ बाँध्नु, जोड्नु, आशक्ति, रचना, कुनै साहित्यिक ग्रन्थ वा कुनै कृतिको टीका, कुनै सङ्ग्रह शृङ्खला आदि अनेक अर्थ दिइएका छन् (आप्टे, १९६९:५२६) । पूर्वीय वाङ्मय प्राचीन ग्रन्थहरूमा निबन्ध शब्दलाई बाँध्ने वा सङ्ग्रह गर्ने अर्थमा लिइएको पाइन्छ । पछि यसको अर्थ सङ्कोच भएर एक सानो ग्रन्थ, साहित्यिक विधाको रूपमा यसले मान्यता प्राप्त गरेको पाइन्छ । पूर्वीय निबन्धशास्त्रीहरूका मोटामोटी विचारहरू गद्यमा पनि काव्यात्मक रूपमा व्यक्त हुनुले रचनामा निबन्धात्मक राग आविर्भाव भएको कुरा स्वीकार्न सकिन्छ (थापा,

२०६१:१५८) । निबन्धकै प्रायः समानार्थी शब्दका रूपमा प्रबन्ध शब्द पनि संस्कृतमा प्रचलित छ । संस्कृत साहित्य परम्परामा निबन्ध र प्रबन्धबीचको भिन्नता स्पष्ट रूपमा देखिदैन ।

उन्नाइसौं शताब्दीदेखि भारतीय विद्वानहरूले समेत हिन्दी भाषाका माध्यमले निबन्धको चर्चा र परिभाषा गर्ने गरेका छन् । आचार्य रामचन्द्र शुक्लका अनुसार- निबन्धमा वैयक्तिक विशेषता व्यक्त गर्नका निमित्त र त्यस विशेषताको प्रदर्शनका निमित्त व्यक्त विचारहरूका प्रवाह ज्ञातरूपले वा अज्ञातरूपले होस्, विशृङ्खलित भने हुन दिनुहुन्न । भाव प्रवाहको विचित्रता देखाउनका निमित्त अनुभूतिका स्वाभाविक वा लोकसामान्य रूपसँग कुनै सम्बन्ध नै राख्न सक्नु वा भाषासित प्रश्नहरूको जस्तै व्यायामिक वा सहयोगीहरूले भैं आसन साधन गराइरहनु हुँदैन (सुवेदी, २०५८:५) । गुलाब रायको परिभाषाअनुसार- निबन्ध त्यस प्रकारको रचना विशेष हो जसमा सीमित आयतनभित्र कुनै विषयको वर्णन वा प्रतिपादन, एउटा विशिष्ट प्रकारको वैयक्तिक प्रतिपादन, स्वच्छन्दता, सुष्ठु र सजीवता, सङ्गति र सम्बद्धता पूर्वक भएको हुन्छ (सुवेदी, २०५८:५) । वर्तमानमा निबन्ध विधा र त्यसको स्वरूपका सम्बन्धमा भने उपर्युक्त परिभाषाले पूर्णतः व्याख्या गर्न सकेका छैनन् । पूर्वीय दृष्टिकोणबाट हेर्दा 'निबन्ध' शब्दले आजको साहित्यिक गद्य विधा विशेषलाई समेट्न सकेको छैन । शब्द निर्माण प्रक्रियामा 'निबन्ध' शब्द संस्कृत व्याकरणकै अनुशासनमा तयार भएको पाइएतापनि संस्कृत साहित्यमा आधुनिक स्वरूपका निबन्धको सिर्जना भएको पाइँदैन, यसर्थ निबन्ध पाश्चात्य साहित्यको देन हो र यसको उत्पत्ति र विकास पनि त्यहीँ भएको हो भन्न सकिन्छ । त्यसैले निबन्धका बारेमा विस्तृत जानकारीका निमित्त पाश्चात्य दृष्टिकोणको अध्ययन गर्नु आवश्यक देखिन्छ । संस्कृत साहित्यमा आधुनिक स्वरूपका निबन्धको सिर्जना भएको पाइँदैन, यसर्थ निबन्ध पाश्चात्य साहित्यको देन हो र यसको उत्पत्ति र विकास पनि त्यहीँ भएको हो भन्न सकिन्छ । त्यसैले निबन्धको बारेमा विस्तृत जानकारीका निमित्त पाश्चात्य दृष्टिकोण अध्ययन गर्नु आवश्यक देखिन्छ ।

### ३.२.३. पाश्चात्य दृष्टिमा निबन्धको परिभाषा

साहित्यका मूल चारओटा विधामध्येको निबन्ध हुनका लागि आवश्यक कुराहरूको बारेमा पाश्चात्य विद्वानहरूले आ-आफ्नो पाराले परिभाषा गरेका छन् । ल्याटिन भाषाको

‘एग्जिनियर’ बाट अङ्ग्रेजीमा ‘एस्से’ बनेको शब्दको अर्थ हुन्छ । यो फ्रान्सेली शब्द एसाई ( Essai) बाट आएको हो । यसको अर्थ प्रयास वा प्रयत्न हुन्छ (थापा, २०५०:१८५) । यही ‘एस्से’ को पर्यायवाची ‘निबन्ध’ शब्द विश्वसाहित्यमा सोह्रौं शताब्दीदेखि लेखिन थालेको हो । यस्तो प्रयास प्रथमतः फ्रान्सेली लेखक मिसेल द मोन्तेनले गरेका हुन् । त्यसैले मोन्तेन नै निबन्धका जन्मदाता मानिन्छन् (जोशी, २०६१:२) । आधुनिक निबन्धका जन्मदाता मोन्तेय फ्रान्समा सन् १५६१ पछि आफ्ना रचनालाई फ्रान्सेली भाषामा ‘एस्से’ (Essay) भनेर परिभाषित गर्न थालेपछि पश्चिमी साहित्यमा निबन्धको परिभाषा गर्ने क्रमको श्रीगणेश भएको हो । निबन्धकार मोन्तेय आफ्ना रचनामा आफूलाई विषयवस्तु बनाएर प्रस्तुत गरेका छन् । “मेरा निबन्धहरूको विषयवस्तु म नै हुँ किन भने ‘म’लाई सबैभन्दा नजिकबाट चिन्ने म नै हुँ” का उद्घोषक मोन्तेयले आफ्नै तस्वीर प्रतिविम्बित छ (अधिकारी, सन् १९७५:१९) मोन्तेयले आफ्ना निबन्धको विषयवस्तु आफैलाई ठानी निबन्धलाई आत्मप्रकाशन मानेका छन् । उनका विचारमा निबन्ध व्यक्तित्वको निजात्मक अभिव्यक्ति हो । विश्व साहित्यमा फ्रान्सका मोन्तेय नै आत्मपरक निबन्धका प्रवर्तक मानिन्छन् ।

निबन्ध विधालाई हुर्काउने काम भने बेलायतका फ्रान्सिस बेकनबाट भएको हो । उनले यसलाई सन् १५९६ मा अङ्ग्रेजी भाषामा प्रवेश गराएका हुन् (उपाध्याय, २०५९:१६२) । अङ्ग्रेजीमा नै बेकनले दर्शनले भरिपूर्ण बौद्धिक निबन्धको सूत्रपात गरी यसको विकसमा उल्लेख्य योगदान दिए । उनले छिन्नरिएका चिन्तनहरूको व्यवस्थित प्रस्तुति निबन्ध हो (सुवेदी, २०५८:५), विशृङ्खलित विचार एवम् चिन्तनलाई नै निबन्ध भनेका छन् ।

निबन्ध विधाको थालनी सर्वप्रथम मोन्तेयले गरे । त्यसपछि अङ्ग्रेजी साहित्यमा निबन्ध विधाको सुरुवात बेकनले गरे भने यसपछिको विकास भने पछिल्ला निबन्धकारहरूले गरे । निबन्धका बारेका विद्वानहरूले गरेका परिभाषाहरू यसप्रकार छन् :

आफैले सम्पादन गरेको शब्दकोशमा डा. जोन्सनको परिभाषा छ - ‘मनमा आएका भावधारालाई शृङ्खलाविहिन रूपले हठात् गरिएको अभिव्यक्तिको एक टुक्रा नै निबन्ध हो’ (सुवेदी, २०५८:५) ।

मरेले नयाँ अक्सफोर्ड शब्दकोशमा भनेका छन् - 'कुनै विषय शाखा वा विषय विशेष बारे लेखिएको ठिक्क लमाइ भएको रचना निबन्ध हो' (सुवेदी, २०५८:६) ।

जर्ज ब्र्याब - 'प्रतिभाविहिन स्रष्टाको सस्तो सृजना कार्य निबन्ध हो जसमा न विद्वत्ता, न चिन्तन र न अनुसन्धानात्मक क्षमता रहन्छ' (सुवेदी, २०५८:७) ।

सन्ट व्युभ - 'निबन्ध विषयवस्तुको विशिष्ट ज्ञान सञ्चय गरिने भण्डार हो र यो श्रमसाध्य सिर्जनाविधा हो' (सुवेदी, २०५८:८) ।

जे.बी. प्रिस्ट्ले - 'निजात्मक तरिकाले जुनसुकै विषयलाई टिपेर कुरा गर्नु र पाठक र आफूबीच आत्मीय सम्बन्ध स्थापना गर्नु निबन्ध हो' (सुवेदी, २०५८:८) ।

दि कन्साइन्स अक्सफोर्ड इङ्गलिस लिटरेचरका अनुसार- 'निबन्ध भनेको साधारण तथा एउटा छोटो गद्य रचना हो, जसका लेखकको विषय विशेषको प्रतिविम्ब हुन्छ' (शर्मा, २०५०:४) यहाँ निबन्धलाई एउटा छोटो गद्य रचना मानिएको छ ।

निबन्धको पाश्चात्य परिभाषामा जर्ज ब्र्याबको परिभाषाले निबन्ध बारेमा छुट्टै धारणा प्रस्तुत गरेको छ भने अन्य परिभाषाहरूमा त्यति मतान्तर छैन तापनि निबन्धका आत्मपरक र वस्तुपरक भेदका सन्दर्भमा भने निबन्धका परिभाषामा केही भिन्नता पाइन्छ । आधुनिक निबन्धको परिभाषामा उपर्युक्त परिभाषाहरू नै निबन्धको पहिचान गर्न सक्षम महत्त्वपूर्ण परिभाषाहरू हुन् ।

### ३.२.४. नेपाली विद्वान्हरूको परिभाषा

नेपाली साहित्यमा पनि निबन्धको सैद्धान्तिक चिन्तन र अध्ययन भएको छ । यसै क्रममा विभिन्न विद्वान्हरूले निबन्धका सम्बन्धमा आ-आफ्ना विचार प्रकट गरेका छन् । यसै क्रममा नेपाली साहित्यका विशिष्ट निबन्धकार लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाले निबन्ध सम्बन्धी छुट्टै सैद्धान्तिक चिन्तन प्रस्तुत नगरे पनि आफ्ना निबन्धभिन्नबाट नै यसको विशिष्ट परिभाषा दिएका छन् ।

निबन्धकार लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा निबन्धका सम्बन्धमा भन्छन् - “यो टेबिल गफ हो, चश्मादार अध्यापकको व्याख्यान होइन, न त वमन वेदान्त । यसमा ठर्रोपना हुँदैन, यो लच्छिन्छ र घनिष्टतातिर ओर्लिन्छ” (देवकोटा, २०५३ : भूमिका) । देवकोटा भन्छन् - “यहाँ म जीवनको टीकाकार बनेको छु । वर्णन होस्, वृत्तान्त होस् वा व्याख्यान जतासुकै पनि म आफ्नो रङ्गमा आफ्नो ढङ्गले यो जीवनको घामछाँयाका अनुभवहरू चित्रण गर्दै सजीव मानव बोलचालमा पाठकसँग कुरा गर्दछु” ( देवकोटा, २०५३ : भूमिका) । देवकोटा भन्छन् - “....यहाँ एउटा रसिलो हँसिलो, गफाडी चुटुकिलो कुराकानी छ, जसको नाम प्रबन्ध (निबन्ध) हो” ( देवकोटा, २०५३:४) ।

रामलाल अधिकारी - ‘निबन्ध त्यो निबन्ध विधा हो, लेखकको व्यक्तित्व पाठक समक्ष पूर्णतया प्रकाशमान हुन्छ । यसमा लेखकले उपदेशक नभई आत्मप्रकाशनकै लक्ष्यमा केन्द्रित हुनुपर्दछ’ (अधिकारी, सन् १९७५:१२) ।

ईश्वर बराल - ‘निबन्ध एक किसिमको कुरा गराई हो । यो हो लेखकका मनमा उठेका भावनाहरूलाई स्वागत कथनका रूपमा उद्गारित गराउने विधा विशेष । आफ्नो गुनासो अरूलाई सुनाउनु, मनको बह पोख्ने काम गर्नु, हृदयलाई सकेसम्म छलङ्ग्याइदिनु, आन्तरिक सन्देशलाई फिजाइदिनु मानिसका आद्य सिर्जना हुन् । त्यसो हुनाले निबन्धकार जहिले पनि पाठकसित गफ गर्न चाहन्छ । साउती गरेर तिनलाई आफूप्रति सहानुभूतिशील बनाउन खोज्छ । मेरा कुरा कसैले सुनिदिउन्’ (सुवेदी, २०५८:९)।

मोहनराज शर्मा - ‘कुनै विषयबारे सुगठित शैलीमा सविस्तार लेखिएको उद्देश्यपूर्ण र प्रत्ययकारी लघु गद्य रचनालाई निबन्ध भनिन्छ’ ( शर्मा, २०५५:५०२) ।

राजेन्द्र सुवेदी - ‘जनसुकै विषयमा स्वतन्त्र ढङ्गले सोच्नु, विचार गर्नु र आफ्नो भावनात्मक प्रवाहमा अनियन्त्रित रूपले पोखिनु निबन्ध हो’ (सुवेदी, २०५८:२२) ।

यी विभिन्न विद्वानहरूका निबन्धसम्बन्धी परिभाषालाई केलाएर हेर्दा निबन्धकारका विचारहरू निजात्मक वा वस्तुपरक ढङ्गबाट पाठकसामु प्रस्तुत गर्ने, जुन प्रस्तुतिमा लेखकका

विचार पाठकलाई मान्न कर गरिएको हुन्छ, त्यस्तो आत्मप्रतिपादन, आन्तरिकक्रमबद्धता, निबन्धत्मकता, विचार, चिन्तन, सम्बेदना आदिको समष्टि रूप नै वास्तवमा निबन्ध हो। निबन्ध लेखनका लागि कुनै निश्चित नियमको आवश्यकता पर्दैन तर निबन्ध सुगठित, सुनियोजित ढङ्गमा लेख्नुपर्छ। यसमा विषयवर्णन ज्यादै हल्का पाराले गर्नुपर्दछ र दुर्बोध्य तथा पाण्डित्यपूर्ण व्याख्याको प्रयास गर्नु हुँदैन, यसको भाषा बनावटी हुनु हुँदैन, आडम्बरशून्य र निबन्धात्मक कोमलतायुक्त भाषामा रचिने भएकाले कहिलेकाही यो कविताको निकट पनि देखिन्छ। यसमा तार्किकता, मौलिकता, कल्पनाको उडान, निजीशिल्प, आदिका साथै वैज्ञानिक सत्यता र प्रमाणको खोज आदि कुराले समेत स्थान पाएको हुन्छ।

### ३.३. निबन्धको विशेषता

कुनै पनि साहित्यिक विधाको परिभाषाले त्यसको स्वरूपलाई निर्धारण गरेको हुन्छ। स्वरूप भन्नाले कुनै पनि विषयलाई पहिचान गराउने तत्त्वहरू वा त्यस्तो पहिचान जसले निबन्ध वा अन्य विधा हो भनेर छुट्याउन सजिलो हुन्छ। निबन्ध यही नै हो भनेर चिनाउने तत्त्वहरूको समूहलाई नै निबन्धको विशेषता भनिन्छ। निबन्धको विशेषता वा तत्त्व समूहका बारेमा चर्चा गर्दा पूर्व प्राचीन विद्वान्हरू एवं परिभाषाकारहरूले व्यक्त गरेका धारण एवं परिभाषादेखि वर्तमानका परिभाषाकारहरू सम्मका परिभाषालाई केलाएर हेर्नुपर्ने देखिन्छ। नेपाली साहित्यका सबै विधाहरूमा जस्तै निबन्धको पनि तत्त्वहरू यत्ति नै छन् र यसरी नै लेख्नुपर्छ भनेर विद्वान्हरूले सीमाङ्कन गर्न सकेका त छैनन् तर आ-आफ्ना परिभाषाहरू भने व्यक्त गर्ने गरेका छन्। निबन्धको विशेषताको परिचर्चाका क्रममा प्राचीन परिभाषाकार सम्म पुग्नु आवश्यक देखिन्छ।

फ्रान्सेली निबन्धकार एवं निबन्धका पिता मानिने एम. के. मोन्तेयँ (सन् १५३३-१५९२) को परिभाषाले निजात्मक निबन्धमा जोड दिएको छ। यसर्थ निबन्ध भनेर त्यो रचनालाई मान्नुपर्दछ जसमा रचनाकारका निजी धारण प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपमा मुखरित भएको हुन्छ। यसैगरी अङ्ग्रेजी निबन्धकार लर्ड बेकनले आफ्नो चिन्तनको अभिव्यक्तिको प्रयासलाई निबन्ध मानेका छन्। यसबाट हेर्दा उनले निबन्धलाई परात्मक कोणबाट हेरेका छन्।

निबन्धको परिभाषका क्रममा निबन्धकारहरूले जे जसरी परिभाषित गरेका भए पनि संक्षेपमा निबन्धको विशेषतालाई यसरी देखाउन सकिन्छ :

### ३.३.१. आकारगत लघुता

निबन्ध गद्यमा लेखिएको लघु आकारको साहित्यिक विधा हो (थापा, २०५६:३६)। निबन्ध लघु आकारको हुनुपर्दछ। लघु आकारमा पूर्णता यसको खास विशेषता हो। यदि निबन्धले आकारमा विस्तृतता पायो भने उपन्यासतिर लाग्छ र विचारपक्ष खुकुलो बन्छ। यसबारेमा हर्वर्ट रिडले त पाँचहजार शब्दसम्म मात्र यसको आयातन सीमित हुनुपर्दछ भनेर किटान नै गरेका छन्। छोटो, छरितो एवं कसिलो विचारयुक्त परिष्कृत भाषा र भावयुक्त रचना नै निबन्ध हो भनिन्छ।

### ३.३.२. विचारात्मक पक्ष

निबन्धमा स्रष्टाका आवेग, संवेग र आन्तरिक धारणको आधिक्य रहन्छ। तर धारणालाई बौद्धिकताको कसीले नियन्त्रण गरेको हुन्छ। त्यसैले विचारको विस्तारका लागि यसमा लेखकलाई अवकाश रहँदैन (सुवेदी, २०५८:१२)। विभिन्न तर्क, उदाहरण आदिद्वारा लेखकले आफ्ना विचार पाठकलाई मान्न कर गरेको हुन्छ। जुन कुरा अरू विधामा पाइँदैन। कवितामा जस्तो भावनाको ओइरो निबन्धमा लागे पनि बुद्धिद्वारा तिनको नियन्त्रण हुन्छ। त्यसैले निबन्ध सीमित विचारलाई प्रस्तुत गर्ने विधा हो। विचारको आधिक्य भयो र विचारात्मक भयो भने लेखकको कलागत कमजोरी ठहरिन्छ। 'स्व' निबन्धका लागि अनिवार्य तत्त्व हो।

### ३.३.३. वस्तुगतता

अङ्ग्रेजी साहित्यका सशक्त निबन्धकार फ्रान्सिस वेकनले निबन्धलाई नयाँ बाटो प्रदान गर्दै अब निबन्ध निजीपनबाट बहकिएर परात्मक वस्तुपरक स्वरूप समेत ग्रहण गर्न सक्छ भन्ने नवमान्यता स्थापित गरे। जतिबेला निबन्धकार निबन्ध लेख्न थाल्छ। त्यसबेला आफूले चयन गरेको शीर्षकलाई वस्तुनिष्ठ रूपमा तथ्यहरूलाई तथा तथ्याङ्कलाई आधार बनाएर अभिव्यक्त गर्छ। निबन्धमा भावतत्त्व भूमिका रहन्छ तर वस्तुवर्णन गर्दा त्यो अत्यन्तै क्षीणरूपमा देखिने

गरी वस्तुपरकता उपस्थित हुँदैन । तसर्थ निबन्धको पहिचानमा अहम भूमिका खेली स्वरूप निर्धारण गर्ने तत्त्व नै वस्तुपरकता हो ।

### ३.३.४. आत्मपरकता

मोन्तेयँ भन्दा पूर्व पनि निबन्ध नलेखिएका होइनन् तर तिनको विषयमा परिभाषा गरी यी तत्त्वको उपस्थितिले कुनै रचना निबन्धको कोटीमा दायर हुन्छ भन्ने कुराको सूचना भने उनीपूर्व थिएन । जब उनले विषय चिनाए त्यसै समयमा आत्मपरकताको कुरा उठाएर एउटा पहिचान आत्मतत्त्व हो भन्ने मान्यता स्थापित गरे । निबन्ध, कथा आदिमा पनि आत्मतत्त्व हुन्छ । निबन्धमा आत्मतत्त्वको प्रबलता भएमा तिलस्मीपूर्ण कथा बन्दछ । यसरी आत्मतत्त्वको प्रयोगमा मौलाउने विधा निबन्ध नै हो । यसर्थ आत्मपरकतामा आधारित लेख नै निबन्ध हो । एउटै शीर्षकमा दुई निबन्धकारले दुई निबन्ध लेख्दा फरक-फरक निबन्ध तयार हुनुमा आत्मतत्त्वले भूमिका खेलेको हुन्छ ।

### ३.३.५. स्रष्टाको प्रकृतिको प्रस्तुति

निबन्धको स्वरूप प्रस्तुतिमा महत्त्वपूर्ण भूमिका स्रष्टाको प्रकृति सामाजिक परिवेश आदिले खेलेका हुन्छ । कुनै शीर्षकमा केन्द्रित रहेर निबन्धकार निबन्ध लेख्न थाल्छ त्यसबेला स्वतः उसको प्रकृति झल्कन्छ । शङ्कर लामिछानेले जीवनलाई प्याजसँग तुलना गरेर दार्शनिक प्रकृति प्रस्तुत गर्दछन् भने तारानाथ शर्माले 'पातालमा विलाउने रोग' निबन्धमा आफू विदेशमा बस्दा भोगेका तिक्ततालाई प्रस्तुत गरेका छन् । यस्तै राममणि रिसालले 'दुःख किन दुख्ने गर्छ ?' निबन्धमा मृत्युको चोट एउटा पाटोबाट हेर्दा दुःखाई हो भने अर्को पाटोबाट हेर्दा मीठो स्वप्न हो भन्दै जीवनको शाश्वत यथार्थलाई देखाएका छन् ।

### ३.३.६. आख्यानरहित गद्यभाषा

निबन्धको एउटा स्वरूप गद्यत्मक भाषिक माध्यम र आख्यानरहित हुनु हो । निबन्धमा बौद्धिकता मुछिएको कल्पनाको प्रस्तुति हुन्छ । कथा, उपन्यास जस्ता विधामा आख्यानतत्त्वको समावेश हुन्छ भने निबन्धमा कल्पनातत्त्वको समावेश बढी रहेको पाइन्छ । यसैगरी निबन्धमा

गद्यभाषाको प्रयोग हुन्छ । केही निबन्धलाई टुक्र्याएर निबन्धत्मक स्वरूप दिन सकिन्छ, जस्तो देवकोटाको 'के नेपाल सानो छ ?' निबन्धलाई लिन सकिन्छ, तर निबन्ध जतिसुकै निबन्धत्मक अथवा अलङ्कारमय भए पनि गद्यात्मक अभिलक्षण भने छोडेको हुँदैन । निबन्धको भाषा प्रभुसम्मत नभएर कान्ता तथा मित्रसम्मत हुनुपर्छ ।

### ३.३.७. परिष्कृत भाषा

निबन्धले स्रष्टाको विचारलाई बोक्न सक्नुपर्छ । लेखक र पाठकको सोभो सम्बन्धलाई भाषाले बाँध्न हुँदैन । स्वादिलो र परिष्कृत विचारलाई डोन्याउन भाषा पनि त्यत्तिकै सक्षम हुनुपर्छ । जुन क्षेत्रको विषय छानिएको हुन्छ सोहीअनुसार कुँदिएको र माँभिएको भाषाको प्रयोग भएको हुनुपर्छ । अन्य विधाको तुलनामा निबन्ध बौद्धिक र चिन्तनपूर्ण विधा भएकाले भाषिक उचाई पनि त्यसरी नै कायम भएको हुनुपर्छ । खारिएको र बौद्धिक उचाई कायम भएको भाषाको प्रयोग गरी लेखिएको रचना नै निबन्ध हो ।

### ३.४. निबन्धका तत्त्वहरू

साहित्य सिर्जना गर्नका लागि केही आधार चाहिन्छ । विना आधार शून्यमा कुनै कृतिको सिर्जना हुँदैन । साहित्यका अन्य विधाहरू जस्तै निबन्धका लागि समेत आधारभूत तत्त्वहरू चाहिन्छन् । स्रष्टाले आफ्ना विचारहरूलाई जतिबेला लिखितरूप दिनथाल्छ, त्यतिबेला स्रष्टाले आफूले पोख्ने वस्तुको पोखाइको कला पोख्नुको उद्देश्य, सीप, ढाँचा वा तौरतरिका आदि कुराको आवश्यकता पर्दछ । यी र यस्तै ढाँचा र तरिकाहरू नै निबन्ध तत्त्वका रूपमा लिइन्छ । निबन्ध रचनाका लागि आवश्यक अङ्ग नै निबन्धका तत्त्व हुन् । साहित्यका विभिन्न विधाहरू तत्त्वकै आधारमा वर्गीकृत हुन्छन् । एक विधाबाट अर्को विधालाई छुट्ट्याउने मुख्य आधार नै त्यस विधामा प्रयुक्त तत्त्व हुन् । निबन्धका तत्त्वलाई संरचनाबाट पनि चिनाइएको पाइन्छ । निबन्धका तत्त्वहरूको निरूपण गर्ने सन्दर्भमा विद्वान्हरूका बीचमा फरक-फरक दृष्टि र मतहरू रहेका छन् । निबन्धका तत्त्वहरू यति नै हुन् भनेर किटान गर्ने अवस्था नभए पनि विद्वान्हरूले निबन्धका तत्त्वका सम्बन्धमा प्रस्तुत गरेका विचारका आधारमा यसरी चर्चा गर्नु उपयुक्त देखिन्छ :

हिन्दी साहित्यका विद्वान् राकेशले निबन्धका तत्त्वहरूका विषयमा चर्चा गर्ने क्रममा निम्न संरचनालाई अगाडि सारेका छन् -

- (१) लघु आकार (२) गद्यको माध्यम (३) निजी दृष्टिकोणको प्रधानता  
(४) कलात्मक सम्प्रेषणीयता (५) रूपविधान (६) प्रयोजन (राकेश, सन् १९६५ : ४)

नेपाली साहित्यका विद्वान् गोपीकृष्ण शर्माले निबन्धका संरचनालाई यस प्रकार देखाएका छन् -

- (१) वस्तु (२) शैली (३) उद्देश्य (शर्मा, २०६३ : २१) ।

त्यस्तै नेपाली साहित्यकै अर्का विद्वान् मोहनराज शर्माले निबन्धमा निम्न संरचनाको आवश्यकता पर्ने बताएका छन् -

- (१) विषय (२) शैली (३) प्रयोजन (शर्मा, २०५५ : ५१६) ।

नेपाली साहित्यकै अर्का विद्वान् केशवप्रसाद उपाध्यायका अनुसार निबन्धका तत्त्वहरू यस प्रकार छन् -

- (१) वस्तु (२) शैली (३) उद्देश्य (उपाध्याय, २०५९ : १७१) ।

डा. देवीप्रसाद गौतम र खगेन्द्रप्रसाद लुइटेले आफ्नो पुस्तक नेपाली निबन्धमा निबन्धका तत्त्वहरू यस प्रकार देखाएका छन् -

- (१) विषयवस्तु (२) हार्दिकता/बौद्धिकता (३) वैयक्तिकता (४) सङ्क्षिप्तता  
(५) उद्देश्य (६) दृष्टिविन्दु (७) भाषाशैली (गौतम र लुइटे, २०५४ : ५) ।

नेपाली साहित्यकै अर्का विद्वान् महादेव अवस्थीले निबन्धका संरचनालाई निम्नअनुसार देखाएका छन् -

- (१) शीर्षक (२) विषय र यसको सङ्गठन (३) आयाम (४) कथन पद्धति  
(५) विम्बालङ्कारको प्रयोग (६) भाषाशैली (कुञ्जिनी, २०५५ : ३७)

नेपाली साहित्यकै अर्का विद्वान् समालोचक तथा निबन्धकार राजेन्द्र सुवेदीले निबन्धका तत्त्व/संरचनालाई निम्नानुसार देखाएका छन् -

(१) विषय (२) संवेदना (३) निजात्मकता (४) उद्देश्य (५) यथार्थको प्रतिपादन  
(६) लघु आयतन (७) पूर्णता (८) गद्य (९) रचना शैली (सुवेदी, २०५७ : ५९) ।

मोहनप्रसाद तिमल्सिनाको लघु अनुसन्धान प्रतिवेदन नेपाली निबन्धको चरणगत वैशिष्ट्यको विश्लेषणमा निबन्धका तत्त्वहरू निम्नानुसार निर्धारण गरिएको छ-

(१) वस्तु (२) शैली (३) उद्देश्य (तिमल्सिना, २०४१ : १५-१७) ।

विभिन्न विद्वान्हरूले चर्चा गरेका निबन्धका तत्त्वहरूलाई हेर्दा समन्वित रूपमा मुख्यतया तीन तत्त्वहरू विषयवस्तु, उद्देश्य र भाषाशैली उल्लेख्य छन् ।

### ३.४.१. विषय

विषय भन्नाले निबन्धको शीर्षक हो जसको सेरोफेरोमा नै निबन्धकारले आफ्नो विचार व्यक्त गर्दछ । विषयरूपी आत्माकै आधारमा निबन्धले मूर्तरूप ग्रहण गर्दछ । विषय अति सामान्यदेखि विशिष्टसम्म हुन सक्दछ । धर्तीको धूलो, गोबरको थुप्रो, कसिङ्गर, भ्रूणदेखि क्रमशः भाव, घटना, व्यक्ति हुँदै आकाशका जुन-तारा समेतलाई विषयका रूपमा लिन सकिन्छ ।

### ३.४.२. उद्देश्य / प्रयोजन

कुनै पनि विषयमा निबन्ध लेख्न तयार हुँदा निबन्धकारले कुन उद्देश्य पूरा गर्ने चाहना राखेको हो सो विषयमा पनि सोच राख्न आवश्यक छ । सूचना दिने, अनुभव बाँड्ने, घटना प्रस्तुत गर्ने आदि विविध प्रयोजन निबन्धको हुन्छ । यसरी जेका लागि निबन्ध लेखिन्छ, त्यसैलाई निबन्धको प्रयोजनका रूपमा लिइन्छ ।

### ३.४.३. भाषाशैली

निबन्ध लेखनको ढङ्गलाई भाषाशैली भनिन्छ । एउटै शीर्षकमा दुई निबन्धकारले निबन्ध लेख्दा फरक देखिने एउटा तत्त्व नै भाषाशैली हो । भैरव अर्याल र शङ्कर लामिछाने, देवकोटा र तारानाथ शर्माका निबन्धमा भिन्नताको अनुभूति गराउने तत्त्वका रूपमा भाषाशैलीलाई लिन सकिन्छ । समास शैली, व्याख्यान शैली, व्यङ्ग्य शैली, प्रसाद शैली, भावुक शैली आदिको प्रयोग निबन्धमा भए पनि निबन्धमा आकर्षण थप्ने र पाठकलाई विचारको बोझ थाह नपाई बोकाउने अनि रमाइलो परिस्थिति सिर्जना गरेर पट्यार लाग्ने परिस्थिति दूर गर्ने तत्त्व शैली हो ।

निबन्ध लेखनका लागि आवश्यक तत्त्वहरूमध्ये उपयुक्त तत्त्वहरूको स्थान महत्त्वपूर्ण रहन्छ । निबन्धका उपर्युक्त अङ्गहरूको अभावमा निबन्धको कल्पना गर्न सकिदैन । एउटा विषयलाई लिएर लेखन आरम्भ गर्दा निबन्ध जस्तो लेख त बन्छ तर सर्वाङ्गपूर्ण बन्दैन । माथिका तत्त्वहरूलाई प्रयोग गरी निबन्धको रचना गर्दा निबन्धको परिभाषाले भने अनुसारको निबन्ध रचना हुन सक्दछ । कुनै पनि लेखलाई निबन्ध हो भनेर किटान गर्ने कसीका रूपमा उपर्युक्त तत्त्वहरूलाई आत्मसात गर्नु अनिवार्य हुन्छ ।

### ३.५. निबन्धको वर्गीकरण

साहित्यका अन्य विधाहरू मध्ये निबन्ध अत्यन्त वैयक्तिक विधा हो । विषयवस्तु र भाषाशैलीको विविधता तथा रचनात्मक अनेकताका कारण निबन्ध स्वयंमा जटिल बन्न पुगेको छ । त्यसैले साहित्यका अरू विधाहरूको जस्तो निबन्धलाई सहज र स्पष्ट विभाजन गर्न सकिदैन तापनि विद्वान्हरूले आ-आफ्ना दृष्टिकोण अनुसार वर्गीकरण गर्ने गरेका छन् ।

प्रारम्भिक समय देखि नै निबन्धलाई आन्तरिक र बाह्य गरी दुई तत्त्वका आधारमा वर्गीकरण गर्दै आएको पाइन्छ । निबन्धका आद्यप्रणेता मोन्तेयँले यसको आत्मपरक रूपलाई देखाए भने फ्रान्सिस बैकनले वस्तुपरक रूपलाई देखाए ।

हिन्दी साहित्यका विशिष्ट समीक्षक रामचन्द्र शुक्लले शैलीका आधारमा निबन्धको वर्गीकरण यस प्रकार गरेका छन् :

(क) विचारात्मक (ख) भावात्मक (ग) वर्णनात्मक (शुक्ल, हिन्दी साहित्य इतिहास)

समालोचक गुलाव रायले निबन्धलाई यस प्रकार वर्गीकरण गरेका छन् :

(क) वर्णनात्मक (ख) विवरणात्मक (ग) विचारात्मक (घ) भावनात्मक, (राकेश ४८ पृ. ९)

प्रो. विश्वनाथले विषय र प्रवृत्तिलाई आधार मानी निबन्धलाई यस प्रकार वर्गीकरण गरेका छन् :

(क) आत्मनिष्ठ (ख) वस्तुनिष्ठ ( प्रसाद, सन् १९७३, पृ. १६१)

डा. ईश्वर बरालले निबन्धको निबन्धको वर्गीकरण यस देखाएका छन् :

(क) निजात्मक/ वैयक्तिक (ख) परात्मक/ निवैयक्तिक (बराल, पृ. ३६)

त्यसमा पनि निजात्मकलाई निबन्ध र परात्मकलाई प्रबन्ध भन्नु प्रासङ्गिक हुन्छ भन्ने धारणा राखेका छन् ।

अर्का विद्वान् बालकृष्ण पोखरेल निबन्धलाई 'जमर्को' भन्न रुचाउँछन् । उनले निबन्धको वर्गीकरण यस प्रकार गरेका छन् :

(क) प्रबन्ध (ख) जमर्को (पोखरेल : २०२७, पृ. ९)

जमर्काका धर्काचित्र, नियात्रा, रुबन्ध र आत्मिका गरी चार भेद देखाएका छन् ।

साहित्यकार, समालोचक तथा नेपाली साहित्यका इतिहासकार तारानाथ शर्माले निबन्धको वर्गीकरण यस प्रकार गरेका छन् :

(क) आत्मपरक (ख) वस्तुपरक ( शर्मा : २०५२, पृ. १३)

विद्यलय वा क्याम्पसका विद्यार्थीहरूले लेख्ने असाहित्यिक रचना र अन्य प्रबन्धात्मक रचनाहरूलाई पनि निबन्ध कै नामले चिनाउने गरिन्छ । यसकारण निबन्धका साहित्यिक र असाहित्यिक गरी दुई रूप देखिन्छ ।

विभिन्न विद्वानहरूले विभिन्न तरिकाले वर्गीकरण गरेपनि निबन्ध स्वकेन्द्रित र परकेन्द्रित गरी दुई रूपमा विभक्त हुन पुग्दछ । यसैलाई निजात्मक र परात्मक पनि भनिन्छ ।

निजात्मक निबन्धका दुई भेद छन्, यस प्रकार छन् :

(क) भावात्मक निबन्ध (ख) विचारात्मक निबन्ध

परात्मक निबन्धका दुई भेद छन्, यस प्रकार छन् :

(क) वर्णनात्मक निबन्ध (ख) विवरणात्मक निबन्ध

### ३.५.१ निजात्मक निबन्ध

निजात्मक निबन्धलाई वैयक्तिक, आत्मपरक, व्यक्तिप्रधान र विषयीनिष्ठ पनि भनिन्छ । यस किसिमका निबन्धमा व्यक्तिको मुख्य स्थान रहने गर्दछ । निजात्मक निबन्धमा पनि भावात्मक र विचारात्मक गरी दुई भेद हुन्छन् । निबन्धमा निबन्धकारको स्पर्श भएमा भावात्मक निबन्ध हुन्छ भने बौद्धिकताको छनक आएमा विचारात्मक निबन्ध हुन्छ । व्यक्तिको व्यक्तित्व प्रदर्शन र अभिव्यक्ति जति बढी स्वच्छन्द हुन्छ त्यति नै यो उत्कृष्ट बन्दछ । त्यसैले अनौपचाकिता र आत्मकेन्द्रित निजात्मक निबन्धका गुण हुन् । व्यक्तिका निजी अनुभव, विचार र विद्वता प्रदर्शन गर्ने खालका निबन्धहरू यस भेदमा समेटिन आउँछन् (शर्मा : पृ.१९१) । यस्ता निबन्धमा विषयवस्तुको भाव र विचारको पूर्ण सन्तुलन रहनका साथै संवेदनात्मक स्थिति र संवेगात्मक अभिव्यक्ति हुन्छ (थापा : २०५०, पृ.१९१) । आत्मनिष्ठताका कारण निजात्मक निबन्धकार आफूले भोगेका हर्ष, सुख, आफूमाथि आएको दुःख, आपत्-विपद्, आफूले पाएको सफलता, असफलता, आशा र निराशा तथा आफूले गरेको कामना, कल्पना, चिन्तन आदिबाट संचालित हुन्छ । आत्मसम्प्रेषण वा उपदेश भन्दा 'स्व' को अभिव्यक्ति हुनु नै निजात्मक निबन्धको पहिचान हो, यो गतिशील हुन्छ (बराल : पृ.३८) । यसमा पाठकसित निबन्धकारको आत्मीय सम्बन्ध रहन्छ । निजात्मक निबन्धमा पाठकलाई आफ्नो जीवनयात्रामा पुऱ्याएर लेखकले आफ्ना तीता-मीठा अनुभव र गुणासाहरू पोख्दै त्यसबाट नजिकको सर्म्पर्क स्थापित गर्ने प्रयत्न गर्दछ (शर्मा : पृ.२५) । यसरी निबन्धकारका भावना, विचार

तथा दृष्टिकोण निबन्धमा प्रकट गरिने हुँदा निजात्मक निबन्धलाई भावात्मक, विचारात्मक गरी दुई भागमा विभाजन गर्न सकिन्छ ।

### ३.५.२. परात्मक निबन्ध

निजात्मक निबन्धको सम्बन्ध हृदय, बुद्धि र भावपक्षसँग बढी रहेको हुन्छ भने परात्मक निबन्धको सम्बन्ध विषयवस्तुसँग बढी हुन्छ । त्यसैले परात्मक निबन्धलाई वस्तुपरक वा विषयपरक निबन्ध पनि भनिन्छ । परात्मक निबन्ध विषयप्रधान निबन्ध हो । यसको विषयवस्तु इतिहास, दर्शन, भ्रमण, विज्ञान, साहित्य, प्रकृति आदि हुनसक्छ (शर्मा : पृ.२८) । यसमा व्यक्ति गौण र विषयप्रधान हुन्छ । निर्वैयक्तिक निबन्धको रूप विधान बाह्य हन्छ । निजात्मक निबन्ध मन्मय रचना हो भने परात्मक निबन्ध तन्मय रचना हो (बराल : पृ.१४१) । परात्मक निबन्धमा निजानुभूतिको वास्ता नगरी 'पर' वा वस्तुसत्यको यथार्थ चित्र प्रस्तुत गर्नु निबन्धकारको मूल लक्ष्य हुन्छ । लेखकको सोचाइ, हेराइ र लेखइ प्रत्यक्ष रूपमा यस्ता निबन्धमा प्रस्तुत गरिएको हुन्छ । परात्मक निबन्धलाई वर्णनात्मक र विवरणात्मक गरी दुई भागमा वर्गीकरण गर्न सकिन्छ ।

### ३.५.३ निबन्ध र प्रबन्ध प्रबन्ध बीच भिन्नता

निबन्धकै प्रायः समानार्थी शब्दका रूपमा प्रबन्ध शब्द पनि संस्कृतमा प्रचलित छ । यी दुई शब्द मूलतः आफ्ना भावनाहरूलाई बाँध्नाकै तात्पर्यमा प्रयुक्त भएका छन् तापनि यिनमा सुक्ष्म अन्तर पनि पाइन्छ । हिन्दी शब्दकोशका अनुसार कुनै एक विषयसम्बन्धी अनेक व्याख्याहरूको संग्रहलाई निबन्ध र कुनै विषयसम्बन्धी अनेक मतहरूको संग्रहलाई प्रबन्ध भनिन्छ (वर्मा : पृ. ४४५) । यसबाट निबन्धमा गृहीत विषयलाई स्पष्ट्यउनका निम्ति निजी दृष्टिकोण र अनेक विषय भए पनि त्यसलाई स्थापित मत, सिद्धान्त वा तर्कपूर्ण स्थापनाद्वारा प्रमाणित गरिन्छ भन्ने तथ्य देखापर्दछ । त्यसैले निबन्धलाई वैयक्तिक र प्रबन्धलाई सर्वभौम रचना हो भन्नुपर्ने हुन्छ तर प्रबन्ध शब्द साहित्यिक शब्दमा नै बढी प्रयोग भएको देखिन्छ । संस्कृतमा यसको प्रयोग कथा वा आख्यान अर्थमा भएको पाइन्छ । बाणभट्टको 'कादम्बरी' र

दण्डीको 'दशकुमार चरित' लाई प्रबन्धकाव्य भनिएको छ । खण्डकाव्य र महाकाव्यलाई प्रबन्धकाव्यभित्र राखेको पाइन्छ ।

संस्कृत साहित्यपरम्परामा निबन्ध र प्रबन्ध बीचको भिन्नता स्पष्टरूपमा देखिदैन । निबन्ध एउटै विधा विशेषमा सीमित नरही अनेक सन्दर्भमा प्रयुक्त भएको छ भने प्रबन्ध शदले अपेक्षाकृत रूपमा शुद्ध साहित्यिक तात्पर्यमा बढी जोड दिएको छ । बङ्गला साहित्यका रवीन्द्रनाथ ठाकुरले आफ्ना रागात्मक निबन्धहरूको संग्रहलाई विचित्र प्रबन्धहरूको संज्ञा दिएका छन् ( अधिकारी : पृ. १३) । नेपाली निबन्ध साहित्यका उच्च प्रतिभा देवकोटाले आफ्नो निबन्ध संग्रहको भूमिकामा 'प्रबन्ध' शब्दको प्रशस्त प्रयोग गरेका छन् (देवकोटा : २०३८, पृ. ख) । विश्वसाहित्यका सशक्त निबन्धकारहरूका उत्कृष्ट निबन्धहरूको अनुदित संग्रहलाई 'प्रसिद्ध प्रबन्ध संग्रह' नामकरण गरेका छन् । यसको तात्पर्य विशुद्ध, निजात्मक र स्वतन्त्र रचनालाई नै प्रबन्ध भन्न खोजिएको हो जसलाई आज निबन्ध भनेर चिनिन्छ (सुवेदी : पृ. २५) । निजात्मक निबन्धहरूको संग्रहलाई बदरीनाथ भट्टराईले 'पच्चीस प्रबन्ध' भनेर संग्रहलाई नामकरण गरेका छन् । शाब्दिक सीमा भित्र हेर्ने हो भने बन्ध धातुका पूर्वसर्ग 'नि' लाग्दा निबन्ध र 'प' लाग्दा प्रबन्ध शब्द व्युत्पन्न हुन्छ ।

साहित्यिक निबन्धलाई निबन्ध र साहित्येतर निबन्धलाई प्रबन्ध अर्थात लेख भनिन्छ ( सुवेदी : २०५७ पृ.५८) । निबन्धको आयतन पूरा गर्ने क्रममा यदाकदा विस्तृत पनि हुनसक्छ भने प्रबन्धको आयतन वस्तुको सीमाभरि मात्र तन्किन सक्छ (सुवेदी : पृ.२७) । प्रबन्धमा वस्तुपक्षको बौद्धिक प्रतिपादन हुन्छ भने निबन्धमा भावनाको स्वाभाविक प्रतिपादन मात्र हुन्छ । निबन्धमा रागात्मक भावुकता हुन्छ भने प्रबन्धमा वस्तुनिष्ठ बौद्धिकताको प्रतिपादन हुन्छ । प्रबन्धमा श्रमसाध्यता प्रबल हुन्छ भने निबन्धमा सहज साध्य र श्रमसाध्य दुवै हुनसक्छ । भाषाको उन्मुक्त स्वरूप निबन्धमा अवतरित हुन्छ भने प्रबन्धमा भाषाले औपचारिक र सन्दर्भ अर्थोत्पादन गर्ने काम मात्र गर्दछ । भावनाको सहज उत्पन्न स्थितिमा निबन्ध सुरु हुन्छ र भावनाको सहज समापनमा निबन्ध सकिन्छ भने प्रबन्ध कुनै विषयको प्रवेशबाट लेखिन आरम्भ हुन्छ । बीचमा पक्ष पक्षान्तर मूल्य र प्रसङ्गको चर्चा गर्दै निरूपण गर्दै निष्कर्षमा पुगेर टुङ्गिन्छ । निबन्धको विषय र आकार सीमित अनि प्रबन्धको विषय र आकार अपेक्षाकृत विस्तृत हुन्छ ।

यसरी प्रबन्ध बढी गहन, खोजपूर्ण र वस्तुनिष्ठ हुन्छ भने निबन्ध अपेक्षाकृत हलुका, सरल, संक्षिप्त र व्यक्ति परिचायक हुन्छ ।

### ३.५.२. अन्य विधासँग निबन्धको सम्बन्ध

साहित्यका विभिन्न विधा एवं उपविधाहरू छन् । साहित्य शब्दले समेट्ने ती विधा एवं उपविधाहरूका बीच कतिपय सन्दर्भमा समानता अथवा साधर्म्य र कतिपय सन्दर्भमा असमानता वा वैधर्म्य भेटिन्छ । साहित्यका प्रमुख चार विधामा पर्ने विशिष्ट र लोकप्रिय विधाहरू मध्येको एक विधा निबन्ध पनि हो । साहित्ययात्राकै कान्छो विधाका रूपमा रहेको र सर्वाधिक लोकप्रिय हुन सफल विधा निबन्ध र अन्य विधाहरू (कविता, कथा र नाटक) का बीचमा के-के साधर्म्य के-के वैधर्म्य छन् भन्ने केरालाई यहाँ स्पष्ट पार्न खोजिएको छ ।

#### ३.५.२.१. निबन्ध र कविता

निबन्ध र कविता साहित्य विधाका प्रमुख र छुट्टाछुट्टै विधाहरू हुन् तापनि यी विधाहरू बीच कतिपय समय र सन्दर्भमा समानता भेटिन्छ । निबन्ध वैयक्तिक रचना हो । निबन्धमा निबन्धकारका व्यक्तिगत भाव-विचार र अनुभूतिको अभिव्यक्ति रहन्छ । त्यो लेखन स्वगतकथनका रूपमा प्रकट भएको हुन्छ भने कविताका मुक्तक र फुटकर जस्ता उपविधामा पनि त्यही लेखकीय स्वगतकथनको प्राधान्य रहन्छ -त्रिपाठी : २०५४, पृ. ३४) । निबन्ध र कविता दुवै अनुभूति प्रधान रचना हुन् । हार्दिकताको रूपमा नै यी विधा मौलाउँछन् । निबन्ध र कविता दुवै विधामा आख्यानको आवश्यकता हुँदैन र त्यसको प्रयोग अनुभूति र भाव-विचारको बाहकका रूपमा मात्र गरिन्छ । आख्यानको प्रयोग अप्रधान रूपमा नै रहेको हुन्छ । यिनमा बुद्धितत्त्वको प्रयोग हार्दिक संवेदनाको रूपमा मात्र गरिन्छ, (द्विवेदी : सन् १९७१ पृ. १) । रागात्मक भावना र लयात्मकताको सन्निवेशका कारण निबन्ध र कविता निकटधर्मी छन् कविता (काव्य) मूलतः श्रव्यपाठ्य साहित्यको गद्यभिन्न पद्यविधा हो । कवितामा पद्यात्मक नियन्त्रणको विधान रहन्छ । निबन्ध श्रव्यपाठ्य साहित्यको पद्यविधा अन्तर्गत पर्ने आख्यानेतर उपविधा हो र यसमा कुनै पनि किसिमको शास्त्रीय नियन्त्रण र शैली निर्देश हुँदैन । कवितामा सौन्दर्य र सजावटको चेतना रहन्छ तर निबन्धकारलाई प्रदर्शनको ख्याल रहन्छ, न त ऊ

शैलीको विनिमय जान्दछ । बिम्बात्मक आयोजनाका कारण कविताको सम्प्रेषणियता दुरूह दुर्बोध्य समेत हुन सक्छ । तर निबन्धमा बिम्ब प्रतीक आदिको चपेटामा परेर सम्प्रेषण दुरूह बन्नुपर्ने अवस्था हुँदैन । कवितामा आवेगको प्रस्तुति जुन मात्रामा हुन्छ, निबन्धमा त्यति हुँदैन । कवितामा बिम्ब र प्रतीकको प्रयोग अपेक्षित हुन्छ । बिम्ब र प्रतीकको भाषालाई निबन्धकार विडम्बनाका लागि प्रयोग गर्दछ । कविता स्वतन्त्र कल्पनामा आधारित रहन्छ भने निबन्धमा कल्पनामाथि बुद्धिले लगाम लगाएको हुन्छ । आयामका दृष्टिले कविता फुटकर रूपदेखि बृहत् ( महाकाव्य ) र अझ बृहत्तर ( आर्षमहाकाव्य ) रूपसम्म लम्बिन सक्ने विधा हो भने निबन्धको आयाम सीमित हुन्छ । यसलाई बढाएर ठूलो कृति बनाउन सकिँदैन । कवितामा आयाम विस्तार भएपछि आख्यान तत्त्व विद्यमान रहन्छ भने निबन्ध आयामरहित विधा हो । कविता संवेदना र मनोरञ्जनका लागि हो भने निबन्ध सूचना र बौद्धिकताका लागि हो । कवितामा पात्रको भूमिका उच्च रहन्छ । पात्रको माध्यमले रचनाकार आफ्ना संवेदनाहरू पोख्छ र मनोरञ्जनका कारकका रूपमा पनि पात्रलाई उभ्याउँछ तर निबन्धमा लेखकले आफ्ना कुरा स्वयं आफैँले आफूलाई पात्र बनाएर प्रस्तुत गर्दछ । त्यसैले निबन्धमा पात्रको भूमिका निम्न खालको रहन्छ । यिनै साम्य र वैषम्य कै आधारमा साहित्यको सर्वप्राचीन विधाका रूपका परिचित र लामो समयसम्म साहित्यको पर्यायवाचीका रूपमा स्थान ओगटेको कविता र निबन्धका बीचका सम्बन्ध स्पष्ट हुन्छन् ।

### ३.५.२.२. निबन्ध र कथा

नेपाली साहित्यका मुख्य विधाका रूपमा देखिने निबन्ध र कथा श्रव्य पाठ्य विधा अन्तर्गत पर्दछन् । निबन्ध र कथा दुबै गद्य साहित्यका कलात्मक विधा हुन् । आयामका दृष्टिले यी दुई विधामा समानता पाइन्छ । विषय र समस्याको प्रधानता यी दुबै विधामा हुन्छ । निबन्धमा निबन्धकार एउटा निष्कर्षमा पुग्ने प्रयास गर्दछ भने कुशल कथाकारको कथाशिल्पमा कथाको अन्त्य भइसकेपछि पनि कथाद्वारा सिर्जित उत्सुकता र कौतुहल अन्त्य नभई अझ बढ्न पुग्दछ ( थापा : पृ. १६९ ) । कथाको उद्देश्य जीवनको कुनै घटना, परिवेश वा अवस्थाको जानकारी दिनु हो । आफू व्यक्त गरेको कुरा ठिक हो भन्ने पुष्टि गर्न जुटाउँछ । त्यसैले निबन्धकारले भन्न खोजेको कुरा र कथाकारले बताउन खोजेको निष्कर्ष एउटै-एउटै हुन्छ र अन्त्य पनि उस्तै-उस्तै

देखिन्छ । भाषाशैलीका दृष्टिले यी दुई विधामा समानता पाइन्छ । कथामा पात्रगत अल्पता विषयगत सीमितता र वस्तुगत तीव्रता हुने हुनाले तदनुकूल भाषामा पनि सीमितता र सङ्क्षिप्तता हुनु आवश्यक देखिन्छ ।

विषयमा विविधता र विषय प्रतिपादनमा नियमित सङ्कोच निबन्धको विशेषता भएकाले संक्षिप्ततामै महत्त्वपूर्ण कुराहरू भन्नु निबन्धकारको पनि धर्म हो । आकारका दृष्टिले कथा र निबन्ध लघुविधा हुन् । निबन्ध र कथा दुबैको गठन प्रक्रिया स्थूल हुन्छ । दुबैको प्रस्तुति अप्रत्यक्ष हुन्छ । श्रव्य-पाठ्य भेदअन्तर्गत पर्ने निबन्ध र कथामा घटना र विचारको प्रधानता दुबै विधामा पाइन्छ । कथा मूलतः निर्वैयक्तिक र विषयगत विधा हो भने निबन्ध व्यक्तित्व प्रधान विधा हो । कथामा कुनै समयको एउटा घटना र चरित्रको क्रमिक विकासको प्रबन्ध मिलाइएको हुन्छ । कुनै एक निश्चित क्रमबाट कथाको प्रारम्भ हुन्छ, र मध्य भागमा गएर कथानकका विकासका क्रममा समस्याको उठान र बैठानसँगै त्यसको समाधान प्रस्तुत गरिन्छ, तर निबन्धमा कथाको जस्तो क्रमिक विकास हुँदैन वरु निबन्धकार कुनै एक विषयलाई समातेर आफ्ना भावनाका लहरमा लहडिँदै अघि बढ्दै जान्छ, र त्यस्ता भावनाका समाप्तिसँगै निबन्ध पनि अन्तिम विराममा पुग्दछ । विषयका दृष्टिले निबन्धको सीमा खुल्ला छ । सुरमुनिदेखि भुसुनासम्म र अणुदेखि ब्रह्माण्डभित्रका सम्पूर्ण वस्तुहरू निबन्धका विषय बन्न सक्दछन् । निबन्धको महत्त्व विषयको छनौटमा होइन प्रस्तुति र प्रतिपादनमा अन्तर्निहित रहन्छ, वस्तुका आधारमा निबन्ध दृष्टिकोण र विचारप्रधान हुन्छ, भने कथा घटनाप्रधान हुन्छ । शैलीका आधारमा हेर्दा कथा वर्णनात्मक, विवरणात्मक, व्याख्यात्मक हुन्छ, भने निबन्ध विश्लेषणप्रधान हुन्छ । दृष्टिविन्दुका आधारमा कथामा प्रथम र तृतीय पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरिन्छ । निबन्धमा तृतीय पुरुष दृष्टिविन्दुको प्रयोग गरिन्छ । भाषिक दृष्टिले कथामा सरल, स्पष्ट एवं स्थानीय भाषिकाका साथै जातीय भाषाको प्रयोग हुन्छ, भने निबन्धमा सकेसम्म भाषिका र जातीय भाषा आदि वर्जित हुन्छन् ।

### ३.५.२.३. निबन्ध र नाटक/एकाङ्की

निबन्ध र नाटक साहित्यका अत्यन्त लोकप्रिय विधा हुन् । निबन्धका तुलनामा नाटक धेरै पुरानो विधा हो र पुरानो विधा नाटक र नयाँ तथा सबैभन्दा कान्छो विधा निबन्धका बीच प्रशस्त समानताहरू र असमानताहरू भेटिन्छन् ।

निबन्धको लेखन गद्यमा हुन्छ भने आधुनिक नाटकको मूल धर्म पनि गद्यात्मकता नै हो र बनोटका आधारमा हेर्दा पनि दुवै गद्यलयमा लेखिन्छ । निबन्ध पाठ्य विधा हो भने नाटक चाँहि मञ्चन हुने साहित्यिक विधा हो । त्यसैले अभिनयलाई नाटकको मूल मेरुदण्डका रूपमा स्वीकार गरिन्छ, भने भाषाका माध्यमले विचारको अभिव्यक्ति निबन्धको धर्म हो । नाटकका लागि घटना पात्र आदि तत्त्व अनिवार्य हुन्छन् । नाटकका लागि रङ्गमञ्च, अभिनेता, निर्देशक, बाद्य, सङ्गीत, नृत्य, गीत आदि आवश्यक हुन्छन् भने निबन्धमा यी सबै कुराको भन्भट हुदैन । अभिनय गर्नुपर्ने हुनाले नाटकमा अन्वितित्रयको प्रयोग अनिवार्य हुन्छ तर निबन्ध यसबाट मुक्त हुन्छ । नाटक दृश्यात्मक भएको कारण अशिक्षितका माँभमा पनि लोकप्रिय बन्छ ।

संरचनाका आधारमा हेर्दा नाटक र निबन्धका बीचमा भिन्नता पाउन सकिन्छ । नाटक अनिवार्य रूपमा अङ्क वा दृश्यमा विभक्त हुन्छ भने निबन्धमा यस्तो केही रहदैन । निबन्धको शैली विवरणात्मक हुन्छ भने नाटकको शैली कार्यात्मक हुन्छ । कुनै-कुनै कुराबाट नाटक र निबन्धका बीचमा समानता भेटिए पनि धेरै चाँही असमानता नै भेटिन्छ ।

### ३.६. निबन्ध विश्लेषणका आधारहरू

संश्लिष्ट भएको वा एउटैमा मिलेर रहेको कुरालाई अलग-अलग छुट्ट्याउने काम वा प्रक्रियालाई विश्लेषण भनिन्छ । निबन्ध के कस्ता घटक वा तत्त्वहरू मिलेर बनेको छ, त्यसलाई केलाउने कामलाई निबन्धको विश्लेषण भनिन्छ । निबन्ध विश्लेषणका क्रममा बाह्य संरचना र आन्तरिक संरचनालाई आधार मानिएको छ । बाह्य संरचना भन्नाले कृतिको बाह्य तहमा रहने संरचना हो । निबन्धको बाह्य संरचना अन्तर्गत शीर्षकको संरचना, आयाम, परिच्छेद आदि पर्दछन् । आन्तरिक संरचना भन्नाले त्यस विधाको अन्तरतहमा प्रयुक्त तत्त्वहरू बुझिन्छ । यहाँ निबन्धको विश्लेषण गर्दा चार प्रमुख घटकहरूलाई आधार मानिएको छ । निबन्धको बाह्य

संरचना विश्लेषणका निमित्त संरचना शीर्षक राखिएको छ भने आन्तरिक संरचना विश्लेषणका निमित्त निबन्धका प्रमुख तत्त्वहरू विषयवस्तु, उद्देश्य र भाषाशैली शीर्षक राखिएको छ । यिनै तीन प्रमुख घटकहरूलाई निबन्ध विश्लेषणको आधार मानिएको छ ।

### ३.६.१. विषयवस्तु

विषयवस्तु निबन्धको अनिवार्य तत्त्व हो । यसको अभावमा निबन्धको कल्पनासम्म पनि गर्न सकिँदैन । निबन्धको विषयवस्तु व्यापक र असीमित हुन्छ । विश्वका सूक्ष्म जीवाणुदेखि बृहत् आकृतिका प्राणीहरूसम्म, परमाणुदेखि स्थूल ग्रहसम्म र कल्पनाका तरङ्गदेखि यथार्थताका क्रियाकलापसम्मका व्यापकतम क्षेत्रसम्म निबन्धको विषय फैलिएको हुन्छ (सुवेदी, २०५७ : ५९) । निबन्धमा प्रयुक्त विषयगत विविधता र व्यापकताकै कारणबाट निबन्धका अनेक प्रकारहरूको निर्धारण हुन्छ । निबन्धको विषय औपचारिक मात्र नभएर अनौपचारिक पनि हुन्छ । यसमा विविध टुक्रे घटनावली, विवरण, विषय वा सन्दर्भको पनि अभिव्यक्ति हुन सक्छ (गौतम र लुइटेल्, २०५४ : ६) । निबन्धको न कुनै निश्चित विषय छ न निषेध; निबन्धमा महत्त्व विषयको नभएर त्यो आत्माको हुन्छ, जो बोलिरहेछ; त्यो प्राणको हुन्छ, जुन उसमा सक्रिय हुन्छ । निबन्धकारले कुनै पनि विषयलाई आफ्नो ज्योतिले चम्काउन सक्छन् (नलिन, सन् १९६४ : १२) । बुद्धि र हृदय निबन्धका मूलभूत सामग्री हुन् । राम्रा निबन्धमा यी दुवैको समन्वय कामय गरिएको हुन्छ (शर्मा, २०६३ : २१) ।

निबन्धको विषयवस्तु जे पनि हुन सक्दछ । वस्तुका बारेमा निबन्धकारलाई पर्याप्त जानकारी हुन आवश्यक छ । विषयवस्तुका बारेमा निबन्धकारले स्वतन्त्र रूपले छनोट गर्न सक्छ । विषयवस्तु बिना निबन्ध सृजना हुन सक्तैन, त्यसैले विषयवस्तु निबन्धको आवश्यक तत्त्व हो ।

### ३.६.२. उद्देश्य

जुनसुकै रचनाको कुनै न कुनै उद्देश्य रहेको हुन्छ । त्यस्तै गरी निबन्धको पनि उद्देश्य अवश्य रहेको हुन्छ । बिनाउद्देश्यको निबन्ध निरर्थक प्रलाप मात्र हो । निबन्धकलाको मूल उद्देश्य अल्प समयमा कुनै पनि विषयको परिचय दिनु हो ( उपाध्याय, २०५९ : १७२) । निबन्ध व्यक्तित्वको परिचायक हुन्छ र निबन्धकारले यसका माध्यमबाट 'स्व' को चिनारी गराउँछ ।

त्यसो हुनाले आत्मप्रकाशन निबन्धको एक उद्देश्य हो भने सूचनात्मकता निबन्ध रचनाको अर्को उद्देश्य हो । कुनै विषयलाई लिपिबद्ध गर्दा निबन्धकारले आफ्नो उद्देश्यलाई स्पष्ट पार्न सक्नुपर्छ किनभने निबन्ध नै यस्तो काव्यविधा हो, जसमा लेखकको व्यक्तित्व लुकेर नबसी निर्भीकता र निःसङ्कोचसाथ प्रकाशमा आउन सक्छ, तर निबन्धकारको उद्देश्य उपदेश दिनु नभई सूचना दिनु वा आत्मप्रकाशन हुनुपर्छ (उपाध्याय, २०५९ : १७२) । त्यसैले निबन्ध रचनाको मुख्य उद्देश्य आत्मप्रकाशन र सूचनात्मकतालाई मान्न सकिन्छ । निबन्धको रचना सोद्देश्यमूलक गरिने हुँदा उद्देश्य निबन्धको आवश्यक तत्त्व हो ।

### ३.६.३. भाषाशैली

निबन्ध गद्य विधा भएकाले यसमा गद्य भाषाको प्रयोग गरिन्छ । निबन्धमा प्रयोग गरिने भाषा सरल र सरस हुनुपर्दछ । निबन्धकार जुन भाषामा निबन्ध लेख्छ, त्यस भाषालाई उसले राम्रोसँग खेलाउन सक्ने हुनुपर्दछ । निबन्धको भाषा अलङ्कारबाट मुक्त हुनु राम्रो मानिन्छ । भाषाशैली रचनाशिल्प भएकाले हरेक निबन्धकारको आ-आफ्नै भाषाशैलीगत विशिष्टता हुन्छ । सङ्क्षिप्तता, सुगठन र कसिला वाक्यको प्रयोग निबन्धका भाषाशैलीगत वैशिष्ट्य हुन् । निबन्धको भाषा सरल, सहज, कोमल, हार्दिक, सम्प्रेषणीय, रागात्मक र हृदयस्पर्शी हुनुपर्छ ( गौतम र लुइटेल्, २०५४ : ८) । निबन्धमा प्रयुक्त शब्द विषयानुकूल, रोचक र अर्थबोधक हुनुपर्दछ ॥

भाव र भाषालाई एकै ठाउँ समन्वित गर्ने ढङ्ग शैली हो । शैलीको सृष्टिका लागि भाव र भाषाको तालमेल वा सहसम्बन्ध आवश्यक हुन्छ (शर्मा, २०६३ : २२) । शैलीलाई भाव र भाषाका माध्यमबाट विभाजन गरिएको छ । भावका आधारमा संयत शैली, भावुक शैली, व्यङ्ग्य शैली छन् भने भाषाका आधारमा प्रसाद शैली र समास शैली (शर्मा, २०६३ : २३) गरी शैलीलाई विभाजन गरिएको छ । सरलता, स्पष्टता, प्राञ्जलता र प्रभावकारिता शैलीका गुण हुन् । कठिन शब्दावली, घुमाउरो वाक्यविन्यास, लामा-लामा पाण्डित्यपूर्ण वक्तव्य, वाक्य वा शब्दहरूबाट अभिप्रेरित अर्थ स्पष्ट नहुनु, पुनरुक्ति (एउटै शब्दको पुनरावृत्ति), व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धिहरू, वाक्यहरूको तारतम्य नमिलेको हुनु, विचारहरूको क्रम ठीक नहुनु शैलीका दोष मानिन्छन् (उपाध्याय, २०५९ : १७२) त्यसैले भाषाशैली निबन्धको अनिवार्य तत्त्व हो ।

### ३.७. निष्कर्ष

कुनै पनि विधाको सक्षमता असक्षमताबारे चर्चा गर्दा त्यस विधाको सैद्धान्तिक विकास कतिसम्म भएको छ, त्यसमा निर्भर गर्दछ । विभिन्न विद्वान्हरूले स्थापना गरेका मूल्य मान्यताका आधारमा निबन्धको अन्य विधासँगको सम्बन्धका बारेमा चर्चा गरिएको छ । साहित्यका प्रमुख चार विधाहरूमध्ये निबन्ध एउटा हो । यसका दुई प्रमुख भेद छन्- आत्मपरक र वस्तुपरक । आफूलाई केन्द्र बनाई निबन्ध सिर्जना गरिन्छ भने त्यो आत्मपरक र त्यो भन्दा भिन्न वा कुनै वस्तु विशेषलाई मुख्य विषय बनाई निबन्धको सिर्जना गरिन्छ भने त्यो वस्तुपरक हुन्छ । निबन्धको उत्पत्ति पश्चिमबाट भएको हो । निबन्धको पहिलो सिर्जना गर्ने श्रेय फ्रान्सका मोन्तेयँलाई प्राप्त छ । उनले निबन्ध आत्मकेन्द्रित हुन्छ भनेका छन् । पछि गएर इङ्ल्याण्डका विद्वान बेकनले निबन्धलाई वस्तुपरक ढङ्गबाट चिनाउदै छरिएको चिन्तन भन्छन् । यसरी आत्मपरक निबन्धका जन्मदाता मोन्तेय र वस्तुपरक निबन्धका जन्मदाता बेकन हुन पुगे । संरचनाका दृष्टिले निबन्ध छोटो छरितो विधा हो । निबन्धकारले आफ्ना निबन्धमा कुनै विषयको सूचना दिइरहेको हुन्छ, वस्तुको वर्णन गर्दछ, अथवा मनमा लागेका कुरा सर्सर्ती भन्छ, त्यसैले त निबन्ध मनको पोखाइ हो । सिर्जनात्मक विधामा निबन्ध विश्व साहित्यको कान्छो विधा हो तर यसको विकास छिटो र छरितो रूपमा हुन पुग्यो । साहित्यका अन्य विधाहरू कविता, आख्यान ( कथा र कविता) र नाटक/एकाङ्कीसँग यसको नजिकको सम्बन्ध देखापर्दछ । निबन्धको कथ्य सामाजिक जनजीवनकै सेरोफेरोभित्र अडिएको हुन्छ । त्यसैले जुनसुकै विषयमा स्वतन्त्र ढङ्गले सोचविचार गर्नु र आफ्नो भावनात्मक प्रवाहमा अनियन्त्रित रूपले पोखिनु निबन्ध हो भन्न सकिन्छ ।

## परिच्छेद चार

# नगेन्द्र शर्माका निबन्धको विषय

### ४.१.विषय परिचय

प्रस्तुत परिच्छेदमा नगेन्द्र शर्माको निबन्धका विषयको अध्ययन गरिएको छ । यहाँ उनका 'नगेन्द्रका निबन्ध' (२०२६), 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' (२०२४), 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' (२०४७) र 'अनुस्मरण' (२०६८) जस्ता चार निबन्धसङ्ग्रहका साथै 'सम्भाउनि बिसाउनि' (सन् २००५) र 'छासमिस मासमिस' (सन् २००५) र जस्ता दुई लघु निबन्धसङ्ग्रहहरूका निबन्धको विषयका बारेमा अध्ययन गरिएको छ ।

### ४.२. 'नगेन्द्रका निबन्ध' निबन्धसङ्ग्रह विश्लेषण

आधुनिक नेपाली निबन्ध क्षेत्रमा एक सफल निबन्धकार नगेन्द्र शर्मा (१९८७) द्वारा लेखिएका पन्ध्रओटा निबन्धहरूको सङ्ग्रह 'नगेन्द्रका निबन्ध' (२०२६) प्रथम प्रकाशित निबन्धसङ्ग्रह हो । 'नगेन्द्रका निबन्ध' निबन्धसङ्ग्रह विभिन्न समयमा पत्रपत्रिकामा प्रकाशित निबन्धहरूको सङ्गालो हो । यस सङ्ग्रहमा आत्मपरक र वस्तुपरक दुवै प्रकारका निबन्धहरू सरल भाषाशैलीमा लेखिएका छन् । यस सङ्ग्रह भित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । समाजमा अझै जुको टाँसिए भैं रहेका घृणित रुढिहरूलाई यी निबन्धले गतिलो भापट दिएका छन् । यसरी 'नगेन्द्रका निबन्ध' भित्रका निबन्धहरूलाई तार्किक र बौद्धिक दृष्टिले उत्कृष्ट निबन्धका कोटीमा राख्न सकिन्छ । त्यसैले उनका निबन्धहरू अरूका निबन्ध भन्दा भिन्न पहिचान राख्न सफल छन् ।

#### ४.२.१ आत्मपरक निबन्धहरू

नगेन्द्र शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा आत्मपरक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको

विरोध बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका आत्मपरक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### ४.२.१.१ सामाजिक आत्मपरक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा आत्मपरक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । सामाजिक आत्मपरक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### (१) कसको चरित्र, कसको भाग्य ? निबन्ध

पौराणिक सूक्ति सधैंभरी सर्वमान्य भएर रहन सक्दैनन्, सूक्तिहरू युगसापेक्ष हुन सक्नुपर्दछ भन्ने मूल विषय बोकेको 'कसको चरित्र, कसको भाग्य ?' निबन्ध नगेन्द्र शर्माद्वारा लिखित 'नगेन्द्रका निबन्ध'भित्र रहेको पहिलो निबन्ध हो । यस निबन्धमा 'स्त्रिया चरित्रम्, पुरुषस्य भाग्यम्, दैवो नजानाति कुतो मनुष्य' भन्ने उक्तिलाई निबन्धकारले पूरै बदल्नुपर्ने तर्क प्रस्तुत गरेका छन् । निबन्धकार शर्मा उक्त उक्तिलाई उल्ट्याएर 'पुरुषस्य चरित्रम्, स्त्रिया भाग्यम्, मनुष्यो नजानाति कुतो दैव' बनाउँदै यसको सान्दर्भिकता देखाउने प्रयास गर्छन् ।

निबन्धको शुरुतिरै निबन्धकार शर्माले आफूले त्यसअघि लेखेको अर्को निबन्ध, 'उखेल्लुपर्ने उखानहरू'को प्रसङ्ग उठाउँदै विषयवस्तु अघि बढाउँछन् । एक मित्रले उक्त निबन्धप्रति गरेको तीतो टिप्पणी उनी स्मरण गर्छन्; "थोत्रो प्रगतिवादी बन्न खोज्छौ ?" भन्ने मित्रलाई जवाफ दिने प्रसङ्गमा शर्माद्वारा प्रस्तुत गरिएका तर्कहरू नै निबन्धको मूल विषयवस्तु बनेर आएका छन् । स्त्रीको चरित्रलाई दैवले पनि बुझ्न सक्दैनन् भन्ने भनाइप्रति निबन्धकार शर्माको पूरै विमति छ । उनी पुरुषको भाग्य बुझ्न नसकिने होइन, बरु पुरुषको चरित्र र स्त्रीको भाग्य बुझ्न नसकिने तर्क गर्छन् । चारित्रिक दृष्टिले नारीभन्दा पुरुष स्वतन्त्र र स्वच्छन्द हुन्छन् अनि नारीको भाग्य पूर्णतः पुरुषमा निर्भर रहन्छ भन्ने शर्माको निष्कर्ष छ ।

एउटी महिला आज सामान्य गोठाल्नी छे, भने भोलि जर्नेल पुरुषकी स्त्री बन्ने बित्तिकै जर्नेल्ली हुन पुग्छे । यसो हुनुमा अथवा महिलाको भाग्य निर्धारण पुरुषबाट कतिसम्म प्रभावित हुन्छ, त्यो सहजै अनुमान गर्न सकिन्छ । बर्नाड श, टेनिसन आदि साहित्यकारका चर्चित कृतिका नारीपात्रहरू, नेपोलियनकी सम्राज्ञी जोसेफिन, जेरुसेलम डेलिभर्डकी सोफ्रोनिया, क्राइम एण्ड पनिसमेन्टकी सोफिया रिचर्डसन्की पमेला, किंगस्लेकी हेपाटिया आदिको भविष्य पुरुषमा निर्भर रहेको चर्चा गर्दै निबन्धकार शर्माले आफूलाई नारीवादी साहित्यकारको पङ्क्तिमा उभ्याएका छन् । यसरी निबन्धकार शर्माले समसामयिक समाजका घटना र चरित्रका अतिरिक्त साहित्यिक, ऐतिहासिक, पौराणिक पात्रहरूलाई समेत निबन्धको विषयवस्तुभित्र समावेश गरी आफ्ना विचारलाई तथ्यपरक र विश्वसनीय बनाएका छन् ।

## (२) 'कठै मेरो काठमाडौँ !' निबन्ध

कुनै समयमा आफ्नो सपनाको गन्तव्य बनेको काठमाडौँ समयको परिवर्तन सँगसँगै परिवर्तित भएको घटनालाई मूल विषयवस्तु बनाएर 'कठै मेरो काठमाडौँ !' निबन्धमा निबन्धकारले अनेक पक्षमाथि आफ्नो दृष्टिकोण प्रस्तुत गरेका छन् । आफ्नो स्वप्नमहलमा प्रवेश गरेलगत्तै स्वप्नभङ्ग हुनुपर्ने स्थितिमा आइपुगेको तीतो यथार्थलाई निबन्धकारले यस निबन्धको मुख्य विषयवस्तु बनाएका छन् ।

नेपालबाहिर जन्मे-हुर्केका निबन्धकार शर्माले पद्य सङ्ग्रह, ऋतु विचार र मुनामदनको आधारशिलाबाट उठेको काठमाडौँलाई उच्च दृष्टिबाट मूल्याङ्कन गरेका हुन्छन् तर काठमाडौँसँग प्रत्यक्ष साक्षात्कार भएपछि भने उनको स्वप्नभङ्ग हुन्छ । साहित्यिक कृति वा पत्रिकाका माध्यमबाट परैबाट छामेको काठमाडौँ नजिकैबाट छुन पाएपछि भने उनी विरक्तिएका छन् । १०४ वर्षे राणा शासनबाट मुक्त भएपछि नेपालले सुस्त गतिसँगै भए पनि मानिसको सोच-विचार वा मानसिकतामा परिवर्तन देखाउन सक्नुपर्थ्यो तर त्यसो भएन । निबन्धको तेस्रो अनुच्छेदमा नै निबन्धकारले भोलिवादी प्रवृत्तिमा कमी नआएको घटनाक्रमलाई विषयवस्तुका रूपमा उठाएका छन् । कुनै काम विशेषले कार्यालयमा जाँदा कर्मचारीवर्गबाट 'सक्तिनँ, हुँदैन, गर्दिनँ' को पर्यायवाची रूप 'भोलि' लाई प्रयोग गरेबाट उनले कल्पना गरेको काठमाडौँ र भोगेको काठमाडौँमा व्यापक अन्तर पाएका छन् । उनले काठमाडौँलाई देवताहरूको घर

सम्भेको तर काठमाडौं आएपछि लाटो बाहुनले पशुपतिको फूल-प्रसाद भन्दै आफ्नो गमलामा फुलाएको फूल चुँडेर उल्टै आफैँलाई दिएको घटनाको स्मरण पनि गरेका छन् ।

प्रजातन्त्र आएपछि आधुनिकताको मोहले यहाँका मानिसले सहजता र प्राकृतिकतालाई बिसिँएको प्रसङ्ग पनि निबन्धको विषयवस्तुका रूपमा आएको छ । त्यति मात्र नभएर मानिसको मृत्युमा पनि मानिस संवेदनशील हुन नसकेको अनुभूति निबन्धकारले गरेका छन् । छिमेकीको मृत्युमा समेत मानिस आफ्नो दायित्व बिसर्न सक्दोरहेछ भन्ने उनले काठमाडौं आएपछि नै थाहा पाएका छन् । आफूले पढाउँदै गरेकी विद्यार्थीले “उनीहरूका गुठियार आइहाल्छन् नि” भनेर दिएको जवाफले निबन्धकारको मनमा च्वास काँडा बिभाएजस्तो भएको छ । खेतीयोग्य उर्वर जमिन मासेर गगनचुम्बी महल निर्माण गर्ने सपना देख्न थालेको काठमाडौंले कुनै दिन कलकत्ता वा सिंगापुरबाट टिनका डब्बामा सागसब्जी मगाउनुपर्ने स्थिति नआउला भन्न सकिँदैन भन्दै निबन्धकार शर्माले आफ्नो प्राचीनता, सभ्यता र दायित्व बिसर्न नहुने बताएका छन् ।

#### ४.२.१.२ पौराणिक आत्मपरक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा पौराणिक आत्मपरक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रह भित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका पौराणिक आत्मपरक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### (१) ‘बुद्ध, राधाकृष्णन् र फुचा’ निबन्ध

गौतम बुद्धको जन्म, ज्ञान प्राप्ति र मृत्युबारे समाजमा हुने गरेका बहस अथवा वैचारिक भिन्नतालाई निबन्धकारले प्रस्तुत निबन्धमा मुख्य विषयवस्तु बनाएका छन् । सामान्य छलफल कार्यक्रमका सहभागीहरूका अतिरिक्त भारतीय विद्वान् राधाकृष्णन्सम्मले बुद्धका विषयमा दिएका वा उठाएका विचारहरूको विश्लेषण निबन्धकारले गरेका छन् ।

कलकत्तामा सरकारी जागिरेका रूपमा रहेका बेला एक पत्रिकामा आफूले गौतम बुद्धका विषयमा लेख प्रकाशन गरेपछि कार्यालयका हाकिमले लिएको स्पष्टीकरणबाट निबन्धकारले

विषयको उठान गरेका छन् । आफूले ऐतिहासिक तथ्यलाई आधार बनाएको तर्क पेस गर्दा पनि हाकिमबाट खप्की खानुपरेको घटनाको उनले स्मरण गरेका छन् । अध्ययनशील व्यक्ति, विद्वान्, इतिहासज्ञ वा दार्शनिकहरू पनि कहिलेकाहीं राष्ट्रियताका सङ्कीर्ण घेराबाट माथि उठ्न नसकी धोती तानातान गरी खुम्चिएको देख्दा निबन्धकार शर्मा दिक्क छन् ।

निबन्धकार शर्मा गौतम बुद्धलाई विवादको विषय बनाउन चाहँदैनन् । उनका विचारमा महान् पुरुषको राष्ट्रियता हुँदैन । महान् व्यक्तिहरू कुनै देश, जाति, धर्म र सम्प्रदायभन्दा धेरै माथि हुन्छन् र उनीहरूको परिचयलाई खुम्च्याउनु अशोभनीय हुने तर्क निबन्धकारको छ । बुद्ध जस्तै जीसस, कन्फुसियस, गान्धी, लिङ्कन आदिलाई विश्वकै महान् पुरुषको श्रेणीमा राख्नुपर्ने उनको विचार छ । राष्ट्रियताका सङ्कीर्ण आँखाले हेर्दा ताजमहल, कोलम्बस पनि विवादमा मुछिएको उनले चर्चा गरेका छन् ।

भारतीय विद्वान् राधाकृष्णन्ले भारतीय भूमिमा महावीर र बुद्ध भएकामा गर्व गरेको विषयप्रति निबन्धकार शर्माले आफूलाई फुचाकै रूपमा चिनाउँदै बुद्ध सम्बन्धी आफ्ना गहन तर्क अघि सारेका छन् । यस सिलसिलामा उनले हिन्दु धर्म र बौद्ध धर्मको प्राचीनतालाई समेत खोतल्ने प्रयास गरेका छन् । बुद्धको जन्म, गृहत्याग, त्यस समयको राज्यव्यवस्था बुद्धको तपस्या, ज्ञानप्राप्ति, ज्ञानको प्रचार, भ्रमण र मृत्युसम्मका घटनालाई उनले सूक्ष्म रूपमा केलाएका छन् । बुद्धको जीवन, ज्ञानप्राप्ति र मृत्युसमेत विवादित रहेको बताउँदै निबन्धकारले यसको समाधान विद्वान्हरूबाट हुनुपर्ने निष्कर्ष निकालेका छन् ।

## (२) मेरो रामायण : एक ट्रेजेडी !' निबन्ध

संस्कृत साहित्यका आदिकवि वाल्मीकिद्वारा रचित भनिएको रामायणका पात्र, घटना वा सन्दर्भलाई निबन्धकार शर्माले 'मेरो रामायण : एक ट्रेजेडी !' को विषयवस्तु बनाएका छन् । पूर्वीय साहित्यको आदर्श ग्रन्थ मानिने रामायणलाई वैज्ञानिक र व्यावहारिक दृष्टिबाट हेर्दा त्यसभित्र देखिने कमी-कमजोरी, रहस्यमय घटना अनि अतियथार्थतालाई उनले निबन्धको विषयका रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

आफ्ना प्राणप्रिय पतिको दुर्व्यवहार सहन नसकेर सीताले आत्महत्या गरेको घटना, परम पूज्य दाजुको व्यवहारबाट दुःखी भई लक्ष्मणले गरेको आत्महत्या अनि यी दुवैको वियोग सहन नसकेर रामले पनि आत्महत्या गरेको भन्न रुचाउने निबन्धकारले वाल्मीकिको कलमको चमत्कारबाट भिन्न प्रस्तुति देखिएको बताउँछन् ।

रामायणको कथावस्तुमा आधारित यस निबन्धमा निबन्धकारले स-साना घटनामाथि सूक्ष्म रूपले विश्लेषण गरी तर्क दिएका छन् । विभिन्न कोणबाट रामायणका घटनालाई निबन्धको विषयवस्तुमा समेटेका छन् । रावणको शक्ति र पछि भोगेको पराजय; उसका हारका कारणहरू; रामको लक्ष्य र युद्धमोह; राम र रावणको कूटनीति; शूर्पणखा युद्धको प्रारम्भबिन्दुका रूपमा आएको घटना; सीतालाई युद्धबन्दीका रूपमा राखिएको घटना; रावणका राज्यमा मन्दोदरीको निरीहता; आदर्श पुरुष भनिएका रामबाट पत्नी सीता र भाइ लक्ष्मणलाई गरेको दुर्व्यवहार; राम, लक्ष्मण र सीताको अन्त्य आदि विषयमा निबन्धकारले वैज्ञानिक र तार्किक दृष्टिकोण राखेका छन् ।

बालि र सुग्रीव, रावण र विभीषण जस्ता दाजुभाइका बीचमा उत्पन्न कटुतालाई माध्यम बनाएर रामले विरोधीहरूको शक्तिलाई क्षीण बनाउन सफल भएको निबन्धकारले उल्लेख गरेका छन् । हिटलर, नेपोलियन र अलेक्जेंडर भन्ने विश्वविजयको सपना देख्ने पहिलो एसियाली साम्राज्यवादी रावण भएको उनी बताउँछन् । त्यस्तो शक्तिशाली रावणलाई पराजित गर्न रामले कुन शक्तिलाई हातमा लिए सजिलो हुन्छ भन्ने चिन्तन, मनन र विश्लेषण गरी कदम चालेकाले निबन्धकार रामलाई कुशल राजनीतिज्ञ ठान्दछन् तर आफ्नै परिवारभित्र रामले कृतघ्न व्यवहार प्रदर्शन गरेको भन्न पनि उनी हिचकिचाउँदैनन् । दाजु र भाउजूका निम्ति प्राणको बाजी लगाएर रावणसँग भिड्ने लक्ष्मणलाई सानो गल्ती गर्दैमा रामले मार्न उद्यत भएको घटनाबाट रामको आलोचना गर्न पुग्छन् । आफ्नी गर्भिणी पत्नीलाई तथाकथित धोबीको कुराको पछि लागेर गृहत्याग गर्न बाध्य तुल्याउनु जस्ता घटनाबाट रामको प्रतिष्ठामा पूरै हास आएको उनी भन्दछन् ।

राम एक आदर्श साहसी, कर्तव्यपरायण पात्र हुँदाहुँदै पनि केही गम्भीर प्रकृतिका अथवा अक्षम्य गल्ती गर्न पुग्दछन् र भाइ लक्ष्मण, धर्मपत्नी सीता र आफ्नै पनि कारुणिक अवसानका कारण बन्दछन् भन्ने मूल विषयवस्तु प्रस्तुत निबन्धमा रहेको छ ।

### ४.२.१.३ सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा सांस्कृतिक आत्मपरक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### (१) 'बिना जनैको बाहुन' निबन्ध

ब्राह्मणहरूले धारण गर्ने यज्ञोपवीत वा जनै वर्तमान समयमा कतिको सान्दर्भिक छ भन्ने मूल विषयवस्तु रहेको 'बिना जनैको बाहुन' निबन्धले जनैको उपादेयतामाथि प्रश्न उठाएको छ । कुनै पनि विषय वा वस्तुको उपयोगिता, त्यसको वैज्ञानिकता आदिमा विचार नगरे त्यो खोक्रो वा आडम्बरयुक्त हुन जान्छ भन्ने मूल विषयवस्तुमा निबन्ध केन्द्रित छ ।

१५-१६ वर्ष अघि उदय पत्रिकामा प्रकाशित कुनै एउटा लेखमा लेखकको नामका स्थानमा वास्तविक नामको सट्टा 'बिना जनैको बाहुन' लेखिएको देखेपछि निबन्धकारलाई हाँसो उठेको प्रसङ्गबाट निबन्धको विषयको उठान गरिएको छ । बाहुनको छोर्रो भएपछि अनिवार्य रूपमा जनै लगाउनै पर्ने बाध्यात्मक अवस्थाप्रति निबन्धकारले विरोध जनाएका छन् । आफ्ना परिवारका सदस्यका अतिरिक्त घरमा आउने पाहुना, पुरोहित, पण्डितहरूले समेत आफ्नो जनैविरोधी विचारमा हस्तक्षेप गरेकामा उनी सन्तुष्ट देखिँदैनन् । जनै नलाउने नास्तिकका घरमा पाठै नगर्ने अड्डी पण्डितले लिएपछि आफूले जनै लाएर माफीसमेत माग्नुपरेको घटना उनी स्मरण गर्दछन् । निबन्धकार शर्माले जनै सधैं लगाएको तर खोलामा नुहाउँदा बगाएको भनेर असत्यको सहारा लिएको तीतो घटना पनि निबन्धमा उल्लेख गरेका छन् ।

निबन्धकार शर्माले जनैको प्राचीनता र वैज्ञानिकतातर्फ पनि चर्चा गरेका छन् । उहिले कपडा बुन्ने चलन नभएको; मृगचर्मलाई वस्त्रका रूपमा धारण गरिएको; भारतीय जलवायु गरम भएकाले सधैंभरि मृगचर्म धारण गर्न असम्भव भएको; पछि कपडा बुन्न जानेपछि विकल्पका रूपमा कपडा ओढ्न छुट दिएको र त्यसको सट्टा धागोलाई जनै बनाएर वस्त्रको प्रतीकका रूपमा प्रयोग गरिएको वैज्ञानिक तर्क उनले अघि सारेका छन् ।

यसरी निबन्धमा जनैको सान्दर्भिकताको खोजी गरिएको छ । कलेज पढ्दा साथीहरूले आफ्नो कन्तुर जोगाउन जनैलाई साँचो बाँध्ने साधन बनाएको घटनालाई सम्झँदै उनले खोक्रो आडम्बर र अन्ध परम्पराको धज्जी उडाएका छन् ।

## (२) 'को आउँछ मेरो जात खोस्न ?' निबन्ध

धेरै पहिलेदेखि समाजमा देखिँदै आएको धार्मिक, सामाजिक, वर्गीय र वर्णगत विभेदलाई निबन्धकार शर्माले यस निबन्धको विषयवस्तु बनाएका छन् । यही विभेदका कारण समाजमा थिचोमिचो र शोषण बढेको, कतिपय राष्ट्र टुक्रिने अवस्थामा पुगेको घटनालाई उनले निबन्धको विषयवस्तु बनाएका छन् ।

वर्षौँअघि काठमाडौँको सडकमा आफ्नो साथीसँग हिडिरहेका बेलामा एकजना कथित तल्लो जातका बूढा मान्छेले आफ्नो गोडा समाएको घटना स्मरण गर्दै निबन्धकारले विषयवस्तुको उठान गरेका छन् । त्यस समय आफूलाई लागेको लाज वा सड्कोच सम्झँदै निबन्धकारले जातिगत, धार्मिक, वर्णगत र वर्गीय विभेदले ल्याएका समस्याहरूलाई निबन्धको विषयवस्तुका रूपमा समेटेका छन् ।

समयानुसार जातीय भेदभावको असर केही फिक्का भए जस्तो देखिए पनि पूर्णतया यसको अन्त्य नहुने उनी बताउँछन् । आजको समाजमा सामाजिक उच्चताको प्रदर्शनमा कमी नआएको उनको विचार छ । ठूलै हुनका निम्ति सरकारी सेवाप्रति बढ्दो आकर्षण रहेको; अझ त्यसमा पनि विशिष्ट श्रेणीको जागिरमा मानिसको आँखा गाडिएको निबन्धकारको तर्क छ । धनी वर्ग र गरिब वर्गको भेदले जातीय विभेदलाई पनि ओभेलमा पारेको तर्क उनी गर्दछन् । धर्मको

धाक घटे पनि धनको धाक घटेको छैन भन्दै निबन्धकारले अन्तरजातीय विवाहको उदाहरण दिएका छन् । विशिष्ट श्रेणीका व्यक्तिहरूको जमघट वा भोजभतेरमा तल्लो श्रेणीका व्यक्तिको उपस्थिति आज त्यति नै उदेकलाग्दो बन्दै गएको घटनाप्रति उनी व्यङ्ग्य गर्दछन् । पौराणिक कालमा पनि जातीय उच्चताका निम्ति क्षेत्री विश्वामित्र तपोबलका माध्यमबाट बाहुन हुन खोजेको घटना उनी स्मरण गर्दछन् । काला र गोराका बीचमा देखिएको असमानताले विश्वव्यापी असर पारेको निबन्धकार चर्चा गर्दछन् । सामाजिक उच्चताको आडम्बर देखाउन आफ्नो सामान्य रहनसहन शैलीलाई परिवर्तन गर्न आफन्तहरूबाट आएको दबावलाई पनि निबन्धकारले विषय बनाएका छन् ।

यसरी निबन्धकार शर्माले नेपालका सामाजिक, धार्मिक, वर्गीय विभेदका साथै अन्तर्राष्ट्रिय रूपमा चर्चामा रहेका धार्मिक, वर्गगत र वर्णगत विभेदबाट देखिएको असमानता अनि त्यसको असरलाई निबन्धको विषयवस्तु बनाएका छन् ।

#### ४.२.१.४ नारी समस्यामूलक आत्मपरक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा नारी समस्यामूलक आत्मपरक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका नारीका समस्यालाई बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका नारी समस्यामूलक आत्मपरक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### (१) 'एक गन्थन, एक गुनासो' निबन्ध

'नेपालमा नारी समस्या' शीर्षकमा रेडियो नेपालको नारी कार्यक्रमअन्तर्गत प्रसारित विश्लेषणात्मक विचार सुनिसकेपछि त्यसको खण्डनलाई निबन्धकार शर्माले मूल विषयवस्तु बनाएका छन् । उक्त रेडियो कार्यक्रममा नेपाली समाजले नारीलाई लत्याएको, वैदिक युगमा नारी स्वतन्त्रता भएको तर अहिले बालविवाह, बहुविवाह जस्ता कुप्रथाहरू समाजमा रहेको; सीता, द्रौपदी, कुन्ती जस्ता नारीहरूलाई आदर्श मानिएको विचारप्रति निबन्धकार शर्माले आफ्ना तर्कका माध्यमबाट खण्डन गरेका छन् ।

अन्यत्रभन्दा नेपाली समाजमा नारी स्वतन्त्रता बढी भएको भन्ने आफ्ना विचारलाई स्थापित गर्न निबन्धकार शर्माले वैदिक समाजदेखि लिएर शास्त्रीय मान्यताका साथै आफ्ना सटीक तर्क प्रस्तुत गरेका छन् । रेडियो कार्यक्रममा वैदिक युगमा नारी स्वतन्त्रता भएको भन्ने विचारलाई खण्डन गर्दै उक्त समयमा भएका दासीहरूको अवस्था सामन्ती समाजको दमन, द्युतप्रथा, घुम्तो प्रथा, गणिकाहरूको उल्लेख गर्दै वर्तमान समय नारी स्वतन्त्रताको उत्कृष्ट समय रहेको निबन्धकार तर्क गर्छन् । आफूले सुनेको रेडियो नेपालको 'नारी कार्यक्रम'मा २००७ सालअघि नेपालमा नारीहरूलाई हिँड्ने, बोल्ने स्वतन्त्रता पनि नभएको अनि शिक्षा पनि लोग्ने मानिसहरूको पेवा भएको भन्ने विचारप्रति निबन्धकार शर्माले तीव्र असन्तुष्टि पोखेका छन् । राणाकालमा देशभरिमा एउटा कलेज र दुई तीनवटा हाइस्कूल रहेका र पुरुषहरू पनि शिक्षा र स्वतन्त्रताबाट समान रूपमा वञ्चित रहेको वस्तुतथ्यलाई निबन्धकारले उजागर गरेका छन् । पौराणिक पात्र सीता र पाँचै भाइलाई पालैपालो लोग्ने बनाउन धक नमान्ने द्रौपदीलाई कसरी आदर्श मान्न सकिन्छ ? भन्दै उनले कुन्तीका विषयमा त प्रसङ्ग नै उठाउन चाहेका छैनन् ।

यसरी, कुनै पनि विषयमा आफ्ना धारणा वा विचारलाई सार्वजनिक गर्दा उक्त विषयको इतिहास, सत्यता र धरातलीय यथार्थलाई बिर्सन मिल्दैन भन्ने मूल कथ्य रहेको प्रस्तुत निबन्धको विषयवस्तु स्तरीय बन्न पुगेको छ ।

## (२) 'ती अज्ञात अबलालाई खुलापत्र' निबन्ध

वि.सं. २००१ साल वैशाख १३ गतेको गोरखापत्रमा एक अपरिचित रेनुका नाम गरेकी युवतीले विदेशीसित विवाह गराइएको कुरालाई लिएर लेखेको गुनासो पत्रलाई आधार बनाएर यो निबन्धको रचना भएको छ । आफ्नै बुवाआमाद्वारा भारतीय नागरिकसँग विवाह गराएपछि युवतीका मनमा वेदनाजन्य भाव उत्पन्न भएको; युवतीले गोरखापत्रका सम्पादकलाई चिठी पठाएको र निबन्धकार शर्माले ती युवतीका विचारप्रति समर्थन अनि सहानुभूति प्रकट गरेको विषयमा प्रस्तुत निबन्ध केन्द्रित छ ।

निबन्धकारले विदेशीसँग नेपाली युवतीको विवाह हुने केही कारणहरू अनि त्यसबाट उत्पन्न हुन सक्ने प्रभावलाई पनि निबन्धको विषयवस्तु बनाएका छन् । कतिपय युवतीहरू

आफूखुसी विदेशीसँग विवाह गरेर जान्छन् भने कतिपय जाली फटाहाहरूबाट बहकाइएर बेचिन्छन् भन्ने निबन्धकारको विचार छ । चुच्चे टोपी र शेरवानी लाएका व्यक्तिलाई आफ्नो ज्वाइँ बनाउन गर्व गर्ने बाबुआमाको गलत मानसिकताबाट पनि कतिपय नेपाली युवती पीडित बहारीका रूपमा या त वेश्याका रूपमा नारकीय यातना भेल्लेन विवश हुन्छन् भन्ने कटु यथार्थलाई निबन्धकार शर्माले औँल्याएका छन् । जुनसुकै परिस्थितिले विदेशीए पनि उनीहरूको अवस्था हेपिएको, लतिएको नै हुन्छ भन्ने निबन्धकारको ठम्याइ छ । नेपाली बाबुआमाहरू योग्य वर खोज्दै कलकत्ता र बम्बई धाइरहेका छन्; त्यसको प्रभाव स्वरूप नेपाली चेलीहरू प्रताडित हुने क्रम रोकिएको छैन भन्ने निबन्धकारको विचार छ ।

युवतीले सम्पादकलाई लेखेको पत्रमा “तपाईंहरू आफ्नै मुलुकमा आफ्नै राजाका छत्रछायाँमा बस्न पाएर भाग्यशाली बन्नुभयो” भनेर उल्लेख गरेकामा निबन्धकारले ती युवती सताइएकी बहारी मात्र नभएर धोका खाएकी राष्ट्रप्रेमी पनि हुन् भन्ने विचार राखेका छन् । बेचिएकी चेलीलाई उद्धार गर्न कुनै बेला खड्गबहादुर विष्ट नाम गरेका साहसी व्यक्तिले खुकुरी चलाएर मारवाडीलाई मारेको घटना पनि निबन्धको विषयवस्तु बनेर आएको छ ।

यसरी निबन्धकार शर्माले विदेशमा अपमानित भएर बाँच्न विवश नेपाली चेलीलाई भावुकताको प्रदर्शन गर्दै आफ्ना मनमा परेको प्रभावलाई हार्दिक र बौद्धिक तर्कद्वारा स्पष्ट पार्न खोजेको छन् ।

#### ४.२.२. संस्मरणात्मक निबन्धहरू

नगेन्द्र शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा संस्मरणात्मक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका विविध समस्यालाई बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका संस्मरणात्मक निबन्ध ‘म र मेरो बिहे’ निबन्धको विश्लेषण यसप्रकार गरिएको छ :

“बिहे गयो जसले, दुःखमा भासियो” भन्न खोज्ने कुनै निराशावादी कविको प्रभावमा पर्न लागेका निबन्धकारले बिहेलाई खासै महत्त्व नदिएकामा एक दिन खुट्टो मर्किएपछि स्याहार

गर्ने वा पानीसम्म खुवाइदिने कोही नभएपछि, श्रीमतीको महत्त्व बुझेको घटनालाई मूल विषयवस्तु बनाएर 'म र मेरो बिहे' निबन्धको रचना भएको छ। बिहेको महत्त्व, बिहे गर्ने विविध तरिका, त्यसका विविध पक्षलाई यस निबन्धको विषयवस्तुमा समेटिएको छ।

गोकर्णको वनमा बायाँ कुर्कुच्चाको जोर्नी फुस्किएपछि, साथीहरूले मोटरमा राखेर नयाँ सडकको चार तलामाथिको आफ्नो कोठामा छाडेर जाँदा एक्लैएका निबन्धकारले त्यसपछि विवाहका विषयमा सोच्न थालेका छन्। आफ्ना समवयी साथीहरूका छोराछोरी हुर्किएका, कलेज पढ्न थालेका बेला घर परिवार, आफन्त, साथीहरूबाट विवाहका निम्ति सल्लाह दिएको, कर गरेको घटना पनि यस निबन्धको विषय बनेर आएका छन्। ८० वर्षीय अविवाहित विधान राय, ६५ वर्षीय कृष्ण मेनन आदिलाई बिहे नगरी पनि भएकै छ भनेर सोच्ने निबन्धकारले पछि भने बिहे गर्न ढिलो भएको महसुस गरेका छन्।

मानिसको विवाह आडम्बरयुक्त, कर्मकाण्डी परम्पराको हुनुभन्दा आत्माको मिलन वा स्वीकारोक्ति महत्त्वपूर्ण हुन्छ भन्ने निबन्धकारले नेपाली विविध संस्कृतिका बीच मौलाएको चोरी विवाह, जुवारी गीत गाउँदा-गाउँदै मन मिल्ने परम्परालाई पनि स्मरण गरेका छन्। हिन्दू, मुसलमान, इसाई धर्मका विवाह परिपाटी पनि निबन्धका विषयवस्तु बनेर आएका छन्।

यसरी विवाह गर्नु भनेको दाम्लो बाँध्नु हो भन्ने आफ्नो पुरानो सोचाइ क्रमशः परिवर्तन हुँदै "म दाम्लो बाँध्छु" भन्ने दिन आउन सक्छ भन्दै निबन्धकार "जो एक्लो हिँड्छ, उही चाँडो हिँड्छ" भन्ने भनाइ आफ्ना निम्ति असान्दर्भिक हुन सक्ने कुरामा सकारात्मक देखिएका छन्।

### ४.२.३. समीक्षात्मक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा समीक्षात्मक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन्। यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका समीक्षाका विविध पाटालाई बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन्। प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका समीक्षात्मक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

### ४.२.३.१. व्यक्ति समीक्षात्मक

नगेन्द्र शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा व्यक्ति समीक्षात्मक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले व्यक्ति समीक्षाका विविध पाटालाई बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका व्यक्ति समीक्षात्मक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### (१) देवकोटाले राखेका कोस-ढुङ्गा' निबन्ध

महाकवि लक्ष्मीप्रसाद देवकोटाले नेपाली साहित्यका क्षेत्रमा पुऱ्याएको योगदानलाई केही व्यक्ति वा समूहले अनावश्यक रूपले बढाइ-चढाइ गरी वास्तविकतालाई ढाकछोप गर्न खोजेको विषयमा प्रस्तुत निबन्ध केन्द्रित छ । देवकोटालाई महान् देखाउन असत्य र अनावश्यक प्रचारबाजी गर्नु उचित नहुने सत्यतालाई निबन्धको विषयवस्तु बनाइएको छ ।

थोरै समयमा धेरै कृति दिएर जाने देवकोटाको 'रेकर्ड' कसैले तोड्न सकेको छैन भनेर देवकोटाका पक्षधरहरूले हचुवाका भरमा देवकोटालाई विवादित बनाउन खोजेको निबन्धकारको ठम्याइ छ । देवकोटा महान् साहित्यकार हुन् भन्ने विषयमा निबन्धकारको पनि विमति छैन । मुनामदनमा देवकोटाले कायम गरेको श्रेष्ठता कुञ्जनीमा धमिलिएर गएको; कवितामा किट्सको गन्ध महसुस गर्न सकिने; शाकुन्तलका क्लिष्ट पङ्क्तिलाई बिर्सेर स्वादु पङ्क्तिको पगरी गुथाएको प्रसङ्गलाई निबन्धकार शर्माले निबन्धको विषयवस्तुमा समेटेका छन् । देवकोटाका कवितामा निजत्व छ, मर्म छ भन्ने विषयमा शङ्का छैन तर हाम्रा नजरमा आज चमचम चम्केका देवकोटा बीस-पच्चीस वा पचास वर्षपछिको नेपाल र नेपालीका दृष्टिमा पनि यसै गरी चम्किरहन्छन् भन्ने कुरालाई हामीले बिर्सन हुँदैन भन्ने निबन्धकार शर्माको विचार छ ।

अतः एक्काइसौं शताब्दीका नयाँ सत्यहरू; नयाँ आस्थाहरूले प्रेरित नौलो धारा-प्रवाहमा बग्न लागेको नेपाली र विश्व साहित्यको दश-बीस वर्षपछिको अडान स्थानबाट पछि फर्केर हेर्दा देवकोटाले राखेको कोस-ढुङ्गा फेला पार्न निकै आँखा खुच्याउनुपर्ने विचारलाई निबन्धकार शर्माले यस निबन्धमा स्पष्ट पारेका छन् ।

## (२) 'काजी नजरुल इस्लाम : एक परिचय' निबन्ध

बङ्गाली कवि काजी नजरुल इस्लामको क्रान्तिकारी कवि परिचयलाई यस निबन्धको मुख्य विषयवस्तु बनाइएको छ । अङ्ग्रेजद्वारा शासित भारतमा जन्मेर फौजमा भर्ना भई युद्धमा जाँदा या त्यसपछि घर फर्कँदा पनि कवि नजरुलको क्रान्तिकारी विचारमा कुनै परिवर्तन नआएको घटना नै यस निबन्धको मुख्य विषयवस्तु बनेर आएको छ ।

७ वर्षको उमेरमा बाबुआमाविहीन भएका कवि नजरुलले १० कक्षासम्म मात्र अध्ययन गर्न पाएका थिए भन्ने जानकारी दिँदै निबन्धकार शर्माले काजी नजरुल १७ वर्षको उमेरमा भारतीय फौजमा भर्ना भई इराकसम्म युद्ध गर्न गए पनि उनको कवि हृदयमा खासै परिवर्तन नआएको बताएका छन् । अङ्ग्रेजको शासनमा भएका अत्याचार र उत्पीडनका विरुद्धमा क्रान्तिकारी कविता लेखी युवापुस्तामा जोस र ऊर्जा भर्न सफल कवि नजरुल वास्तवमै क्रान्तिकारी थिए भन्दै निबन्धकार शर्माले कविद्वारा लिखित कवितासमेत निबन्धमा राखेका छन् । अङ्ग्रेजका आँखी भएका काजी नजरुलले जेलमा पनि कविताको रचना गरेका; पेटपालोका निमित्त सिनेमाका गीतहरू पनि लेखेका घटनाहरू यस निबन्धको विषयवस्तु बनेर आएका छन् ।

सरकारी दमन, अत्याचार, गरिबी, सङ्घर्ष इत्यादिले कवि नजरुललाई पारेको प्रभाव; अविचलित भएर कविले गरेको साधना नै यस निबन्धको मुख्य विषयवस्तु हो ।

## ४.२.३.२. भाषा व्याकरण समीक्षात्मक

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा व्याकरण समीक्षात्मक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका व्याकरण समीक्षात्मक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ

## (१) 'उखेल्लुपर्ने उखानहरू' निबन्ध

हाम्रा पितापुर्खाका पालादेखि चलिआएका र स्थापित उखानतुक्काहरूले तत्कालीन समयमा जे-जस्तो प्रभाव पारे पनि वर्तमानमा आएर सामाजिक द्वेष, कलह नबढाओस् भन्ने हेतुले ती उखानहरूको सान्दर्भिकतालाई निबन्धको विषयवस्तु बनाइएको छ ।

निबन्धकार शर्माका कुनै एकजना साथीले 'तुसारो परेको' प्रसङ्ग चलाउँदा निबन्धकारले 'तुसारो पर्ने कुरो हो वा जम्ने कुरो' भनेर सम्झाएका; साथीले 'भन्ने बानी लागेकाले' भनेपछि 'बैँस जान्छ, बानी जाँदैन' भन्ने उखानबाट यस निबन्धको विषयवस्तुको उठान गरिएको छ । हाम्रा पितापुर्खाले यस्ता उखान-तुक्काहरूको प्रयोग गरी हाम्रो भाषालाई समृद्ध, सरल, श्रुतिमधुर बनाए पनि समय-क्रमले कतिपय उखानहरू असान्दर्भिक, अमर्यादित र विद्वेष बढाउने खालका भएका छन् भन्दै निबन्धकार शर्मा त्यस्ता उखान-तुक्काहरूको प्रयोग गर्दा सोच्नुपर्ने भएको बताउँछन् । बूढापाकाले सोचेरै त्यस्ता उखानहरू निर्माण गरे होलान् भन्दा 'बूढापाकाले कुरा बिराउँछन्, ढुङ्गा-मूढाले बाटो बिगाउँछन्', भन्ने उखान निबन्धकार स्मरण गर्छन् । 'नेवार इष्ट हुँदैन', 'बाहुन क्षेत्रीको कोखामा दाँत', 'कामी ढरा, दमाई स्वाड' जस्ता उखानहरूले सोभै कुनै व्यक्ति वा जातिप्रति लक्षित गर्ने हुँदा त्यस्ता उखानहरूको प्रयोग गर्नु उचित नहुने निबन्धकारको विचार छ ।

अतः हाम्रा परम्परागत अभ्यासहरूलाई नयाँ पुस्ताले निरन्तरता दिँदा त्यसले कुनै व्यक्ति, जाति वा समाजमा पार्न सक्ने प्रभावलाई विचार गर्नुपर्ने हुन आउँछ भन्ने विषयलाई निबन्धमा स्पष्ट पारिएको छ ।

## (२) 'अ, आ....' निबन्ध

'अ, आ....' निबन्धका दुई उपशीर्षक अन्तर्गत 'अ-बाट अस्तित्ववाद' र 'आ-बाट आयाम (तेस्रो ?)' मा अस्तित्ववाद र आयामेली आन्दोलनका अन्तरवस्तुलाई निबन्धको विषयवस्तु बनाइएको छ । अस्तित्ववाद र आयामेली आन्दोलनका बारेमा जे-जस्तो व्याख्या र परिभाषा गरिए पनि त्यसका विषयमा उत्पन्न निबन्धकार शर्माको फरक धारणालाई यस निबन्धको विषयवस्तु बनाइएको छ ।

यस निबन्धको पहिलो उपशीर्षक अन्तर्गतको 'अ-बाट अस्तित्ववाद'मा निबन्धकारले अस्तित्ववादी चिन्तनलाई गहिरिएर हेर्ने प्रयास गरेका छन् । आफूले बुझे अनुसार आधुनिक अस्तित्ववादमा देखिएको आधुनिकता वास्तवमै आधुनिक नभएर नयाँ सिरीको ढप मात्र हो भन्ने उनको धारणा छ । निबन्धकार शर्माका विचारमा अस्तित्ववादको प्रतिपादनका बारेमा

पश्चिमाहरूले आफूलाई प्रचारवाजीमा अगाडि सारेका मात्र हुन् । हाम्रा पुर्खाहरूले उहिल्यै 'संसार माया हो' भनेका; उहिलेका सनातनीहरूले 'यो पनि होइन, ऊ पनि होइन' भनेर 'नेति नेति' भित्र जे विचार राखेका छन्, त्यो आजको अस्तित्ववादको 'नथिड नेस्'सँग टक्कर लिन समर्थ छन् भन्ने उनको ठम्याइ छ । फ्रान्ज काफ्काको सिद्धान्तभन्दा भीष्म पितामहको इच्छामृत्युभित्र उनी अस्तित्ववाद देख्छन् । द सादे, सार्त्र, बेकेट आदिका सिद्धान्तले पनि केही खालो सार्न नसक्ने विचार निबन्धकारले राखेका छन् । पाश्चात्य अस्तित्ववादी लेखक मोराभियाको 'ब्याक टु द सी'का नायक लोरेन्जोको पश्चात्तापभन्दा सीतालाई परित्याग गरेपछिका रामको पश्चात्ताप उनलाई महान् लाग्छ ।

यस निबन्धको दोस्रो उपशीर्षकअन्तर्गतको 'आ-वाट आयाम (तेस्रो ?)' मा निबन्धकारले आयामलाई फरक-फरक अर्थमा बुझाइएको प्रसङ्गलाई विषयवस्तु बनाएका छन् । कुनै सङ्ख्यालाई गुणन गरेर शक्ति बढाइने अर्थमा विज्ञानले गरेका आयामको परिभाषा र नापको दिशा जनाउने चित्रकलाको आयाममध्ये पछिल्लोलाई आधार मानेर गहिराइ देखाउने आयामलाई साहित्यमा उपयोग गरिएको हो । बैरागी काइँलाका दृष्टिमा तेस्रो आयामले बौद्धिक र दार्शनिक गहिराइलाई स्विकारेर हृदयलाई ठाउँ नदिएपछि काम कुरो बिग्रिएको निबन्धकारको विचार छ । यसरी अस्तित्ववाद र तेस्रो आयामका विभिन्न पक्षहरूलाई निबन्धकारले तर्कका माध्यमबाट यस निबन्धमा पुष्टि गरेका छन् ।

### (३) 'व्याकरणका बुँदा' निबन्ध

नेपाली भाषामा लेख्य परम्पराको विकास धेरै अघिदेखि भइसके पनि यसको मानक वा स्तरीय व्याकरण निर्माण नहुँदा पर्न गएको असरलाई यस निबन्धको मुख्य विषयवस्तु बनाइएको छ । व्यक्तिपिच्छे नेपाली व्याकरणका सन्दर्भमा फरक-फरक विचारहरू आउनाले सर्वसाधारणमा देखिएको दुविधा नै यस निबन्धको विषयवस्तु हो ।

निबन्धकार नगेन्द्र शर्माद्वारा लेखिएको कुनै रचनामा कुनै महिलाद्वारा गरिएको टिप्पणीको प्रत्युत्तर स्वरूप यस निबन्धको रचना भएको छ । निबन्धकार शर्माले प्रयोग गरेका व्याकरणिक नियमप्रति विमति जनाउँदै कुनै महिलाले सच्याउनुपर्ने धारणा प्रकट गरेपछि तिनै महिलालाई

‘मायालु बहिनी मेरी’को सम्बोधनबाट यस निबन्धको उठान भएको छ । जिउँदो भाषाको व्याकरणका नियमहरू बनाउन त्यति सहज नहुने चर्चा गर्दै निबन्धकारले अन्य भाषामा उठेका विवादहरूलाई पनि यस निबन्धको विषयवस्तुमा समेटेका छन् । नेपाली भाषाको शुद्धताका विषयमा अघिल्ला पिँढीका भाषाप्रेमीहरूले कपाल दुखाउँदै आए पनि भाषाको मानक निर्धारणमा विवाद देखिँदै आएको उनले उल्लेख गरेका छन् ।

भाषाविद् महानन्द सापकोटा, पुष्करशमशेर, पारसमणि प्रधान जस्ता विद्वान्हरूले नेपाली भाषामा पुऱ्याएको योगदानलाई पनि यस निबन्धमा स्मरण गरिएको छ । हृदयचन्द्रसिंह प्रधान, भानुभक्त र रघुनाथ जस्ता साहित्यकारहरूले प्रयोग गरेको नेपाली भाषाको फरक-फरक स्वरूपलाई पनि निबन्धमा चर्चा गरिएको छ । भारतीय विद्वान् रवीन्द्रनाथ, डा. सुनीतिकुमार चटर्जी, कालिदास राय आदिले आफ्नो भाषाका बारेमा दिएका विचारहरू र उनीहरूले प्रयोग गरेको सन्दर्भलाई पनि निबन्धमा उठाइएको छ ।

अतः नेपाली भाषामा व्याकरणिक नियमका सम्बन्धमा एकरूपता नहुनु नराम्रो कुरो हो भन्दै निबन्धकारले आफ्ना रचनामा पनि ह्रस्व- दीर्घ, पदयोग-पदवियोग जस्ता कुराहरू यस्तै कारणले फरक देखिएको स्वीकार गरेका छन् ।

#### ४.२.३.३. भाषा लोकसाहित्यिक समीक्षात्मक निबन्ध

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा भाषा लोकसाहित्यिक समीक्षात्मक निबन्ध रहेको छ । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले भाषा लोकसाहित्यिक समीक्षाका विविध पाटालाई बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेको भाषा लोकसाहित्यिक समीक्षात्मक निबन्ध **लोक गीत र लोक नाचहरू** निबन्धको विश्लेषण यसप्रकार गरिएको छ :

प्रगति र नवीनताका नाउँमा कुनै व्यक्ति विशेषले बन्द कोठाभित्र रचना गरेर लोक भाकाको प्रयोग गर्दैमा त्यो लोकगीत हुन सक्दैन भन्ने विषयमा ‘लोक गीत र लोक नाचहरू’ निबन्धको रचना भएको छ । ‘लोक’ शब्दको परिचय, परम्परा, लोकगीत, लोकनाच आदिको वास्तविक परिचयलाई यस निबन्धको विषयवस्तुमा समेटिएको छ ।

कुनै एकजना स्वघोषित 'जनकवि'सँग कलकत्तामा भेट भएपछि तिनले दिएका केही लोकगीतका किताबहरूको अध्ययनबाट मनमा उत्पन्न विचारहरूलाई निबन्धको विषय बनाइएको छ । पुस्ता-पुस्तादेखि चलिआएका हाम्रा लोकगीतहरू, मादले गीत, भजने गीत, तामाङ सेलो आदिलाई आज कसैले कोठाभित्र रचना गर्दैमा लोकगीत हुन सक्दैन भन्ने निबन्धकारको विचार छ । चालीस-पचास वर्षअघिका लोकगीतका भावनासँग आजको भावना नमिल्दैनमा ती सबै थोत्रा ठहरिँदैनन् । त्यसै गरी नयाँ, युगसुहाउँदा कविताहरू जतिसुकै आकर्षक भए पनि ती कविता नै हुन्छन्, लोकगीत हुँदैनन् भन्ने तथ्यलाई निबन्धकारले निबन्धमा स्पष्ट पारेका छन् । लोकगीत पुस्तौँ पुस्तादेखि मानिसका मनमा, माटोमा भिभ्नेर स्थापित भएका हुन्छन् । कुनै शहरिया, पढन्ते कविले रचना गरेको गीत या कविता केही समय लोकप्रिय हुँदैमा लोकगीत बन्न नसक्ने भन्ने तर्क निबन्धकारको छ ।

यस निबन्धको 'लोक नाच' उपशीर्षकमा लोकनाचका विषयमा स्पष्ट पारिएको छ । धान नाच, मारुनी नाच, खुकुरी नाच जस्ता लामो परम्परा बोकेका लोक सम्पदाहरू पनि आज विटुलिँदै गएकोमा निबन्धकारले चिन्ता प्रकट गरेका छन् । यसरी निबन्धकार शर्माले आफ्नो मनमाफिक कलाकारले लोकगीत र लोकनाच सृष्टि गरेर नभई परम्परालाई जीवन्त राख्न सक्नुपर्ने भन्दै यसको मौलिकताको परिचयलाई निबन्धको विषयवस्तुमा समेटेका छन् ।

#### ४ .३ अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म निबन्धसङ्ग्रह विश्लेषण

आधुनिक नेपाली निबन्ध क्षेत्रमा एक सफल निबन्धकार नगेन्द्र शर्मा (१९८७) द्वारा लेखिएका निबन्धहरूको सङ्ग्रह **अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म** (२०४२) दोस्रो प्रकाशित निबन्धसङ्ग्रह हो । **अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म** निबन्धसङ्ग्रह विभिन्न समयमा पत्रपत्रिकामा प्रकाशित निबन्धहरूको सङ्गालो हो । यस सङ्ग्रहमा आत्मपरक र वस्तुपरक दुवै प्रकारका निबन्धहरू सरल भाषाशैलीमा लेखिएका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । यसरी **अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म**भित्रका निबन्धहरूलाई तार्किक र बौद्धिक दृष्टिले उत्कृष्ट निबन्धका कोटीमा राख्न सकिन्छ । त्यसैले उनका निबन्धहरू अरूका निबन्धभन्दा भिन्न पहिचान राख्न सफल छन् ।

### ४.३.१ आत्मपरक निबन्धहरू

नगेन्द्र शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा आत्मपरक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका आत्मपरक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### ४.३.१.१ सामाजिक आत्मपरक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा सामाजिक आत्मपरक निबन्धहरू यस प्रकार रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा सामाजिक आत्मपरक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

##### (१) 'दोब्बर अफाप' निबन्ध

यो एक संस्करण प्रधान निबन्ध हो । साथै यसमा एक प्रकारको व्यङ्ग्य पनि छ । लेखकले आफैमाथि व्यङ्ग्य गरेर निबन्धको सुरु गरेका छन् । 'मलाई जाँड नफापेको त प्रमाण धेरै पाइसकेको छु । हालका एक दुई अनुभवले कागजको नोट पनि अफापै हो की भन्ने परेको छ । अझ जाँड र कागजको नोट मिले त 'डबल' अफाप हुन्छ कि कसो ?' भन्दै निबन्धको शिर्षकको पुष्टि दिएका छन् । यसमा आत्मवर्णन, संस्मरण र घटना संयोजन गरिएको छ । तत्काल पुलचोकदेखि रत्नपार्क आउदा निबन्धकारको गोजीबाट कागजका साथैसय रुपियाँ चोरिएकोमा आफ्नो अफाप पुष्टि तार्किक र व्यङ्ग्य मिसाएर गरिएको छ ।

##### (२) 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' निबन्ध

यो निबन्धको शिर्षकबाट नै सिङ्गो निबन्धको नामाकरण गरिएको छ । यसमा निबन्धकारले आफ्नो आधा सताब्दी जतिको समयमा खाएका मासुका परिकारहरूको चर्चा गरेका छन् । आफ्नो ब्रतबन्धको अघिल्लो दिन ठूलीदिदीले अण्डा खुवाएको र श्रीमतीसँग बैङ्कक घुम्न जाँदा भ्यागुतो खाएको कुरा यस निबन्धमा बताइएको छ । साथै आफू बाहुन उपाध्याय भएर पनि अ

देखि ज्ञ सम्मका अनेकौ मासुका परिकारहरू मुखरूपी टोड्कामा परिसकेको निबन्धमा बताउछन् । यसरी विभिन्न समयमा खाएका भक्ष्य अभक्ष्य प्रसङ्ग निबन्धकारले उठाएका छन् ।

#### ४.३.१.२ पौराणिक आत्मपरक निबन्ध

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा पौराणिक आत्मपरक निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका पौराणिक आत्मपरक निबन्ध 'सकली हिन्दूस्थापना' निबन्धको विश्लेषण यसप्रकार गरिएको छ :

यो निबन्धमा व्यङ्ग्य मात्र गरिएको छ । यसमा लेखकको आफ्नो लेखनमा पुनर्जागरण, ईसाई धर्मको व्यापकता, यौन स्वतन्त्रता, (गालब-माधवी, इन्द्र-गौतमी, ब्रह्मा-सरस्वती आदि सन्दर्भ), सति प्रथा, छल प्रवृत्ति आदिलाई व्यङ्ग्यकै माध्यमबाट तर्क सहित प्रस्तुत गरिएको छ । साथै तत्कालीन समयको 'हिन्दू राष्ट्र' घोषित नेपालमा हिन्दू पुराण धर्म ग्रन्थहरू अनुसारको सुविधाहरू संविधानमा राख्नुपर्ने र नेपाललाई 'हिन्दूस्थापना' घोषित गर्नुपर्ने विचार छ ।

#### ४.३.१.३ सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा सांस्कृतिक आत्मपरक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध बौद्धिक र तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### (१) 'बोलचालको भाषा, काठमाडौँ र दार्जिलिङ्गमा' निबन्ध

यो निबन्ध काठमाडौँ र दार्जिलिङ्गमा बोलिने शब्दहरूको अर्थको अन्तरलाई विषय बनाएर लेखिएको छ । यस निबन्धमा काठमाडौँका मानिसले आफूलाई 'सभ्य हौँ' र अरुलाई 'पहाडिया' भनेर देखाएको घमण्ड प्रति पनि काठमाडौँको गल्ली-गल्लीको फोहोर र गाउँको सफा

वातावरणको पनि तुलना गरिएको छ । तर मुख्य उद्देश्य काठमाडौं र दार्जिलिङ्का केही शब्दसूची पनि देखाउनु रहेको पाइन्छ ।

### (२) 'नेवारी भाषा, साहित्य, सङ्गीत' निबन्ध

यो निबन्ध २०३३ वैशाखको रूपरेखामा प्रकाशित वस्तुपरक निबन्ध हो । यसमा नेवारी भाषा, साहित्य, नेपाली भाषा भन्दा पनि पुरानो छ तर यसका आफ्ना रञ्जना र नेवारी लिपि हुँदाहुँदै पनि नेपाली प्रभाव बढि पाइन्छ । यस भाषाको अध्ययन गर्दा तिब्बती भाषासँग केही समानता देखिन्छ । नेपाली र नेवारी भाषा साहित्य मिलेर तेश्रो भाषाको आक्रमण विरुद्ध उत्रनु पर्ने विचार निबन्धमा पाइन्छ । सङ्गीत-नृत्यका प्रेमी नेवारहरू महादेवलाई नृत्य देवताका रूपमा पुज्दछन् । उनीहरू वैशाख सिठिनख देखि असार 'गुठामुग' सम्म खेतीपातीमा व्यस्त हुने गर्दछन् । यो समयमा उनीहरूलाई बाजाहरू बजाउन मनाही छ भने अन्य समयमा सङ्गीतमय जीवन विताउछन् भन्ने निबन्धमा व्याक्त भएको छ ।

### (३) 'संस्कृति र छोयला-गुन्द्रुक' निबन्ध

यो निबन्ध २०२७, १७ असोजमा गोरखापत्रको शनिवासरियमा प्रकाशित वस्तुपरकतालाई आत्मपरकताले जलप लगाएको हो । तत्कालीन समयमा काठमाडौंमा विदेशीहरूलाई नेपाली खाना खुवाउने एउटा पनि होटल तथा रेस्टुरा नभएको परिप्रेक्षलाई विषय बनाएर यो निबन्ध लेखिएको छ । चिनियाँ र पश्चिमेहरूले च्याउलाई मशरुम बाँसको तामालाई ब्याम्बुशुट भनेर टक्राउँदा हामी दङ्ग पछौं तर हामीहरू ढिडो र गुन्द्रुक साँधेर खाना खुवाउनमा किन अन्कनाउने ? अझ काठमाडौंमा प्रचलित छोयला-कचिला जुन विश्वमा विरलैपाइन्छ त्यो किन नखुवाउने भन्ने प्रश्न निबन्धमा पाइन्छ । 'तिमी जे छौ' त्यही नै तिम्रो संस्कृति हो त्यही नै विदेशीलाई प्रदर्शन गर भन्ने मान्यता निबन्धमा छ ।

### ४.३.२ संस्मरणात्मक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा संस्मरणात्मक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले समाजमा रहेका विविध समस्यालाई बौद्धिक र

तार्किक ढङ्गले गरेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका संस्मरणात्मक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### ४.३.२.१ यात्रा संस्मरणात्मक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा यात्रा संस्मरणात्मक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्र रहेका निबन्धहरूमा यात्रा संस्मरणात्मक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

##### (१) 'मैले देखेको दार्जिलिङ्ग' निबन्ध

यो निबन्धमा बालकृष्ण समको “दार्जिलिङ्गले आज जुन कुरा सोच्छ, यो भोलि नेपालले सोच्छ” भन्ने भनाइले लेखकका मनमा उब्जाएका भावनाहरूको प्रतिबिम्बित पाइन्छ । काठमाडौँलाई उछिनेर भानुभक्तको प्रथम मूर्ती स्थापना, धरणीधरको जन्म, सूर्यबिक्रम ज्ञवालीको जन्म दार्जिलिङ्गमा नै भएको छ । आज र भोली समयक्रम समले भविष्यवाणी गरेको जस्तै हुनुपर्छ भन्ने छैन भन्दै निबन्धकार आफ्नो तर्क प्रस्तुत गर्दछन् - न त बन्द पिँजडाबाट २००७ सालमा उम्केको लेखनाथको काठमाडौँवाल सुँगा वृहत् संसारको क्षितिजसम्म छुन खोजिसक्ता पिँजरा वाहिरैको भएर पनि पखेटाहिन दार्जिलिङ्ग मुनियाँ केवल ट्याउँ-ट्याउँ नै गरिरहेछ विचरो भूईँ मै ।

##### (२) 'कवि गिरी, प्रतिष्ठान र सेमिनार' निबन्ध

यो निबन्धमा काठमाडौँबाट वेखर्ची भएर 'धपिएका' कवि अगमसिंह गिरीले बयालिस वर्षको अल्पायुमै मृत्यु वरण गर्नु परेकोमा निबन्धकारले एकातिर आँसु बगाएका छन् भने अर्कातिर प्रज्ञा प्रतिष्ठान जस्तो साहित्यिक निकायले खर्चालु सेमिनारहरू आयोजना गरेर । लेखनाथपछि 'कविशिरामणि' को पदवीलाई एक पद, एक नोकरी, जो खाली छ त्यसमा अर्को कविलाई प्रतिस्थापन गर्नु पर्छ भन्ने जस्ता बेकामका बहस बढाएर आर्थिक हिनामिना गर्दछ भन्न खोजेका छन् । यसरी सेमिनारमा फुकेको धनले एउटा कोष खडा गरिदिएमा कवि गिरी जस्ता कविलाई बेवारिसे भैँ भएर मर्नबाट बचाउन मद्दत पुऱ्याउथ्यो भन्ने धारणा निबन्धमा पाइन्छ ।

### (३) 'आग्राको कुरा, गाग्राको कुरा' निबन्ध

यो निबन्धमा यात्रा-वर्णन पाइन्छ । निबन्धकारले भारतको दक्षिणमा पर्ने प्रसिद्ध तिर्थस्थल तिरुपतिको भ्रमण विवरण र त्यहाँको रमणीयता, सुन्दरता तथा मन्दिर व्यवस्थापनको वर्णन गर्दागर्दै (आफ्नो देशको) पशुपतिनाथको दयनीय अवस्था सोचेर मर्माहत हुँदै त्यहाँको जस्तै व्यवस्थापन गर्नु पर्ने कुरा उठाएका छन् । पशुपतिनाथ मन्दिरको व्यवस्थापनबाट उठेको रकमलाई राष्ट्रहितमा खर्च गर्नुपर्छ भन्दछन् ।

### (४) 'भी.आई.पी. यात्रु' निबन्ध

यो निबन्ध अन्य निबन्धभन्दा लामो छ, जसमा १०४ अनुच्छेद छन् । यसको आयतन तेइस पृष्ठमा फैलिएको छ । यो निबन्धमा वीचमा अङ्क नम्बर पनि दिइएको छ । जसमा १,२,..... गर्दै १३ सम्म पुऱ्याइएको छ र क्रमसः दार्जिलिङ्का हाइस्कूलको शिक्षक पदबाट राजिनामा, शिवकुमार राई, सूर्य विक्रम ज्ञवाली, गोकुल दाइ, कलकत्ताको अध्ययन जीवन, कलकत्ताका नेपाली समाजको सेवा, कलकत्ताको 'भीड र चीड' को वर्णन, कलकत्ताको पत्रकारिता जीवन, अङ्ग्रेजी पत्रिकामा स्तम्भ लेखक 'नेपाल-सिक्किम-भुटान एक्सपोर्ट', पाल्सी कुराको आविष्कार 'पश्चिम बङ्गाल' पत्रिकाबाट राजिनामा, भाषिक आन्दोलन र कलकत्ताबाट काठमाडौँ हवाइ जहाजमा एकमात्र यात्रु भी.आई.पी.को वर्णन गरिएको छ । यसमा भएका निबन्धकारका संस्मरणहरू विभिन्न अनुभवले ओतप्रोत र रोचक छन्, पढ्यारलाग्दा छैनन् ।

### ४.३.२.२ व्यक्ति संस्मरणात्मक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा यात्रा संस्मरणात्मक विभिन्न निबन्धहरू रहेका छन् । यस सङ्ग्रहभित्र रहेका निबन्धहरूमा व्यक्ति संस्मरणात्मक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

## (१) 'के हुन्छ, के हुँदैन ?' निबन्ध

निबन्धकार नगेन्द्र शर्माले यस निबन्धमा आफ्ना बुबाको निधनपछि तेह्र दिन क्रियापुत्री भएर बस्नुपर्दा बेहोर्नु परेका केही तीता अनुभवहरू समेटिएका छन् । गरुड पुराण, निर्णयसिन्धु आदि पुस्तकहरूलाई आधार बनाएर उनी प्रश्न गर्दछन्, “हामी पर्वते नेपालीलाई पुरोहित बाजेहरूले जर्बजस्ती लादेका सबै बन्देज पालन गर्नेपछि र ? बंगाली र मारवाडी जस्ता अरू हिन्दुहरूले पालन गर्न नपर्ने तर नेपाली हिन्दूहरूले चाहिँ पालन नगरी नहुने भनिएका बन्देजहरू हामीमाथि थोपरिएको पाएपछि लेखकले अन्याय भएको ठहर गर्छन्, तीमध्ये धेरैलाई लत्याइदिन्छन् पनि । जस्तै, बाहुन क्रियापुत्रीहरूले मतवालीहरूसँग दोहोरो वार्तालाप गर्नु नहुने, बाथरुम प्रयोग गर्नु नहुने, पत्रपत्रिका पढ्न नहुने, रेडियो सुन्न नहुने, भन्ने बन्देजहरूलाई मान्यता दिदैनन् । मृतकका एकभन्दा धेरै छोराहरू छन् भने सबै छोराले क्रियापुत्री बस्नुपर्ने बाध्यताको पनि विरोध गर्दछन् । जुठो बार्ने परिवारका सबै सदस्यहरूले तेह्रतेह्र दिन आफ्नो काममा जान नपाउने जस्ता बन्देज लगाएर सयौँ-हजारौँ मानव घण्टा समय खेर फालेकोमा पनि उनको चित्त बुझेको छैन । प्राचीन पुर्खाहरूका समयमा फुसँदै थियो होला र तेह्र दिन बार्ने नियम बनाए होलान । ती तेह्र दिनका कर्मकाण्ड छोट्याएर तेह्र घण्टामा सीमित गर्न सकिदैन ? भनी निबन्धमा प्रश्न उठाइएको छ । निबन्धकारले अन्त्यमा आफू मरेपछि आफ्ना सन्तानले जुठै बार्नुपर्दैन भन्ने सन्देश पनि दिएका छन् ।

## (२) 'अनेक मृत्यु : एकै प्रश्न' निबन्ध

यो निबन्ध पनि मृत्युसितै सम्बन्धित छ, तर सन्दर्भ फरक खालको छ । लेखक/निबन्धकारले आफ्ना केही आत्मीय स्वजनहरूको निधनका बेला अन्तिम श्रद्धान्जली दिने अवसरबाट समेत बञ्चित हुनु परेकोले थकथकी र पश्चाताप लागेका कुराको उठान गरेका छन् । उनका गुरु धरणीधर शर्मा मित्र शंकर लामिछाने, उत्तम कुँवर, साहित्यकार विश्वेश्वरप्रसाद कोइराला र कवि राजा महेन्द्र आदिको मृत्यु र श्रद्धान्जली प्रकट गर्ने अवसरका गुनासो यस निबन्धमा गरिएको छ ।

### (३) 'यहाँ एउटा 'क्लासिक' जन्मिएछ' निबन्ध

यो निबन्ध एउटा पुस्तकसँग सम्बन्धित छ । दार्जिलिङको एउटा अङ्ग्रेजी स्कूलमा पढिरहेकी आफ्नी छोरीका पाठ्यपुस्तकहरूमा नपाइएको विषय नेपाली पाठ्यक्रम अनुसार लेखिएको कक्षा ६ को पुस्तकमा पाएपनि त्यस पुस्तकलाई निबन्धकार - "नेपालीमा एउटा 'क्लासिक' जन्मिएको रहेछ"<sup>६६</sup> भन्दै प्रशंसा पनि गर्दछन् । तत्कालीन समयमा नेपालीहरू आफ्ना बच्चाहरूलाई नेपाल बाहिर पढाउँदा राष्ट्रिय गीत, राष्ट्रिय विभूतिहरू, राष्ट्रिय इतिहास आदि कुनै पनि कुरामा ज्ञान नहुने तर आर्थिक विदेशीने प्रवृत्तिलाई निबन्धमा तार्किक रूपमा प्रस्तुत गरिएको छ ।

### (३) 'म जस्तै चम्पा र दलवीर' निबन्ध

यो एउटा संस्मरणात्मक निबन्ध हो । यसमा सम्पन्नताको संसारमा विपन्नताको तस्वीर निबन्धकारले खिचेका छन् । निबन्धकार स्वयम्को दरिद्रताले पीडित बाल्यकालको एउटा भाँकी प्रस्तुत गरिएको छ । निबन्धकारले डेभिस प्राइमरी स्कूलमा सँगै पढेका चम्पा र दलवीरलाई करिब ४० वर्ष पछि डाउहिल-भिकटोरीया स्कूलको वार्षिक उत्सवमा भेटाउदछन् र आफ्ना सहपाठी चम्पा र दलवीर क्रमसः कुचो र डालो लिएर 'करिडर' बढाउँदै तथा अतिथिलाई रात्रीभोजको 'स्ट्रेट' मा खाना लिएर हिँडेको अवस्थामा आफू अतिथि हुँदाको क्षणको संस्मरण यस निबन्धमा छ ।

### (४) 'गणित र म' निबन्ध

यो अर्को संस्मरणात्मक निबन्ध हो । खर्साङ्को हाइस्कूलका अन्तिम दिनहरू, दार्जिलिङमा कलेज प्रवेश गर्न जाँदा खेप्नु परेका भै भन्फट र धर्मसंकटमा परेकाले आफूले चाहे अनुसारको पढ्न नपाएको आइ.एस्सी, पढ्ने हुँदा पहिलो मासिक परीक्षा मै सय नम्बरमा सात नम्बर मात्र पाएर जीवनमा पहिलो पल्ट फेल हुन पुग्दाको मानसिक पिडा यसमा निबन्धकारले प्रतिबिम्बित गरेका छन् । त्यस दृष्टिले पनि यो निबन्ध मार्मिक हुन गएको छ । यो

निबन्धलाई आफ्ना गुरुजन (अतुलविहारी राय, गणेश बाबु आदि) र शुभेच्छुकहरूप्रति कृतज्ञता प्रकट गर्दै आभार व्यक्त गरेको विवृत्तिको रूपमा लिन सकिन्छ ।

#### ४.४ 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' कृतिको विश्लेषण

शर्माको तेस्रो प्रकाशित कृति बनारसमा बेचिएकी बहिनी (२०४७) निबन्धसङ्ग्रह हो । यस सङ्ग्रहका निबन्धहरूमा पनि विषयगत विविधता पाइन्छ । जुनसुकै विषयमा पनि विचार प्रक्षेपण गर्ने एकमात्र साहित्यिक विधा निबन्धलाई उनले मूल रूपमा रुचाउनाको कारण पनि आफ्ना जीवनको भोगाइ र अध्ययनको चिन्तनबाट प्राप्त बौद्धिकतालाई व्यक्त गर्नुलाई देखिन्छ । उनका निबन्धमा व्यक्त गरिएको विषय वैज्ञानिकतामा आधारित र रुढिवादी छन् । यस सङ्ग्रहमा समाजमा अझै जूकोभैँ टाँसिएर रहेका घृणित रुढिहरूलाई विषयका रूपमा लिएर आफ्नो चतुरतापूर्वक तर्क, दृष्टिकोण प्रयोग गर्दै गतिलो भाषण दिएर पाठकलाई पत्यार लाग्दो रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

##### ४.४.१. सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

##### (१) 'संस्कृतिका तीन नेत्र' निबन्ध

यो निबन्ध पात्रात्मक शैलीमा लेखिएको छ । यसमा २०२४ सालतिर पञ्चायती सरकारको संस्कृति विभागले संचालित हाम्रो संस्कृति नामक पत्रिका प्रकाशित पछि प्राप्त पहिलो, दोस्रो र तेस्रो तीनवटा अङ्क निबन्धकारको हातमा परेपछि त्यसमा भएका विभिन्न व्यक्तित्वहरूको विचार खण्डन गर्दै पत्रिकाका सम्पादक स्व. महेन्द्रनाथ खनाललाई सम्बोधन गरिएको छ । हाम्रो संस्कृति नामक पत्रिकामा प्रकाशित श्री विष्णु गोपाल रिमाल, श्री यदुनन्दन के.सी, श्री लोचननिधि तिवारी, श्री धनेन्द्र प्रसाद शर्मा, श्री हरिराम जोशी, केशव हुवाडी, प्रो. चुडानाथ भट्टराइ, धर्मराजथापा, श्री चेतनाथ शर्मा, युवराज गौतम, श्री बदरीनाथ भट्टराइ आदिका विचार तथा यस निबन्धमा खण्डन भएको देखिन्छ । संस्कृति विभागबाट प्रकाशित हाम्रो संस्कृतिका

तीन अङ्कलाई तीनवटा नेत्रका रूपमा लिएर निबन्धको नामाकरण पनि संस्कृतिका तीन नेत्र राखिएको पाइन्छ ।

### (२) 'पुराना विचार, नयाँ समय' निबन्ध

यो एक अन्धविश्वास विरुद्धको छोटो निबन्ध हो । यसमा 'अन्ध विश्वासहरू' र 'इहलोक र परलोक' गरी दुई खण्ड पनि छन् । हामीमध्ये कति मानिस यस्ता पनि छन् जसलाई "इहलोक" र "परलोक" का बारेमा बढी चिन्ता छ । . . . तर वास्तविक जीवनमा के हामी "पूर्वजन्म" कै कमाइ मात्र खान्छौ त ? मगज र पसिना, चेष्टा उत्साह र इलम (इन्टरप्राइज) कै फलस्वरूप मानिस उँभो लागेको पो बढ्ता देख्छु म त । तर यसरी कर्महीनताको पाठ पढाउने हाम्रा कतिपय यस्ता दर्शनहरूलाई हामीले तिलान्जली दिन कहिले सिकने ? भन्दै नयाँ समयको मागअनुसार चलन निबन्धकार सल्लाह दिन्छन् ।

### (३) 'संस्कृतको यो महंगो मोह' निबन्ध

यो निबन्ध नेपाली भाषा र संस्कृत भाषाको प्राचीनताको विषयमा केन्द्रित छ । निबन्धकार नेपाली भाषालाई संस्कृत भाषाको सन्तानका रूपमा लिन चाँहाउँदैनन् । नेपालमा बोलिने अन्य भाषालाई विस्तारित गर्दै नेपाली भाषाको विस्तारमा संस्कृत शब्दको अधिक प्रयोगको पनि निबन्धमा विरोध देखिन्छ । साथै नेपाली भाषा जस्तै नेवारी, अङ्ग्रेजी, अमेरिकाली, क्यानाडियाली आदि भाषामा पनि अन्य भाषामा शब्दहरू आएका हुन्छन् तर शब्द आगमनका आधारमा नेपाली भाषाको माउ भाषा संस्कृत होइन भन्ने तर्क निबन्धमा छ । तत्कालीन पञ्चायती सरकारले भाषा सम्बन्धी नयाँ नीतिमा 'राजपत्राङ्कित अधिकृत' र 'महान्यायाधिवक्ता' जस्ता नयाँ अफठ्यारा शब्दहरूको प्रयोग गर्न थाले पछि राई-लिम्बू साथीहरूले 'अब त बाहुनहरूको खुब भाउ बढेको छ' भन्ने प्रसङ्गबाट निबन्धकारले निबन्ध सुरु गरे र शीर्षक पनि संस्कृतको यो महंगो मोह राख्न पुगेको देखिन्छ ।

#### ४.४.२ संस्मरणात्मक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा संस्मरणात्मक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका संस्मरणात्मक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

##### (१) 'अमेरिकी न्यायको नमूना : रसेलको सन्दर्भमा' निबन्ध

यो निबन्ध अमेरिकी घटनासँग सम्बन्धित छ । प्रख्यात विद्वान बट्रेन्ड रसेल एकताक क्यालिफोर्निया विश्वविद्यालयमा दर्शन शास्त्र पढाउँदै गर्दा 'कलेज अफ दि सिटी न्यूयोर्क' मा दर्शन शास्त्र पढाउने प्राध्यापकको आवश्यकता परेपछि नियुक्त भए । जुन नियुक्तिमा कलेज बोर्डको बाइस जनामा उन्नाइस जनाको समर्थन थियो तर सामाजिक नैतिकताका ठेकेदार 'पण्डा-पुरोहित' जस्ताले विरोधस्वरूप रसेललाई प्रोपोगाण्डा गर्ने औ एडस्टरी लगाइयो र १९४० फरवरीमा निकालियो । उनीमाथि गैर-अमेरिकी, अयोग्य, यौनसम्बन्धी खुल्ला धारणा राख्ने र कम्युनिष्ट भन्ने जस्ता आरोप लगाएर जसका सन्तान त्यो विश्वविद्यालयमा पढ्दै-पढ्दै नथे तिनैले दिएको उजुरीका आधारमा न्यायाधीश ग्याक गोहेनले रसेलको विरुद्धमा निर्णय सुनाइदिए । रसेलको पक्षमा त्यहाँका विद्वानहरूको त समर्थन देखिन्छ तर धेरैको विरोधका अगाडि केही पनि नचलेको पाइन्छ । रसेलको समर्थनमा एकेडेमिक फ्रिडम-बट्रेन्ड रसेल कमिटी पनि खुलेको देखिन्छ । रसेलको नियुक्तिलाई लिएर यस्तो गल्फती चलेको देख्दा प्रख्यात वैज्ञानिक आइन्स्टाइनले पनि यस्तो टिप्पणी गर्नु भएको थियो - "महान आत्माहरूले सदैब नै मेडियोक्रिटहरूबाट यस्तै हिंसात्मक विरोधको सामना गर्नु परेको छ । . . . "औ जोन डि. वि. ले थपे "निश्पक्ष न्याय गर्ने हो भन्ने हाम्रो कीर्तिमा लागेको यो मोसोको धब्बा देखेर हामी प्रजातन्त्रवादी भनाउँदा अमेरिकालीहरूको शिर लाजले सदैब नै निहुरिरहनेछ ।" त्यसपछि रसेललाई १९५० मा नोबेल पुरस्कार पनि प्रदान गरेर सम्मान गरिएको छ । जसले गर्दा अमेरिकी न्यायको खिल्ली उडाएको सफल उदाहरण रसेल बनेको देखिन्छ ।

## (२) 'गाई नखानु ?' निबन्ध

यो निबन्धको शीर्षकमा नै प्रश्नचिन्ह (?) प्रयोग गरिएको छ, जसमा निबन्धकारले गाईको मासु पहिले-पहिले खाइन्थ्यो तर वर्तमानमा किन प्रतिबन्ध लगाएको भन्ने तर्क प्रस्तुत गरेका छन् । वैदिक आर्यहरू गाईको मासु र मदिरा खाँदैनथे त्यसैले हामीले पनि खान हुँदैन भन्ने 'बाहुने' तर्कको पुष्टि गर्ने पक्षका विद्वानहरू गाईलाई वेदमा १३७ पटक 'अध्या' अर्थात् मार्न नहुने घोषित गरिएको छ, यज्ञ भनेको 'अध्वर' अर्थात् अहिंसात्मक कार्य आदि विभिन्न तर्कका लागि निबन्धकार अर्को तर्क गर्दछन् - "गाई पोलिने वा पोलिएको आगो यज्ञ-हवनमा चल्दैन भनेर त ऋग्वेदले त्यसवेलाको समाजमा त्यस्तो मासु पोलेर खाने चलन थियो भन्ने पुष्टि गर्दैन र ? भनी लेख्दछन् । हामीलाई गाई खाने नखाने भन्दापनि गाईको हेरचाह गर्नुपर्छ भन्ने सन्देश निबन्धमा दिइएको छ ।

## (३) 'राज्याभिषेक : एक अनुभूति' निबन्ध

यो निबन्ध राजा वीरेन्द्रको राज्याभिषेकसँग सम्बन्धित छ । यो निबन्ध वीरेन्द्रको राज्याभिषेकको समयमा विभिन्न पत्रपत्रिकामा प्रकाशित भएको पाइन्छ । यसमा निबन्धकार करारमा नियुक्त सूचना विभागको निर्देशक छँदाको अनुभव पनि देखिन्छ । राजा महेन्द्रको राज्याभिषेक २०१३ वैशाख २० पछि राजा वीरेन्द्रको राज्याभिषेकमा विदेशी नियोगबाट आउने अतिथिहरूको पनि चर्चा गरिएको छ । त्यस्तै राज्याभिषेकको समयमा राजारानीलाई गराइने महास्नानभन्दा अगाडि विभिन्न तेह्र ठाँउको माटो ल्याएर शरीरका विभिन्न स्थानमा लगाउने रोचक प्रसङ्ग पनि छ । त्यस समयमा राजाले पढ्नु पर्ने मन्त्र पढ्दा त्यसको अर्थ - 'मेरा समय ( आयु) र प्राण सेवामा अर्पण गर्नेछु', 'राष्ट्रको जगेर्ना गर्नेछु र आफ्नो कर्तव्यप्रति सदा सजग रहनेछु' इत्यादि हुँदोरहेछ । यस्ता प्रसङ्गहरू यस निबन्धमा समेटिएको छ ।

### ४.४.३. भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्ध

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### (१) 'म मानिसलाई ईश्वरीय सृष्टि मान्दिनँ ।' निबन्ध

यो निबन्धमा 'इ.एम., फोर्स्टरलाई उत्तर, उनकै शब्दमा', 'सहिष्णुता' र 'शक्ति र सृजना' जस्ता उपशीर्षकमा चर्चा गरिएको छ । यो निबन्ध पढ्दै जाँदा नेपाली भाषाको प्रचलन अनुसार बढी प्रबन्ध जस्तो देखिन्छ, तर लेखकका शब्दमा 'निबन्धै हो' भनेका छन् । यो रचनालाई उनले फोर्स्टरको 'दी डिफेन्स अफ इण्डिभिजुअलिज्म' बाट प्रेरित भनेका छन् र भाषा पनि फोर्स्टरकै हो भन्दछन् । साथै मूल निबन्धमा व्यक्त उनको विचारसँग यस निबन्धको विचार काँही पनि मेल खाँदैन पनि भनेका छन् । तर त्यो 'मूल' को स्वरूप कस्तो थियो भन्ने थाहा नपाइकन के कति फोर्स्टरका विचार हुन् र कति यस निबन्धकारका हुन भन्ने छुट्याउने कुनै उपाय पाठकहरूसँग छैन ।

#### (२) 'साहित्यिक चोरीको पक्षमा ।' निबन्ध

यो निबन्ध २०२८ माघ १२ गतेको गोरखापत्रमा प्रकाशित भएको पाइन्छ । यसमा निबन्धका साहित्य र सृष्टिका बीचमा तुलना गरी ब्रह्माको सृष्टिसमेत मौलिक होइन भन्छन्, साहित्य पनि त मौलिक होइन नि चोरी नै हो भन्ने तर्क पनि पाइन्छ । त्यस्तै - "कुनै एक लेखकको कृतिबाट तिमीले केही थुत्यौ भने त्यो साहित्यिक चोरी हुन्छ, तर धेरै विभिन्न लेखकहरूबाट थुतेको चाँही 'रिसर्च' हुन्छ । भन्दै डब्ल्यू मिज्जरको भनाइबाट निबन्धको सुरुवात गर्छन् निबन्धकार । साहित्यकारले साहित्यिक चोरी सृष्टि, प्रकृति आदिबाट गर्न सक्छन् भने फिल्म निर्माताहरूले साहित्यिक चोरीबाट बढी नै नाफा कमाउन सक्छन् भन्ने विचार यसमा व्यक्त गरिएको छ ।

## ४.५ 'सम्झाउनि-बिसाउनी' लघु निबन्धसङ्ग्रहको अध्ययन

नेपाली साहित्यको निबन्ध विधामा लघु निबन्धहरूको संगालो **सम्झाउने-बिसाउनि** मा नरेन्द्र शर्मा देखा पर्दछन् । उनका अन्य प्रकाशित कृतिहरू भन्दा नयाँ प्रक्रियाहरू छन् । निबन्धको सानो रूप लघुनिबन्धको सङ्ग्रह नै प्रकाशित हुनु एउटा साहित्यिक विकासमा नयाँ आयाम नै मान्नु पर्छ । त्यस्तै लघु लिपिको प्रयोग पनि यस सङ्ग्रहको विशेषता मान्नु पर्छ । निबन्धकारले यसै सङ्ग्रहको सुरुमा आफ्नो भनाइमा मेरो लघु-निबन्धहरूको यो दोस्रो संगालो हो भने तापनि प्रकाशनमा पहिलो नै हुनपुगेको छ । यस सङ्ग्रहमा पनि **जनसत्ता** साप्ताहिक, **स्पेसटाइम**, **कान्तिपुर**, **नयाँसडक** र **सुनचरी** दैनिक पत्रिकामा प्रकाशित भएका निबन्धहरू संकलन गरिएको पाइन्छ । यस सङ्ग्रहमा रहेका लघुनिबन्धहरूलाई मुख्य तीन खण्डमा विभाजन गरिएको छ । परिशिष्टमा नगेन्द्र : मेरो दृष्टिमा , धनुषचन्द्र गोतामेको संस्करणात्मक निबन्ध रहेको छ ।

### ४.५.१. सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्धसङ्ग्रहमा रहेका सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्ध **'केही जिज्ञासाहरु खण्ड-३'** निबन्धको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

निबन्धकार शर्माले यस खण्ड (परिच्छेद) मा **केही जिज्ञासाहरू** अन्तर्गतका लघुनिबन्धहरू सबैका शीर्षक प्रश्नवाचक नै राखेका छन् । यस खण्डका लघु-निबन्धहरूले खास गरी हाम्रो समाजमा प्रचलित परम्परा, संस्कृति र भाषाको नाममा भित्रिएका विकृतिहरू, कुप्रथाहरू, तर्कहीन मनगढन्ते संस्कारहरू, अन्धविश्वासहरूलाई उजागर गरेका छन् । शर्माले आजको यस वैज्ञानिक युगमा तिनलाई पछ्याउने कसरी, पत्याउने कसरी भन्ने जिज्ञासाहरू तार्किक, अनुसन्धानात्मक शैलीमा प्रस्तुत गरेका छन् । यस खण्डका लघु निबन्धहरू जीवन र समाजबाट पाएको अनुभव तथा अध्ययन, चिन्तन र मनन गरेर देखिएका रसिला र सजिला हुदाँहुँदै पनि व्यावहारिक र चूनौतिपूर्ण पनि देखिन्छन् । ती निम्नानुसार छन्: १. अर्थको अनर्थ ?, २. आङ्कोर वट कसले बनाएको थियो ?,

३. 'कुर्महरू' भन्ने केही छन् ? , ४. खसहरू 'नेपाली जनजाति' होइनन् ? ,
५. 'दलित' समस्याको हल कहिले होला ? , ६. लखन थापा राणा शासनका प्रथम विरोधी ? ,
७. नाग जाति एक पख्यौती वंश ? , ८. नेपाल-भूटान सम्बन्ध : एक प्रश्न ? ,
९. नेपाली नारी वास्तविक 'नागरिक' कहिले हुने १०. नेपाली चेली हजरत ? ,
११. पशु-पक्षीहरूको महत्व कति रहेछ ? , १२. संस्कृत र प्राकृत : कुन अघिल्लो ? ,
१३. प्राचीन पुरखाहरूका खाद्य कस्ता हुन्थे ? , १४. प्राचीन साहित्यमा थपथाप र जालभेल ? ,
१५. बाहुनहरूले पो दशैं बहिष्कार गर्नु पर्ने होइन र ? , १६. धर्म-शास्त्रमै यौन-प्रशंसा ? ,
१७. मूर्ति-पूजा प्रचलन वैदिक कालीन हो के ? , १८. 'यो रङ्गभेद' कहिले अन्त्य होला ? ,
१९. यौन स्वच्छन्दताबारे विद्वानहरू के भन्दछन् ? , २०. विधवाहरूले पुनर्विवाह गर्न नपाउन ? ,
२१. मद-पानको प्रचलन आजको मात्र हो र ? , २२. समलिङ्गी परम्परा नौलो हो र ? ,
२३. पाण्डवहरू नेपाल र कामरूप पनि आएका थिए ?

यस्ता लघु-निबन्धहरूमा धर्म र संस्कृतिको नाममा हुर्किरहेका विकार र विकृतिहरूले हाम्रो समाजलाई खोक्रो र अमानवीय स्थितिमा ल्याएर अति नै विखण्डित पार्ने खालका समस्या पनि ल्याइदिएका कटु सत्यलाई औल्याउदै तिनको आमूल सुधारका लागि कम्मर कस्नुपर्छ भन्ने भावले नगेन्द्रले समाजलाई अनुरोध गरेको पनि पाइन्छ । यी निबन्धहरू बौद्धिकता, अध्ययन र परिपक्वताबाट उत्पन्न प्रामाणिक प्रश्न जस्ता पनि लागे, जसलाई बुझ्न साधारण मानिसको गिदी खल्बलिने देखिन्छन् ।

## ४.५.२ संस्मरणात्मक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा संस्मरणात्मक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका संस्मरणात्मक निबन्ध **सम्भानि-बिसाउनी** : **खण्ड-२** निबन्धको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

निबन्धकार नगेन्द्र शर्माले यस परिच्छेद (खण्ड) मा लघु निबन्ध र लघु लिपिको प्रयोग गरेका छन् । उनले लघुलिपिमा स्वरवर्ण सोर (१६) बाट घटाएर दस (१०) ( अ, आ, इ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ, अं) मा ल्याएका छन् । शर्माले व्यञ्जन वर्ण पनि अड्तीस (३८) बाट घटाएर उनान्तीस (२९) मा ल्याएका छन् । उनको व्यञ्जन वर्णमा 'अ' को काम 'यं' ले, 'ज्ञ' को काम 'ग्यं' ले 'क्ष'को काम 'क्छ' चलाउने, श, ष, ण नरहने गरेको देखिन्छ । शर्माले प्रस्तावित गरेका नेपाली लघुलिपिमा जम्मा स्वर र व्यञ्जन गरी उनान्चालीस (३९) वटा मात्र पाइन्छन् । यो प्रस्ताव यसै खण्डको सुरुमा गरिएको छ । शर्माले आफूले प्रस्तावित गरेको लघु-लिपिका आधारमा बत्तीसवटा शिर्षकमा सैंतीस (३७) वटा व्यक्तित्वहरूको बारेमा संस्मरणात्मक निबन्धहरू लेखेको पाइन्छ । यस खण्डमा परेका निबन्धहरू यस प्रकारका छन् -

- |                      |                       |                    |
|----------------------|-----------------------|--------------------|
| १. अतुल सर           | २. आमा                | ३. एस. के. सर      |
| ४. धुपवाला दाइ       | ५. गनेस दाइ           | ६. गोकुल दाइ       |
| ७. गोपालप्रसाद रिमाल | ८. छिन्नलता           | ९. जनकलाल दाइ      |
| १०. ठुल्दिदि         | ११. ड्याडि            | १२. डि.एन. दाइ     |
| १३. डि. वि. छेत्रिसर | १४. धुव संसेर जर्साब  | १५. नारायन तामांग  |
| १६. निर्मल लामा      | १७. प्रतिमानसिंह लामा | १८. पोसन गुरु      |
| १९. प्रेम थापा       | २०. बा                | २१. बुबा           |
| २२. संकर दाइ         | २३. भुपि र हरिभक्त    | २४. महाकवि देवकोटा |

२५. मंगल सर

२६. राजा महेन्द्र

२७. राजा विरेन्द्र

२८. माया दिदि

२९. रामकृष्ण दाइ

३०. लेखनाथ र सम

३१. सुधपा

३२. बंगालिन सहपाठि र भास्कर बाबु

माथिका निबन्धमा आफ्नो भाषिक आन्दोलन अधु-लिपिको प्रयोग पाइन्छ । 'विक्रम संवत् २०१९-२० तिर तारानाथ शर्मा, बालकृष्ण रूपावासी र नगेन्द्र शर्माले लिपि-सुधार बारे निकै लिखित तर्क-वितर्क पेश गरिसक्नु भएको रहेछ । बलकृष्ण पोखरेलद्वारा लिखित नेपाली भाषा र साहित्य नामक पुस्तकमा पनि नेपाली लिपि सुधारने हो भने भन्ने शीर्षकमा यस्तै-यस्तै कुराको राम्रो चर्चा गरेको पाइन्छ । शर्माले आफ्नो लघु लिपिको प्रयोग यसै खण्डमा सफल रूपमा प्रयोग गरेका छन् ।

सम्झाउनि बिसाउनिको यस खण्डमा निबन्धहरूमा कल्पना, भावना र विचारको समन्वय सँग सँगै समयअनुसार साहित्यिक र राजनैतिक इतिहास पनि काँधमा बोकेर हिडेको पाइन्छ । जीवनको गोरेटोमा अधि बढ्दै जाँदा पाइएका संघर्षका घुमाउरनहरू, रमाइला क्षणहरू, रसिला पलहरू, आत्मीयताका स्पन्दनहरू, तीता-मीठा अनुभवहरू, अश्चर्य र आनन्दका स्पर्शहरू तथा मानसमनबाट नभेटिने केही प्रतिबिम्बहरूलाई सम्झिएर, सँगालेर साहित्यिक कोसेलीको रूपमा, समाजलाई उनले निबन्धका रूपमा दिएका छन् । उनको जन्मथलो, शिक्षाथलो, कर्मथलो क्रमशः खर्साङ्ग, दार्जिलिङ, नक्सलवारी, कलकत्ता र काठमाडौं सेरोफेरोका रमणीय साथी-संगी, गुरुजन, आफन्तहरू बीच रुमलिएका महारथीहरूको संस्मरणहरू नै यस खण्डका निबन्धहरू देखिन्छन् ।

### ४.५.३ समीक्षात्मक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा समीक्षात्मक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका समीक्षात्मक निबन्ध 'निम्ताकार देशहरू' : खण्ड-१ निबन्धको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

नगेन्द्र शर्माको व्यक्तित्वबाट नै हामीलाई धेरै कुरा थाहा भइसकेको छ । उनले विभिन्न समयमा विभिन्न देशहरूको भ्रमण गर्ने अवसर पाएका छन् । यस खण्ड-१ मा निम्ताकार देशहरू शीर्षकमा ६ वटा यात्रा निबन्धहरू रहेको छन् -

१. युरोप,
२. थाइलेन्ड, मलेसिया, सिंगापुर र हङ्कङ्,
३. इरान र युगोस्लाभिया,
४. कोरिया, चीन, जापान र पिलिपिन्स,
५. नयाँ मुलुक,
६. पाकिस्तान र भारत

यी सम्पूर्ण निबन्धहरू शर्माका यात्रा संस्मरणात्मक नै हुन् । शर्माको व्यक्तित्व विभिन्न प्रकारको हुँदा उनी ती सबैबाट फाइदा उठाउँदै विदेश भ्रमणमा जाने कुराको प्रमाण स्वरूप यी निबन्धहरू लेखिएका हुन् । शर्माले सञ्चारकर्मी, लोकगाथा-कथा विशेषज्ञ, राजकीय भ्रमण टोलीको सदस्य, नेपाल र विदेशको हवाई यातायात सम्बन्ध स्थापना गर्ने सम्झौताकार, औद्योगिक प्रतिष्ठानहरूको शीर्षस्थ व्यक्ति, आदिका रूपमा र आफ्नै हनिमुन मनाउने क्रममा विभिन्न देशहरूको निम्तो खाँदै, आतिथ्यमा रमाउँदै, पर्यटन-स्थलहरूको दृष्य उपभोग गर्दा-गर्दै पनि भित्री आँखा र मष्तिस्कले ती देशहरूको सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक तथा चारित्रिक अध्ययन गरिरहेको कुरा निबन्धका रूपमा हाम्रो अगाडि राखिदिएका छन् ।

#### ४.६ छ्वासमिस-मासमिस कृतिको विश्लेषण

साहित्यकार नगेन्द्र शर्माको नौलो अन्दोलन स्वरूप सुरु भएको लघु निबन्धको दोश्रो सङ्ग्रह छ्वासमिस-मासमिस हो । यस सङ्ग्रहको पाण्डुलिपि तयार गर्दा हिमालदेखि रामसेतुसम्म नामकरण गरिएको र पछि छ्वासमिस-मासमिस राखिएको पाइन्छ । यस सङ्ग्रहमा हिमाल र

सोको दक्षिणी क्षेत्रकै प्राचीन कुराहरू लगायत हिजो-आजका केही कुराहरूको पनि चर्चा गरिएको छ । यस सङ्ग्रहमा समावेश गरिएका धेरैजसो लघु-निबन्धहरूमा हाम्रा विभिन्न धर्मग्रन्थ र पुराणहरूबारे टिप्पणी र आलोचना लगाएत प्राचीन समाज व्यवस्था, कर्मकाण्ड आदिका राम्रा र नराम्रा कुराहरू पाइन्छन् । त्यस्तै केही पौराणिक व्यक्तित्वहरू र प्राचीन पुस्तकहरू जस्ता शीर्षक पनि परेका छन् । यस सङ्ग्रहमा सातवटा परिच्छेद छन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धहरू परिच्छेद अनुसार फरक-फरक खालका छन् । त्यसकारण निबन्धको अध्ययन पनि परिच्छेद अनुसार नै गर्न राम्रो देखिएकोले त्यसै अनुसार गरिएको छ । यस सङ्ग्रहका निबन्धहरूमा पनि विषयगत विविधता पाइन्छ । जुनसुकै विषयमा पनि विचार संप्रेषण गर्ने एकमात्र साहित्यिक निबन्धलाई उनले मूल रूपमा रुचाएको कारण पनि आफ्नो अध्ययन र अनुभूतिलाई व्यक्त गर्नुलाई देखिन्छ । यस सङ्ग्रहका विषयवस्तु, प्राचिन पुस्तकहरू, केही पौराणिक व्यक्तित्वहरू, पढे-सुनेका धर्ममतहरू, छिमेकी भाषा साहित्यहरू आदि देखिन्छन् ।

#### ४.६.१ पौराणिक आत्मपरक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा पौराणिक आत्मपरक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका पौराणिक आत्मपरक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### (१) परिच्छेद-२ केही प्राचिन व्यक्तित्वहरू

यस परिच्छेदमा परेका उपशीर्षकका निबन्धको अध्ययनमा पनि रामलाल अधिकारीले भनेभैँ आफ्नो बौद्धिकता प्रदर्शन गर्न निबन्धकार सफल देखिन्छन् । हामीहरूले अन्यत्र पाएको धारणाभन्दा भिन्न अर्थमा निम्न व्यक्तिहरूलाई आफ्ना निबन्धहरूमा प्रस्तुत गरेका छन् -

- |                            |                            |             |
|----------------------------|----------------------------|-------------|
| १. अगस्त्य                 | २. अर्जुन                  | ३. इन्द्र   |
| ४. कर्ण                    | ५. कुबेर                   | ६. कृष्ण,   |
| ७. चार्वाक                 | ८. द्रौपदी                 | ९. जनक      |
| १०. व्यास                  | ११. दक्ष, दुर्योधन र द्रोण | १२. ब्रह्मा |
| १३. मनु                    | १४. वशिष्ठ र विश्वामित्र   | १५. रावण    |
| १६. उद्दालक, उशीनर र उतथ्य |                            |             |

यी व्यक्तित्वहरूलाई आजसम्म हामीले पढे सुनेका भन्दा पनि नयाँ रूपमा चिनाएकाले निबन्धकार शर्माको बौद्धिकता प्रस्टिन्छ ।

(२) परिच्छेद-३ पढे-सुनेका धर्ममतहरू

यस परिच्छेदको शीर्षक अनुसारकै उपशीर्षकहरू रहेको पाइन्छ । ती उपशीर्षकहरू निम्न छन् -

- |                       |               |             |
|-----------------------|---------------|-------------|
| १. खीष्टत्व           | २. जैनत्व     | ३. जोसमनी   |
| ४. तन्त्रत्व          | ५. नास्तिकत्व | ६. बौद्धत्व |
| ७. वैष्णवत्व          | ८. त्यागत्व   | ९. सनत्व    |
| १०. शाक्तत्व र शैवत्व |               |             |

यी शीर्षकमा निबन्धकारको आफ्नो बौद्धिकता घोलिएको छ ।

## ४.६.२ समीक्षात्मक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा समीक्षात्मक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका समीक्षात्मक निबन्ध 'परिच्छेद-१ प्राचीन पुस्तकहरू' निबन्धको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

यस परिच्छेदमा निबन्धकार शर्माले बाह्रवटा प्राचीन पुस्तकसम्बन्धी उपशीर्षकमा लघु-निबन्धहरू लेखेका छन् । शर्माले यस परिच्छेदमा वा यस सङ्ग्रहमा नै आफ्नो बौद्धिकता प्रकट गरेका छन् -

'श्री नगेन्द्र शर्मा लिखित हिमालदेखि राम-सेतुसम्म (पछि छासमिस-मासमिस) को पाण्डुलिपि अद्योपान्त हेरौं । निकैवेर रिडटा लागिरहयो । मानिसले किन यति विघ्न कुरा जान्नु परेको ? जानेको कुरा किन गिदीमा भण्डार बनाएर थुपारिरहन परेको ? देखे-जाने-सुने-पढेका कुराहरूमा निष्कर्ष किन निकाल्नै परेको । (रामलाल अधिकारी पृ. १२) अधिकारीले भनेभैं शर्माको गिदीवाट प्राचीन पुस्तकहरूका बारेमा आफ्नो अध्ययनको बौद्धिकता प्रस्तुत गरेका छन् :-

- |                     |                                |                      |
|---------------------|--------------------------------|----------------------|
| १. अर्थववेद         | २. आरण्यक                      | ३. उपनिषदहरू         |
| ४. ऋग्वेद           | ५. निकाय, पिटक र सूत्र साहित्य | ६. गीत गोविन्द       |
| ७. भगवद्गीता        | ८. महाभारत                     | ९. यजुर्वेद र सामवेद |
| १०. रामायण १, २ र ३ | ११. कथा विधा                   | १२. नाटक-विधा        |

### ४.६.२.१. व्यक्ति समीक्षात्मक

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा व्यक्ति समीक्षात्मक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका व्यक्ति समीक्षात्मक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

(१) परिच्छेद ४ पुरखा अधिका

यस परिच्छेदलाई मुख्य २ खण्डमा विभाजन गरिएको छ । पहिलो खण्डमा भारत र नेपालका चर्चित केहि व्यक्तित्वहरू भनेर त्यस्ता व्यक्तित्वहरूको जीवनी दिइएको छ । जसले आधुनिक हिन्दू समाजका विकार र विकृतिहरू फ्याँकेर नयाँ समाज र संसारको सृजना गर्न, आजका युवा- पिढीहरू तथा पाश्चात्य संस्कार र सभ्यतामा भन-भन भासिँदै जानसक्ने भोलिका सन्तानहरूलाई सत्मार्गमा ल्याउने उद्देश्य राखेको देखिन्छ । ती निम्नानुसार पाइन्छन् -

१. नागार्जुन

२. सिरिजंगा

३. बुद्ध,

४. भारवि

५. पद्मसंभव र मिलारेपा

यसै परिच्छेदको दोश्रो खण्डमा समाज सुधार र राजनीतिक पुनर्जागरणका पन्ध्र भारतीय अग्रणी व्यक्तित्वहरू भनेर अठारौँदेखि बीसौँ शताब्दीका प्रमुख भारतीय समाज सुधारक र स्वाधीनता संग्रामका अग्रणी व्यक्तिहरू समाविष्ट गरिएको छ । यी निबन्धहरू निबन्धकारका बुबाको डायरीबाट टिपोट गरी लघु निबन्धको आकारमा ढालेकोले वर्णानुक्रम अनुसार नभएर समयक्रम अनुसार राखिएको पाइन्छ ।

“अब यस पुस्तकमा समावेश गरिएको पुरखा अधिका परिच्छेद बारेका केही कुरा र त्यस परिच्छेदको (२) मा अठारौँदेखि विसौँ शताब्दीका केही प्रमुख भारतीय समाजसुधारक र स्वाधीनता-सङ्ग्रामका अग्रणी व्यक्तिहरू समाविष्ट छन् । तर ति निबन्धहरू मेरो मौलिक रचना होइनन् । मैले त बुबाको एउटा डायरीमा पाएका टिपोटहरूलाई लघु निबन्धको आवरणमा ढालेको मात्र हुँ । ... साथै मेरा अरु लघु निबन्धका शीर्षकहरूलाई वर्णानुक्रममा राखेको हुनाले यहाँ पनि त्यही दोहोर्‍याएको छु । केवल बुबाको डायरीमा आधारित अरु निबन्धहरू चै समयक्रमको आधारमा भएकाले मैले त्यो समयक्रमलाई तलमाथि गर्नु उचित ठानिन (नगेन्द्र शर्मा, छासमिस-मासमिस पृ ४-५)। यस परिच्छेदका निबन्धमा निबन्धकारको भन्दा उनको बुबाको योगदान बढी पाइन्छ । ती निबन्धहरू यसप्रकार छन् -

१. राजा राम मोहन राय

२. महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर

३. केशवचन्द्र सेन

४. दयानन्द सरस्वती

५. स्वामी विवेकानन्द

६. दादाभाइ नवरोजी

७. बकिम चन्द्र चटर्जी

८. राणाडे र गोरखे

९. सैपद अहमद खान

१०. लाल लाजपत राय

११. बाल गंगाधर तिलक

१२. अरविन्द घोष

१३. मोहम्मद इकबाल

१४. महात्मा गान्धी

१५. मोहम्मद अलि जिन्नाह

यी निबन्धबाट विभिन्न प्रकारको प्रेरणा हामी लिन सकिन्छ ।

## (२) परिच्छेद-६ पूर्व र पश्चिम

निबन्धकार नगेन्द्र शर्माको लघु-निबन्ध सङ्ग्रह छासमिस-मासमिस अन्तर्गत पनि सोह्र पृष्ठमा फैलिएको यस निबन्धलाई लघु-निबन्धमा समावेश गर्न सकिँदैन । यस निबन्धमा आफ्ना मित्र अमर गुरुङको गीत र अंग्रेजी कवि रूड्यार्ड किप्लिङको भनाइबाट सुरु गरिएको छ -

“म अम्बर हुँ तिमि धरती, जति चाहे पनि हाम्रो मिलन कहिल्यै नहोला ।” त्यस्तै विचार अंग्रेज कवि रूड्यार्ड किप्लिङको पनि रहेको छ । उनी भन्दछन् पूर्व पूर्वो हो, पश्चिम पश्चिमै, यी दुईको मिलन कहिल्यै नहोला ।” यसपालाको मेरो निबन्ध किप्लिङका तिनै पंक्तिहरूको धुरी वरिपरि घुमेको छ र तिनको भाव विपरीत जान चाहेको छ (नगेन्द्र शर्मा छासमिस मासमिस पृ. ४-५) ।

यसरी निबन्धकारले यस निबन्धमा आफ्नो आइ.एस.सी.को पढाइसन्दर्भदेखि फ्रिटजोफ काप्रा, ग्यालिलियो, सिगमण्ड फ्रायड, कार्लजुंग, डेभिड बोहम, रूपर्ट शेल्ट्रेक, चार्ल्स डार्विन, केन विल्बर आदिका विचार तथा पूर्वीय वेद, देवान्त, उपनिषद, तन्त्रविद्या आदिमा प्रस्तुत

शारीरिक र पार्थिव पक्ष लगायत केही मनोवैज्ञानिक र सामाजिक पक्षहरूलाई प्रस्तुत गरेका छन् । ‘प्रख्यात वैज्ञानिक आइन्सटाइनले पनि “विज्ञानको उत्कर्ष नै आध्यात्मिकता हुनसक्छ” भन्ने दुरदर्शी अभिव्यक्ति गरेका छन् - यो हामीले पुनः सम्झनु सान्दर्भिक हुनेछ, भनेर निबन्धकार पूर्व र पश्चिमको मिलन क्रम क्रिप्लिडको भविष्यवाणी विपरीत अब रोकेर रोकिने सम्भावना छैन भन्ने वैज्ञानिक ठोक्नुको समर्थन गरेका छन् ।

### (३) परिच्छेद - ७ समवेदना

यस परिच्छेदको समवेदना अन्तर्गत रमाइला, रौसे, रामलालजी अर्को शीर्षक राखिएको छ । जसमा यसै सङ्ग्रहको भूमिका लेख्ने र सम्पादन गर्ने कार्य गरेका रामलाल अधिकारी प्रति समवेदना प्रकट गरिएको छ । अधिकारीको र शर्माको सम्बन्ध उनीहरूको विरामी अवस्थाको भेट र मृत्युको खबर आदि कुरा यस निबन्धमा समेटिएका छन् ।

### ४.६.२.२ भाषा व्याकरण समीक्षात्मक

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रह भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्ध परिच्छेद-५ छिमेकी भाषा साहित्यहरू निबन्धको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

यस परिच्छेदमा निबन्धकारले हाम्रा नजिकका छिमेकी भाषा र साहित्यसम्बन्धि विषयलाई निबन्धको रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । ति निबन्धहरू यसप्रकार छन् -

|           |            |                  |
|-----------|------------|------------------|
| १. असमिया | २. अस्टिक  | ३. उर्दू         |
| ४. कन्नड  | ५. तमिल    | ६. तेलगु         |
| ७. द्रविड | ८. प्राकृत | ९. बंगला         |
| १०. मराठी | ११. मलयालम | १२. हिन्दी १ र २ |

निबन्धकारले हाम्रा छिमेकी भाषा-साहित्यसँग परिचित गराउन यी निबन्धबाट सफल भएको देखिन्छ ।

#### ४.७ अनुस्मरण निबन्ध सङ्ग्रहको विश्लेषण

शर्माको चौथो प्रकाशित कृति अनुस्मरण (२०६८) निबन्धसङ्ग्रह हो । यस सङ्ग्रहका निबन्धहरूमा पनि विषयगत विविधता पाइन्छ । जुनसुकै विषयमा पनि विचार प्रक्षेपण गर्ने एकमात्र साहित्यिक विधा निबन्धलाई उनले मूल रूपमा रुचाउनाको कारण पनि आफ्ना जीवनको भोगाइ र अध्ययनको चिन्तनबाट प्राप्त बौद्धिकतालाई व्यक्त गर्नुलाई देखिन्छ । उनका निबन्धमा व्यक्त गरिएको विषय वैज्ञानिकतामा आधारित र रुढिवादी छन् । यस सङ्ग्रहमा समाजमा अझै जूकोभैँ टाँसिएर रहेका घृणित रुढिहरूलाई विषयका रूपमा लिएर आफ्नो चतुरतापूर्वक तर्क, दृष्टिकोण प्रयोग गर्दै गतिलो भाषण दिएर पाठकलाई पत्यार लाग्दो रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् ।

#### ४.७.१ आत्मपरक निबन्ध

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा आत्मपरक निबन्ध यस प्रकार रहेको छ । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेको आत्मपरक निबन्ध 'घर र घरजम' निबन्धको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :-

नगेन्द्र शर्माको अनुस्मान निबन्ध संग्रहमा संग्रहित अर्को निबन्ध हो घर र घरजम । यस निबन्धमा निबन्धकारले मानिसलाई घर किन्ने र विवाह गरी घरजम बसाउने कुरा लेखिएको समयमा हुँदोरहेछ भन्ने कुरा यस निबन्धको विषयवस्तु रहेको छ ।

यस निबन्धमा निबन्धकारले आफू बस्ने घर किनेको जीवन साथी पाएको कुरालाई विषयवस्तु बनाएर लेखेका छन् । वि.सं. २०२४ सालमा निबन्धकारलाई घर किन्ने र घरजम गर्ने साइत एकैपल्ट जुरेछ । यो एउटा संयोग नै हुनुपर्दछ । निबन्धकार बसेको घरवेटीसँग बेलाबखतमा भैँ-भगडा भईरहने भएकोले उनलाई एउटा काठमाडौँमा घर किन्न मन लाग्यो । तँ चिता म पुऱ्याउछु भने भैँ निबन्धकारलाई सोमप्रसाद गौचनले एउटा पुरानो घर विक्रिमा छ

भन्ने सूचना दिए । निबन्धकारलाई त्यो घर किन्न मन लाग्यो तर उनीसँग पैसा थिएन । अफिसको संचयकोषबाट ऋण लिइ बैनाबट्टा गरे अरू पैसा पछि दिने शर्तमा । अरू पैसा बुबाआमाले पठाइदिनु भयो र उनको त्यो घर आमाको नाममा पास गरे । त्यही समयमा उनको घरजम बसाइदिन बिहेको कुरा उठ्न थाल्यो । साथी मार्फत एउटी डाक्टर केटीसँग विवाहको कुरा चल्यो तर ती डाक्टरको अर्कैसँग कुरा चलिसकेको रहेछ । निबन्धकार गौचर विमानस्थल आ.एन.सी. अफिस गएको बेला एउटी युवती माथि दृष्टि पर्यो । उनी डा. डिल्लरमण रेग्मीकी छोरी रहिछन् । उनी राणा विरोधी भएका कारण प्रवासमा नै बस्दा रहेछन् । उनकी छोरी मामाघरमा नै हुर्की बढेकी र पढेकी रहिछन् । निबन्धकारले उनको बारेमा साथी भाइ मार्फत जानकारी लिदैगहे । उत्तमजीको बैठक कोठामा हुनेवाला श्रीमतीसँग परिचय भयो । उनी संस्कृत विभागमा सङ्गीत अन्वेषक पदमा कार्यरत थिइन् । निबन्धकार लेख रचना छपाउन जाँदा त्यो विभागमा जाँदा अफिस छुट्ने समयमा पुग्दथे र उनीसँग भेट हुन्थ्यो । भेट हुने क्रममा मायामोह विस्तारै बढ्दै गयो । सो मायाप्रेम बढ्दै जाने क्रममा बिहेमा परिणत भयो निबन्धकारको घर र घरजम एकै समयमा भएको कुरानै यस निबन्धको विषय वस्तु रहेको छ ।

#### ४.७.१.१ सामाजिक आत्मपरक निबन्ध

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा सामाजिक आत्मपरक निबन्ध यस प्रकार रहेको छ । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेको सामाजिक आत्मपरक निबन्ध 'जङ्गला मुलुक भनेर नहेप' निबन्धको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

नगेन्द्र शर्माको अनुस्मरण निबन्धको दोस्रो निबन्ध हो 'जङ्गला मुलुक भनेर नहेप' । यस निबन्धमा निबन्धकार हजुरवासँग पुख्रौली स्थल तेह्रथुम गएको त्यहाँको जनजीवनको चित्रण उतारेका छन् । पहिले देखी नै समाजमा रही आएको धनी गरिव बीचको विभेद यसमा प्रस्तुत गरेका छन् । उनका हजुरबा तेह्रथुमबाट खरसाड जानु परेको कारण उल्लेख गरेका छन् । घर मुन्तिर एउटा ठूलो खेत थियो रे त्यो एक जना बाहुन महाजनकोमा बन्धकी राखेको साहुले खान लागेको र एक पटक मुग्लान तिर पुगेर कमाई गर्न पाए साहुको हातमा परेको खेतबारी उकास्न सकिन्थ्यो भन्ने विचार छदा छदै गाउँघरमा हैजा महामारी फैलिएको र त्यसबाट छोरालाई बचाउन भनी मुग्लान पसेका थिए रे, उनी खरसाड पुगेछन् त्यही निबन्धकारको जन्म भयो ।

निबन्धकारको बुबा तेहथुमलाई जङ्गला मुलुक भनेर फर्कीएनन् । हुन पनि त्यस समयमा नेपाल विकासको बाटोमा भर्खरै लम्कदै गरेको अवस्थामा तेहथुम जान रेल गाडीबाट भरेर ७/८ दिनमा मात्र हिडेर पुगिने, बाटोघाटो पनि सानो गोरेटो मात्र, पानी वक्तिको व्यवस्था नभएकोले दियालोको सहायताले घरधन्दा गर्नुपर्ने, त्यसैले होला निबन्धकारको बुबाले तेहथुमलाई जङ्गला मुलुक भनेर नर्फीएका होलान । तेहथुममा धनीको घरमा त घानको भात पाक्दो रहेनछ भने गरिब गुरुवाको हालत के होला ? भन्ने प्रश्न गरेका छन् । यस निबन्धको विषयवस्तु रहेको छ । तेहथुमबाट घर खसाड फर्कदा इलाम आएपछि हजुरबाले 'हरे माइला, पहाडी जीवनयापन मैले तँलाई देखाइहाले आफू पढाई लेखाई सिध्याए पछि यी गाउँलाई तिमेरले बाबुले भैं जङ्गला मुलुक भनेर नहेप्नु । केही गर्न सकिन्छ भने गर्नु भन्नु भएको छ । पहाडी जीवनचर्यालाई चित्रण गर्नु यस निबन्धको विषयवस्तु रहेको छ ।

#### ४.७.१.२ नारी समस्यामूलक आत्मपरक निबन्ध

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा नारी समस्यामूलक आत्मपरक निबन्ध यस प्रकार रहेको छ । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेको नारी समस्यामूलक आत्मपरक निबन्ध 'आशक्तिको आयाम' निबन्धको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

नगेन्द्र शर्माको 'अनुस्मरण' निबन्धसङ्ग्रहमा संग्रीहित अर्को निबन्ध हो 'आशक्तिको आयाम' । यस निबन्धमा एउटी अवला नारीलाई प्रेमको रासलिला रचाएर बीचैमा अर्ध कल्चो पारेर छाडेको कुरालाई विषयवस्तु बनाइ लेखिएको छ । निबन्धकार आर.एन.एसी.मा जागिर खादा महिनै पिच्छे जस्तो काठमाडौं वाहिर निरिक्षण गर्न जानु पर्थ्यो । यसै क्रममा उनी कलकत्ता पुगे एक दिन पन्जाव क्लवको रमभमबाट १२ वजे राती निस्कदा गाडीमा जादै गर्दा गाडी अगाडीको विजुलीको पोलमा ठोक्कर खाइ दुर्घटनामा परे । निबन्धकारलाई आशाले कोठा भित्र लगिन र तौलियाले पानीमा चोपल्दै भिक्दै रगत पुछ्दै गरीन । उनलाई नर्सीडमा भेट्न आउने महिलासँग उनको प्रेम हुन थाल्यो । नर्सीड होमबाट सीधै उनीसँग घर गए । उनीसँग विभिन्न ठाउँमा घुमघाम गरे । उनीहरूले मन्दिरमा घुम्न गएका बेला उनीले मन्दिरमा पूजा गरेर फर्किएर निबन्धकारलाई माला लगाई दिन र निहुरे दुवै खुट्टा समाउन खोज्दा निबन्धकारले दुवै काँधामा समाएर उठाएर पुजारीको हातको थालीबाट अविर भिक्की सीउदोमा सजाइ दिए ।

यसरी उनीहरू बीच सामिप्य बढ्दै गयो । निबन्धकार कलकत्तामा बसुँजेल ती महिलासँग निकै नै रमाइला क्षणहरू बिताए । उनीहरूको प्रेम भन गाढा हुँदै जानथाल्यो । त्यही समयमा निबन्धकार कलकत्ताबाट काठमाडौँ फर्किनुपर्ने भयो । उनीलाई एकलै छोडेर काठमाडौँ जाने निर्णय गरे र बाटामा उनीप्रति गरेको अन्याय, अत्यचार सम्झिँदै उनी काठमाडौँ फर्किए । एउटी अबला नारीलाई अर्धकल्चो पारेर छाडेको कुरा नै यस निबन्धको विषयवस्तु रहेको छ ।

#### ४.७.२. संस्मरणात्मक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा संस्मरणात्मक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका संस्मरणात्मक निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

##### (१) 'बुढा बा सँगको बिछोड' निबन्ध

नगेन्द्र शर्माको अनुस्मरण निबन्धको पहिलो निबन्ध हो बुढा बासँग बिछोड । तीन शब्दको उनी केटाकेटी हुँदाको बखत नै घरको मूल मान्छे हजुरबा वित्तुभएको कुरालाई लिएर यो निबन्ध तयार गरेका हुन् । घरको मूल मान्छे बित्दा त्यस घरमा आईपर्ने आपत्ति विपत्ति बारेमा उल्लेख गर्दै मानिसको मृत्यु भएपछि गरिने संस्कार सम्बन्धी उल्लेख गरेका छन् । मान्छे मरिसकेपछि सबैभन्दा पहिले हरीयो गोबरले लिपेर त्यस ठाउँमा राखिन्छ, अनि शंख बजाइन्छ । घरछिमेकले थाहा पाएपछि सबै भेला भई त्यस लासलाई मसानघाट तिर लगि दाहसंस्कार गरिन्छ । उसको छोरोले दागवत्ती दिई दाहसंस्कार समाप्त भए पछि १३ दिनसम्म शोकमग्न भई घरदेखि पर गई आफैँ खाना पकाई खाई पितृलाई पिण्ड तर्पण गरी भाडाँ माझि घर फर्कनु पर्छ । १३ दिन घरमा सम्पूर्ण कार्य गरी क्रिया बस्ने काम समाप्त हुन्छ । एकवर्षसम्म बरखी बारी एक वर्षसम्म मृतकलाई तार्ने काम गरिन्छ ।

मानिस मरेपछि आफ्नो रितीरिवाज धर्म-संस्कृति अनुसार कामक्रिया जुठो वार्ने आदि कुरामा सबै जम्मा भई छलफल तर्कवितर्क गरी निष्कर्षमा जे आउछ त्यो अनुसार गर्नु पर्दछ । एकदिन सबै मानिस मर्नु पर्दछ । मरेपछि यिनै रितीरिवाज, संस्कार गर्नु पर्दछ भन्ने कुरालाई निबन्धकारले यस निबन्धको विषयवस्तु बनाएका छन् ।

## (२) बुढेसकालको बज्रपात' निबन्ध

निबन्धकार नगेन्द्र शर्माद्वारा लिखित अनुस्मरण निबन्ध सङ्ग्रह भित्र संग्रहित अर्को निबन्ध हो 'बुढेसकालको बज्रपात' । मानिसको निधन अवश्य छ कोही बुढेसकालमा त कोही बैसमा त कोही केटा केटी उमेरमा मर्दछन । तर यहाँ निबन्धकार आफू बुढेसकाल लागेपछि आफ्नी पत्नीले एकलै छाडेर गएको श्रीमती बिनाको जीवन बताउदा आई परेको दुःख कष्टको विषय नै यस निबन्धको विषयवस्तु रहेको छ । उनको बुढेकालको जीवनमा परेको बज्रपातको वर्णन गरिएको छ यस निबन्धमा ।

२०६६ साल वैशाख १० गते बिहिवारको विहानीमा निबन्धकारको जीवन र परिवारमा सबैभन्दा पीडा दायक एक मार्मिक आघात असामयीक र आकस्मिक दुर्घटना आईपर्यो । निबन्धकारकी श्रीमती १५/२० वर्ष देखी चीनीरोग र प्रेसर रोगले पीडित थिइन । त्यस माथि फेरी अर्को एक नयाँ रोग थपियो त्यो हो बिसने रोग पार्किन्सन । यसको उपचार भनेकै फिजियोथेरापी गराउनु हो । एक दिन निबन्धकारकी श्रीमतीलाई छाती दुखे पछि हतार हतार अस्पताल पुऱ्याइयो तर उनको मृत्यु भइसकेको थियो । मृत्युपछि गरिने हिन्दु धर्म अनुसार दाहसस्कार गरिसकेपछि त्यहाँ एउटा छलफल भयो । छोरालाई त्यही घाटमा नै कपाल काट्ने र नुहाउने तर उसले नमानेपछि घरमा नै नुहाउने र कपाल काट्ने सल्लाह भयो । अनि जुठो बार्ने नुनतेल नखाने, एकछाकी खाने जस्ता कुराले निबन्धकारलाई सतायो किनकी उनलाई डाक्टरले दिनमा ४/५ बोतल पानी नुन राखेर खानु भनेको थियो । यस क्रममा त्यहाँ कुरा उठ्यो लोग्नेले श्रीमतीको जुठो बार्नु पदैन । निबन्धकारलाई लाग्यो हाम्रो समाजमा कस्तो लिङ्ग भेद रहेछ । लोग्ने मरेको भए श्रीमतीको के कस्तो अवस्थाम छ नबुभीकन विचरीलाई नङ्ग्याउ र श्रीहीन बनाउन बेर लाग्दैन्यो । कोही चुरा फोर्न, कोही नाक कान वुच्याई दिन, कोही सिन्दुर पुछ्न तिर लाग्दथिए । १३ दिन सम अलिनो खाएर जुठो बार्नु पर्थ्यो, एक कुरुप , भद्धा, श्रीहीन र श्रृङ्गारहीन विद्यवा भएर, सबैको आखाँको कश्रृङ्गर भएर, अलच्छिना र लोग्ने टोकुइ जस्ता मुटु चिथोर्ने संज्ञा र लाञ्छना वेहोरेर, नरकीय जीवन गुजाउँ, आजीवन रगतको आसु पिउदै बच्नु पर्दथियो ।

निबन्धकारलाई एकलो जीवन जिताउन असाध्यै गाह्रो भएको छ । उनीमा पहिलाको जस्तो आनीबानी, व्यवहार छैन । सबैजना उनको व्यवहारमा परिवर्तन आएकोमा छक्क पर्दछन् । उनीलाई अफिस जान पनि मन लाग्दैन गए पनि १२/१ बजे तिर निस्कने, घरमा पनि बस्न मन नलाग्ने, राती निन्द्रा नलाग्ने जस्ता समस्याले पिरोली रहेको छ । अहिले निबन्धकारसँग केवल श्रीमतीका स्मृती मात्र छन् । बुढेसकालमा श्रीमतीसँग बिछोडिएर बस्नु पर्दाको पिडा यस निबन्धको विषयवस्तु रहेको छ ।

## (२) 'बैसालु वय' निबन्ध

नगेन्द्र शर्माको अनुस्मरण निबन्ध संग्रह भित्र रहेको अर्को निबन्ध हो 'बैसाल वय' । निबन्धकार एस.एल.सी. पास गरे पछि आइ. एस्सी.मा केमिस्ट्र पढेका थिए । त्यसमा फिसु हुन पुगे धेरै मेहिनत पछि फाइनलमा पास गरेर विज्ञान पढ्न कान समातेर अर्थशास्त्र विषय पढे । मास्टर प्रभाकर सेनले उनीहरूलाई चाडपर्वमा पनि घर जान नदिई टुयटोरीयल क्लास गराउथे । स्थायी रूपमा गुरु भएर ईश्वर बराल आउनु भयो । व्यक्तिगत रूपले बराल प्रति कृतज्ञ हुन पुगे । कलेजको संस्कृतिकम कार्यक्रममा लक्ष्मी प्रसाद देवकोटाको 'भिखारी' कविता वाचन गरे पुरस्कार पनि पाएका थिए । उनले पुरस्कारमा उपन्यास पाए । दाजर्लिङमा छुदा उनको पहिलो निबन्ध हाम्रो 'अस्तित्व' भारती पत्रिकामा छापिएको थियो ।

त्यसैताका वृहत् नेपाली विद्यार्थी सम्मेलनमा सहभागी हुन काठमाडौं आए । त्यहाँ विभिन्न ठाउँका साथीभाइसँग चिनापर्ची भयो । सम्मेलन बीचैमा छाडी पटनाबाट काठमाडौं ल्याइएको जहाज फेरी सरकारी कार्यवश कलकता जान लागेकाले उनी त्यही जहाजमा कलकता पहिलो पल्ट पुगे । बैशमा पनि उनी प्रेममा असफल भएको कुरा उल्लेख गरेको पाइन्छ । एउटी मनपराउथे उसको वार्डफ्रेन्डले पिट्यो र अर्को मनपराउथे बिहेको काड हातलग्यो । बैश उमेरमै निबन्धकारको धेरै मानिसहरूसँग भेटघाट भयो कोही राजनीतिक त कोही साहित्यकारहरु । उनको भेट रुपनारायण सिंहसँग पनि भयो । उनीबाट वकालती पेशा वरणन गर्ने प्रेरण पाए । उनको भेट धर्मराज थापासँग पनि हुनपुग्यो । तेन्जिङ शेर्पाको गीत धर्मराज थापाले गाएका थिए । उनी कवि र गायक दुवैमा निकै लोकप्रिय भएकाले निबन्धकार उनीसँग सिक्नको लागि

जनेगर्दथिए । निबन्धकारले वैशमा गरेका काम र भेट भएका मान्छेहरूसँगबाट सिकेका कुरा नै यस निबन्धको विषयवस्तु हो ।

### (३) 'जागिरका जंघारहरू' निबन्ध

नगेन्द्र शर्माको 'अनुस्मरण' निबन्धसङ्ग्रहमा सङ्ग्रहीत अर्को निबन्ध हो 'जागिरका जंघारहरू' । 'जागिरका जंघारहरू' निबन्धमा निबन्धकार आफूले बी.ए. परीक्षा पास भएपछि जागिरको दौडानमा हिँडेको, जागिरमा भएका रमाइला तीता-मीठा कुराहरू, जागिरबाट जीवनमा आएका परिवर्तनहरूलाई विषयवस्तु बनाएर लेखेका छन् ।

उनले बी.ए. परीक्षा पास भएपछि सर्वप्रथम उनी पढेको पुरानो स्कूल पुष्परानी स्कूलमा रु.१००/मासिक तलबमा काम गर्न थाले । त्यो उनको ठुल्दाइ र बुवाको कमाइमा थपथाप गर्दा जीवनशैली उँभो उकास्नमा ठूलो सहयोग गर्‍यो । घरमा विजुलीबत्ती बल्यो, काठको भित्ताले फुर्सद पाए, सँधै सापटी लिनुपर्ने दिनहरू गएकोमा निबन्धकारलाई आफूले पाएको पहिलो जागिरको कमाइबाट ठूलो सुखानुभूती प्राप्त भयो ।

निबन्धकार तीन महिना पछि पुष्परानी र सुकेपोखरी दुवै स्कूलमा पढाउन थाले । त्यसपछि जागीरको सिलसिलामा दार्जीलिङको सरकारीस्कूलमा इङ्लीस पढाउन गए । त्यस ठाउँमा काम गरेको एकवर्ष भएको थियो, बंगाल पत्रिका सम्पादन गर्ने काममा नियुक्त भएर गए ।

निबन्धकार काठमाडौँ आएपछि सर्वोच्च अदालतमा एड्भोकेटको रूपमा काम गर्नथाले । लैनसिंह वाङ्देलेको चित्रकला प्रदर्शनीमा अमेरिका दुतावासका सचिवसँग चिनजान भएका कारण दूतावासमा इकोनोमिक एनालिष्टको जागिर मिल्यो । त्यसपछि नेपाल औद्योगिक विकास निगमको ब्रान्च अफिसरमा जागिर खान पुगे । त्यसपछि जनसम्पर्क विभागको विभागीय प्रमुख भई आठ वर्षसम्म त्यस निगमको जनसम्पर्क मेनेजर, ट्राफिक र सेल्स मेनेजर र वाणिज्य डाइरेक्टर पदहरू समाल्ने अवसर पाए ।

निबन्धकारले सात आठवर्षसम्म विताएका आर.एन.ए.सी.को जागिर निबन्धकारको जीवनका सबैभन्दा रमाइला, रङ्गीन र रउसे क्षणहरू थिए । त्यसपछि पनि उच्च पदमा नपुगेका त होइनन् तर उनलाई जागिरको शिलशिलामा आर.एन.ए.सी.को जागिर नै रमाइलो

लाग्यो । आर.एन.ए.सी.को जागिरमा छँदै बागमती प्रेस खोले । उनलाई सरकारले आर.एन.ए.सी.मा नियुक्त गर्दा विरोधाभाष भएको थियो । यसपछि नेपाल वाणिज्य संघको सचिव भएर दुई वर्ष बिताए । त्यसपछि वन मन्त्रालय अन्तर्गत स्रोत संरक्षण तथा उपयोग आयोजनामा जागिर गरे । त्यो जागिर गर्दा फिल्ड भिजिट गर्न जानुपर्ने भएकोले नेपालका विभिन्न ठाउँको भ्रमण गर्ने मौका पाए । त्यसपछि गोरखापत्र संस्थानको कार्यकारी अध्यक्षको पदमा नियुक्त भए ।

निबन्धकारको जीवनमा जागिरका जंगारहरू धेरै नै काटेका छन् । जीवनमा आठ-दश ठाउँमा जागिर खाए होलान् ति मध्ये अधिकांशमा राजिनामा गरेर छाडे । केवल एक-दुई ठाउँमा खोसुवामा परे । उनले खाएका जागिरको सन्दर्भलाई विषयवस्तु बनाएर निबन्धको रचना गरेका हुन् ।

#### (४) 'वकालती वरण' निबन्ध

निबन्धकार नगेन्द्र शर्माद्वारा लिखित 'अनुस्मरण' निबन्ध सङ्ग्रह भित्र संग्रहित अर्को निबन्ध हो 'वकालती वरण' । कुनैपनि मानिस भित्र विभिन्न क्षेत्रको ज्ञान भएको हुन्छ भन्ने कुरालाई यस निबन्धले देखाउन खोजेकोछ । निबन्धकार भित्र रहेको ज्ञानको खुबीलाई यहाँ प्रस्तुत गरिएको छ । निबन्धकार भित्र वकालत गर्ने पनि खुबी छ, भन्ने विषयवस्तुमा यो निबन्ध तयार गरीएको छ ।

निबन्धकार एउटा साहित्यकार मात्र नभएर उनीसंग वकालत गर्न सक्ने खुबी पनि थियो भन्ने कुरा यस निबन्धबाट थाहा हुन्छ । उनले एल.एल.वी. पास गरेपछि उनको जीवनको नयाँ बाटो सुरुभयो वकालती पेशा एउटा नामुक एडभोकेट श्री गोपाल घटकसँग उनले कामगर्दै सिक्दैगए । घटकले गरको बहस हेर्न उनी अदालतमा नै पुग्दथिए ।

निबन्धकारले वकालती जीवनको कार्यक्षेत्र काठमाडौँ बन्यो । नेपालको ऐन कानून अध्ययन गर्दै जाँदा कम वकिलहरूको आँखा परेको होलान त्यो क्षेत्र निबन्धकारले फेला पारे त्यो हो बौद्धिक र औद्योगिक सम्पत्ति संरक्षणको । उद्योग विभागलाई सहयोग गर्न वकिल वा एडभोकेट हुने निधो गरे हुन त त्यसवेला नेपालमा उद्योगधन्दाको संख्या नै कम भएकाले नेपालमा मार्केट

पाउने सम्भावना चाही शून्य थियो त्यसकार निबन्धकार बजार फैलाउन नेपाल बाहिर चाहार्न थाले । निबन्धकारलाई सरकारले अध्ययन भ्रमणको लागि वेलायत पठाउदा उनका पचास साठी विदेशी क्लाएन्टहरूका फाइलहरू थिए । यसरी निबन्धकारले जीवनमा अपनाइएको वकालती पेशाको वर्णन नै यस निबन्धको विषय वस्तु रहेकोछ ।

#### (५) 'कर्कटरोगसँग कुस्ती' निबन्ध

नरेन्द्र शर्माद्वारा लिखित 'अनुस्मरण निबन्ध संग्रहमा संग्रहित अर्को निबन्ध हो 'कर्कटरोगसँग कुस्ती' । मान्छेको जीवन लाग्ने एक प्रकारको रोग हो कर्कटरोग (क्यान्सर) । यो रोगसँग निबन्धकारले प्रतिकार गरेको कुरालाई विषयवस्तु बनाई लेखिएको निबन्ध हो 'कर्कटरोग संग कुस्ती' ।

निबन्धकार पिसावथैलीको कर्कटरोबाट पिडित छन् । काठमाडौंमा चेकअप गरेपछि मात्र कर्कटरोग(क्यान्सर) रहेको जानकारी भयो । पाटनका डाक्टरले अपरेसन गर्न सल्लाह दिए पछि साथी भाइसँग सल्लाह गर्दा एकपटक अपरेसन गर्नुभन्दा पहिला डा. जगदीशलाल वैद्यको सल्लाह लिनुपर्ने कुरा बताएर । निबन्धकार डा. वैद्यलाई भेटनगए उसले कुनै कुरा सोधखोज चेकअप नगरी अपरेसनको तयारी गरिदिए । त्यस्तो खालको रोग लागिसकेपछि एक दुइजना डा.को मात्र भर पर्नु हुदैन । अरु डा. हरूसँग पनि सल्लाह लिनुपर्छ । त्यसपछि निबन्धकार भक्तपुर क्यान्सर अस्पताल पुगे । त्यहाँको डा. राजेन्द्र बरालले अल्ट्रासोनोग्राम गर्न सल्लाह दिए । रेडियोलोजिष्ट डा. आनन्द श्रेष्ठले अपरेसन अर्धकल्चो भए जस्तो छ भने, डा. बरालले त्यही कुरा भने, अब तपाईं बम्बाइको टाटा क्यान्सर अस्पताल जानुस म त्यहाँ चिनेको डा.लाई चिठी लेखिदिन्छु र त्यो चिठी र आवश्यक पैसा लिइ निबन्धकार टाटा क्यान्सर अस्पताल पुगेर फेरि अपरेसन गरे । त्यहीताक दशै पनि आइरहेको थियो यता टिचिङ्ग अस्पतालमा छोरा दुर्घटनामा परेर भर्ना गरिएको थियो । निबन्धकारको अपरेसन सफल त भयो तर यो क्यान्सर रोगको अपरेसन एक पटक मात्र गरेर नहुनेहेछ । फेरी फेरी पनि बल्भिरहने आशंका हुन्छ रे त्यसैले पाँच-छ महिनामा चेकअप गरिरहनुपर्ने भएकाले निबन्धकारको कर्कटरोसँगको कुस्ती बाचुञ्जेल सम्म भइरहने भयो । निबन्धकारलाई कर्कट रोगले सताएको छ त्यसको उपचार लामो समयसम्म

गराइराख्नुपर्ने भएकाले यो रोगसँगको कुस्ती निबन्धकार बाचुञ्जेल हुने भयो । यही रोगसँगको वर्णन नै यस निबन्धको विषयवस्तु रहेको छ ।

#### (६) 'गोकर्णको साँभ' निबन्ध

निबन्धकार नगेन्द्र शर्माद्वारा लिखित 'अनुस्मरण' निबन्धसंग्रहमा संग्रहित अर्को निबन्ध हो गोकर्णको साँभ । राजा वीरेन्द्रको राज्यभिषेकको समयमा मेची देखि महाकाली नामक चार पुस्तक छाँपिएकोमा उक्त किताव छाँपिसकेपछि उक्त कार्यमा संलग्न लेखकहरूलाई राजा रानीको तर्फबाट गोकर्ण दरवारमा भएको नाइट पिकनिकमा भएको कुरालाई विषयवस्तु बनाइ लेखिएको निबन्ध हो गोकर्णको साँभ ।

उक्त किताव छपाउन सहयोग गर्ने सबै लेखकहरूको उपस्थिति रहेको थिए गोकर्ण दरवारको नाइट पिकनिकमा । निबन्धकार करिव ७ वजेतिर पुग्दा दृष्यावली रौनकपूर्ण थियो । विभिन्न प्रकारको पकवान तयार भइरहेका थिए, भिलिमिलिले दृष्यहरू देखिन्थिए, सबैजना राजारानीको प्रतिक्षामा बसिरहेका थिए, एकैछिनपछि राजारानीको सवारी भयो । राजाले बेसराहरूलाई पेय पदार्थ वितरण गर्न संकेत गरे र सबैजनाले छानेर पेयपदार्थ, भुट, सितल, क्यसोपी खाना थाले । राजाबाट हुकुम भयो सबैजना पालै पाले आफ्नो खुबी अगाडि आएर देखाउने । निबन्धकारलाई के गर्ने के गर्ने केही गर्न आउदैन । उनको पालो आयो र उनले हाम जायगाको पिस भन्नथाले । पिस भन्दा अलि अलि हाँसे दर्शकहरू आफ्नो वास्तविक घटना भन्दा कोही नहाँसेकाले निहुरेर राजारानीलाई नमस्कार गरेर आफ्नो स्थानका बसे । नाइट पिकनिकको रमभ्रम सिद्धएर घर पुग्दा ३ वजिसकेको थियो । निबन्धकारले गोकर्ण दरवारमा भएको घटनालाई विषयवस्तु बनाइ तयार पारिएको निबन्ध हो गोकर्णको साँभ ।

#### (७) 'जन्मभूमिको पाहुना' निबन्ध

निबन्धकार नगेन्द्र शर्माद्वारा लिखित 'अनुस्मरण' निबन्ध संग्रह भित्र संग्रहित अर्को निबन्ध हो जन्मभूमिको पाहुना । कुनै पनि मानिस भाग्यवसमात्र यस्तो अवसर पाउछ, की आफै जन्मेको देशको सरकारबाट अथितिको निम्तामा निम्त्याइएको पत्र पाउला । यस्तो अवसर निबन्धकारलाई चारपटक मिलेको छ । यही विषयवस्तु प्रस्तुत गर्दा निबन्धको निर्माण भएको छ ।

निबन्धकार आफै जन्मेको देशबाट अतिथिका लागि निम्त्याइएको पत्र ४ पटक आएको छ । पहिलोपटक आर.एन.ए.सी.मा छुँदा भारतले दिल्लीमा आयोजना गरेको प्यासिफिक एरिया ट्राभल एशोसियसन कन्फरेन्समा नेपालको तर्फबाट सहभागीको रूपमा निम्त्याइएको थियो ।

दोस्रोपटक, गोरखापत्रमा छुदा, चार जना 'पाका' नेपाली पत्रकारलाई भारत सरकारले 'देशदर्शन' गराउने भनेर निम्त्याउदा, त्यस निम्तामा निबन्धकार पनि पर्न गइएको थियो । दोस्रोपटक आफ्नो जन्मभूमिमा अथिति बनेर जाने मौका पाए ।

तेस्रोपटक, औद्योगिक व्यवस्थापन लिमिटेडमा छुदाँ पाएकाथिए दिल्ली वरिपरिका नोयडा, ओरन्ला आदि औद्योगिक क्षेत्रहरूको परिभ्रमण गर्नको निम्ति ।

अन्तिमकपटक, चाही बी.पी कोइराला फाउन्डेसनको निम्तोमा लोक साँस्कृतिक सम्मेलनमा भाग लिन गइएको थियो सिलगडीमा ।

निबन्धकारले आफू जन्मेको देशको अथिति भएर जाँदा कलकतामा एक अनौठो स्थितिको सामना गर्नुपरेको थियो । जुन अफिसमा आफू बसेर 'पश्चिम बङ्गाल' नेपाली साप्ताहिक पत्रिका निकाल्थे, त्यही अफिसमा काम गर्ने भद्रलोक गाइडका निम्ति खटिएको रहेछ । निबन्धकारले टाढैबाट उसलाई चिने तर उ भने नबोलेको देखेर उसले चिनेन की क्या हो भनेर सोच्दा 'अस्तित्व दिल्लीबाट गोष्टलिष्टमा तिम्रो नाम देखेर नै मलाई शंका त लागेको थियो । तिम्रीलाई विमानबाट उत्रँदा अनुहारबाटै चिनिहाले । तर फेरी सोचे पहिले यही काम गरेको मान्छे, तिम्रो जन्मभूमि पनि भारत नै हो, कसरी जन्मभूमि वा भारत सरकारको पाहुना हुन सक्छौं भनेर दोधारमा परेर नबोलेको हुँ माफ गर है भने पछि निबन्धकारको आँखा रसाए केही बोलेनन् । अरू देशको पाहुना जो कोही बन्नसक्छ तर आफू जन्मेको देशको पाहुन बन्ने अवसर जे कोहीलाई नमिल्न सक्छ । भाग्यवस यस्तो अवसर निबन्धकारलाई मिलेको छ । आफू जन्मेको भूमिको ऋण तिर्ने धोको कहिले पुरा होला भन्ने निबन्धकारको मनमा सधैँ लागि रहन्छ । नेपालबाट भारत पाहुना भई कार्यक्रममा भाग लिन गएको कुरा नै यस निबन्धको विषयवस्तु रहेको छ ।

### ४.७.३. राजनीतिक निबन्धहरू

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा राजनीतिक निबन्धहरू रहेका छन् । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेका राजनीतिक निबन्धहरू निम्न छन् । ती निबन्धहरूको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

#### (१) 'राणाकालीनक काठमाण्डुमा ' निबन्ध

नगेन्द्र शर्माको 'अनुस्मरण' निबन्ध सङ्ग्रह भित्र संग्रहीत अर्को निबन्ध हो 'राणाकालीन काठमाण्डु' । यस निबन्धमा नेपालमा राणाकालीन शासन हुँदाको कुरालाई विषयवस्तु बनाइएकोछ । नेपालमा राणाकालीन शासन हुदाँ जनताले धेरै नै दुःख पाएका थिए त्यो दुःखबाट जनतालाई मुक्त गर्न धेरै नेताहरू भूमिगत जीवन बिताउनु परेको थिए । निबन्धकारलाई सन् १९४९ मा रमेश उपाध्यायले काठमाण्डु घुम्ने प्रस्ताव राखे उनी हिड्ने बेलामा धरणिधरले एउटा चिठी विराटनगरमा मात्रिकालाई दिनु भनी थमाईदिए । त्यसबेला राजनैतिक कारण मात्रिका भूमिगत जीवन व्यतित गरिरहेका थिए । उनी साधु जस्ता देखिन्थे । निबन्धकारको वी.पि. कोइरालासँग पनि भेट भएको थियो । त्यसबेला नेपालमा विकासको नाममा केही भएको थिएन । काठमाडौँ आउँदा भिमफेदिबाट हिडेर आउनु पर्थ्यो । निबन्धकारले काठमाडौँको मनोरम, आकर्षक र अलौकिक दृष्य देख्दा इतिहासको एक दृष्य सम्झना आयो । पृथ्वीनारायण शाह मकवानपुर ससुरालीबाट फर्कदा उपत्यकाको हरियाली र तीन सहरको दृष्यले मन्त्रमुग्ध भएर यस सुन्दर उपत्यकाको राजा हुन लोभिएका थिए रे । राणाहरूले ओच्छ्राएका गद्दादार गलैचाहरू, भित्तामा सुनौला फ्रेम जडित ऐनाहरू, निबन्धकारलाई पृथ्वीमा नभई अर्को लोकमा भएजस्तो भान भयो, राणाहरूमा यस्तो सुखसयल तर जनतालाई भने खानलाउन पनि दुःख, सबै सुख, मोज मस्ती राणा परिवारमा मात्र दुःख जति जनतालाई मात्र । जनताले राणा शासन विरुद्ध बोल्यो भने जेल हाल्ने, फाँसी दिने गर्दथे । राणाकालीन शासनमा चाकडी, चाप्लुसी चल्दथ्यो । ठूला ठूला पदमा राणाका छोराछोरी मात्र जागिर खानपाउथ्यो । हली गोठालोहरूले शीर उठाएर मात्र पनि हेर्न हुँदैनथ्यो । सर्वसाधारणलाई कोट प्याण्ट लगाउन बन्देज थियो । राणा शासन रहूजेल देशमा केही विकास भएन , जनताले दुःख मात्र पए । यस्तो जनताको दुःख देख्न नसकी राणा शासनको विरुद्धमा वी.पि.कोइराला, मातृकाप्रसाद कोइराला उठेर

जनतालाई जागरुक बनाई २००७ सालमा प्रजातन्त्र ल्याई छाडे । १०४ वर्षे राणकालीन सरकारको अन्त्य भयो र देशमा प्रजातन्त्रको स्थापना भयो । यस निबन्धको विषयवस्तु राणाकालीन शासनकालमा भएका गतिविधि र घटेका घटना रहेकोछ ।

## (२) 'कलमी कसरत' निबन्ध

नगेन्द्र शर्माको 'अनुस्मरण' निबन्ध संग्रहमा संग्रहीत अर्को निबन्ध 'कलमी कसरत' हो । निबन्धकार किशोरावस्थामा पुष्परानी हाईस्कूलमा पढ्दा त्यस विद्यालयमा विद्यार्थीहरूले "छात्र" पत्रिका लेखहरू प्रकाशित गर्दथे, त्यसमा निबन्धकारले पनि सघाउ पुऱ्याउथे । त्यस समयदेखि सुरु भयो निबन्धकारको कलमी कसरत । कलेजमा पढ्दा उनका कविता प्रभत (कलकत्ता) उदय र युगवाणी (बनारस) आदि लेखेका थिए । कलकत्तामा पश्चिम बंगालको कार्यकारी सम्पादक भएपछि उनको पेटपालनको मेलो नै कलमी कसरत भयो । उनको जीविकोपार्जन गर्ने माध्यम नै कलम भयो । कलम चलाएर नै आफ्नो जीवन धान्न सक्ने भए ।

अंग्रेजको क्षेत्रमा उनको कलमी कसरत सन् १९५३ मा प्रकाशित पहिलो गद्य रचना तेन्जिङ : दी टाइगर अफ दी स्नोजबाट भयो । थप प्रेरणा बम्बइबाट प्रकाशित नेपाली लिट्रेचर टुडेबाट मिल्यो । उनका रचनाहरू प्रतिष्ठित पत्रिकामा प्रकाशित हुँद भोक, निद्रा हरायो । अङ्ग्रेजी रचनाको वैशाखी टेकेर पश्चिम बङ्गाल पत्रिकाको उपसम्पादकमा छिर्न सफल भए । उनको नेपाल, सिक्किम, भोटान र दार्जिलिङतिरको राजनीतिमा केन्द्रीत भई तीता, टर्रा र खरा टिका टिप्पणी लेख्दथिए । उनको कलमले राजनीति क्षेत्रलाई पनि बाँकिराखेन । राजा महेन्द्रको राज्याभिषेकको अवसरमा लेख लेख्ने पहिलो अवसर मिलेको थियो । सन् १९९० को अङ्कमा स्थानीय साप्ताहिक विमर्शले एउटा कार्टुन (व्यङ्ग्य चित्र) प्रकाशित गरेको थियो बाँदरको हातमा नरिवल । बाँदर बनाएका थिए संबिधान निर्माता न्यायधीश विश्वनाथ उपाध्याय र नरिवल भनेको प्रजातन्त्र । निबन्धकार आफूले कहिले देखि कलम चलाएर, कुन कुन क्षेत्रमा कलम चलाए कति कविता निबन्ध लेखे सो कुरालाई यस निबन्धमा दर्शाएका छन् । उनको जीविकोपार्जन गर्ने माध्यम पनि कलम नै भएको कुरा पनि यस निबन्धको विषयवस्तुरहेको छ ।

### (३) 'सात, सत्र र छयालीस साल'

नगेन्द्र शर्माको 'अनुस्मरण' निबन्ध संग्रहमा संग्रहीत अर्को निबन्ध सात, सत्र र छयालीस साल हो । यस निबन्धमा सात, सत्र र छयालीस सालमा भएका घटनाहरूको सेरोफेरो नै यस निबन्धको विषयवस्तु रहेको छ । १०४ वर्षे जहानीया राणा शासनको अन्याय, अत्याचार, सहन नसकी जनता राणा शासन विरुद्ध जागरण भएको कुरा देखाइएको छ । यही कुराको सेरोफेरोमा निबन्ध तयार भएको छ । राण शासनमा विकास भने काठमाण्डौं मात्र सीमित थियो । जनता अध्यारो अन्धकारमय जीवन यापन गर्दै थिए । शिक्षाको ज्योती राणाका छोराछोरीका लागि दरवारमा मात्र सीमित थियो । जनता गरिबीको दलदलमा पिल्सीरहेका थिए । जनतालाई सचेत गराउन नेताहरू अगाडी बढे । त्यस्तो गतिविधि भएको जानकारी राणा सरकारले थाहा पाई नेताहरूलाई पक्राउ गर्ने रणनीति ल्याएकाले नेताहरू भूमिगत जीवन बिताउन भारत तर्फ लागे । त्यसबेला नेताहरूसँग निबन्धकारको भेट भयो र नेपालमा भइरहेको गतिविधिको जानकारी नेताहरूबाट भयो र पछि आन्दोलन भएर २००७/११/७ गते प्रजातन्त्र स्थापना भयो यस बेला पनि निबन्धकार भारतमा नै थिए ।

सात सालमा राणा शासनको अन्त्य भई प्रजातन्त्र स्थापना भयो तर राजनैतिक अस्थिरताको कारण देशमा शान्ति सुरक्षाको प्रत्याभूति जनताले पाउन नसकिरहेको बेला सत्र सालमा महेन्द्र राजाले देशमा पञ्चायत व्यवस्था लागु गरे । त्यसबेला निबन्धकार कलकत्ता मै थिए । त्यसबेला नेपाली कांग्रेसको पटना सम्मेलन भएको, सुवर्ण शमसेर कार्यवहाक अध्यक्ष चुनिएको कुरा निबन्धकार सुन्थे ।

छयालीस सालमा निबन्धकार काठमाण्डौं आइसकेका थिए र उनी सरकारी जागिरे नै भइसकेका थिए । ३० वर्षे पञ्चायती शासन जनताको लागि ठिक शासन नभई सामन्ति शोषकहरूको लागि मात्र भयो भन्दै जनता सचेत भई आन्दोलन सुरु गरे । यो आन्दोलनको प्रत्यक्षदर्शी निबन्धकार आफैं बने त्यसबेला । जनताको आन्दोलनले पञ्चायती सरकारको शासन टिक्न नसकी नेपालमा पुनः प्रजातन्त्र स्थापना भयो । छयालीस सालको आन्दोलनका निबन्धकार नेपालमा नै थिए । छयालीस सालको सम्झना निबन्धकारको मनमा टुडकारोसँग बसेको कारण यो छ की 'प्रजातान्त्रीक' सराकार कै कृपास्वरूप उनले आठ वर्ष देखी खाएको जागिरबाट

रातारात हात धुनु परेको थियो । सात सालमा प्रजातन्त्र, सत्र सालमा पञ्चायत व्यवस्था, छयालीस सालमा आन्दोलन गरी पुनः प्रजातन्त्र स्थापना गरेको कुरालाई निबन्धकारले यस निबन्धको विषयवस्तु बनाएका छन् ।

#### ४.७.४. भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्ध

शर्माको प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्ध रहेको छ । प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहमा रहेको भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्ध 'भाषाहरूको भेलमा' निबन्धको चर्चा यसप्रकार गरिएको छ :

नगेन्द्र शर्माको अनुस्मरण निबन्ध संग्रहमा संग्रहीत अर्को निबन्ध हो 'भाषाहरूको भेलमा' । निबन्धकारले यस निबन्धमा आफूले जीवनकाल भरीमा जानेर सिकेका भाषाहरूको वर्णन गरेका छन् । निबन्धकरमा धेरै भाषाको ज्ञान भएपनि मातृभाषाको राम्रो सँग ज्ञान नभएकोमा उनी पिरोलिएको कुरा बताएका छन् । धेरै भाषाको ज्ञान भए पनि सबै भाषाको गहन रूपले ज्ञान नहुदोरहेछ । आफूले जीवनभरमा सिकेका जानेका भाषाको वर्णनलाई विषयवस्तु बनाएर लेखिएको भाषिक निबन्ध हो यो ।

उनी जन्मिने बित्तिकै सिकेको भाषा मातृभाषा नेपाली हो । मातृभाषा बाहेक बाबुबराजुले गरिआएका पुरेत्याँइका कारण संस्कृत भाषा जान्नकर नै थियो । पेट पाल्नका निमित्त भएपनि संस्कृत भाषा जान्नु उनको लागि बाँध्यता नै थियो । रुद्री, चण्डी , सत्यनारायण कथा, स्वास्थानी, कृष्णष्टमी र हरितालिका तीज ब्रत कथाहरू मखस्थै थियो ।

हाइस्कूल पढ्दा अंग्रेजी पढ्नु पर्ने भएकाले उनीलाई अंग्रेजीभाषा पनि राम्रो ज्ञान थियो । साथीभाई मास्टरहरू बंगली भएकाले बंगाल भाषा पनि फाटफुट बोल्न बुझ्न र पढ्न सक्दथिए । हाइस्कूल पढ्दा हिन्दी शिक्षक र पण्डितले हिन्दीभाषाबाट सञ्चालित 'प्रथम'को जाँच दिन लगाए र उनी पास पनि भए यसको कारण उनीमा हिन्दीभाषाको पनि राम्रो सँग ज्ञान भएको हुनुपर्दछ । उनीमा कलकत्ता पुगेपछि उर्दुभाषा पनि थपियो ।

काठमाडौंमा आएपछि नेपालीमा एम.ए. गरे । मातृभाषाको ज्ञानभएको धक्कु लगाएपनि आखिर आएर आज त्यस भाषाबाटै छक्किएको र पिरलिएको कुरा बताउछन् । जीवनका आठ

दशकपुग्न लागदा आजसम्म मातृभाषाको ह्रस्व र दीर्घको सही र शुद्ध प्रयोग गर्न कहिलै नसकेको गुनोसो छ । छोराले पढ्ने नेपाली वर्णमालाको किताव हेरेपछि त्यस कितावमा भएको बाह्रखरीले उनलाई चकित तुल्यायो त्यस अघि कहिलै नदेखेका र नसुनेका कुरा रहेछ । आफ्नै भाषाको परम्परागत बह्रखरीसँग अपरिचित भएकोमा आत्मग्लानि र हीनताबोधले पीडित भएर त्यसैको लाछिपनलाई ढाक छोप गर्न लघुलिपि नाम दिएर भाषा लेख्नथाले ।

उनले लघुनिबन्ध लेखिसकेपछि भाषिक प्रयोग गरी नेपाली भाषालाई नेवारी लिपिमा लेखे यसको कारण नेवारी भाषाको पनि ज्ञान उनीमा रहेछ । उनीमा फ्रान्सीभाषाको पनि ज्ञान भएकोले फ्रान्सभाषामा पुस्तकनै प्रकाशन गरेका छन ।

निबन्धकारले विभिन्न भाषा जस्तै नेपाली हिन्दी अंग्रेजी नेवारी जापानी फ्रान्सी भाषामा आफ्ना कृतिहरू प्रकाशित गरेका छ । त्यसैले निबन्धकारसँग भाषाहरूको भेलनै रहेका कुरा यस निबन्धबाट पुष्टि हुन्छ । उनी भित्र रहेका भाषाहरूको जानकारी दिनु नै यस निबन्धको विषयवस्तु रहेकोछ ।

#### ४.८ फुटकर रचनाको अध्ययन

साहित्यकार नगेन्द्र शर्माले नेपाली भाषामा आठ ओटा, अङ्ग्रेजी भाषामा नौ ओटा र जापानी भाषामा एक वटा गरी विभिन्न कृतिहरूको प्रकाशन गरिसकेका छन् । शर्माका नेपाली भाषाका छ (६) वटा कृतिहरूको सामान्य अध्ययन विश्लेषण अगाडि नै छ तर यहाँ उनकै केही प्राप्त फुटकर रचनाको अध्ययन गरिएको छ - १. काठमाण्डूबाट कायल कटुवाल (संस्मरण - भानु-२०६४ वैशाख), २.भाषा भाँड्ने म- (संस्करण २०६४ मधुपर्क-असार), ३. धनुषदाईको धोको- (संस्मरण २०६४-गरिमा साउन ), ४. निलो नदिमा हरिमा पहाडका छाँया- ( यात्रासंस्मरण-२०६५-मधुपर्क असार) ।

##### ४.८.१ संस्मरणात्मक निबन्धहरू

(१) “काठमाण्डूबाट कायल कटुवाल”

नगेन्द्र शर्माको 'काठमाण्डुबाट कायल कटुवाल' संस्मरणात्मक लेख हो । यो संस्मरण भानु पत्रिकाको हरिभक्त विशेषाङ्क (२०६४ वैशाख) मा प्रकाशित भएको छ । यस संस्मरणमा साहित्यकार नगेन्द्र शर्मा र हरिभक्त कटुवाल सुरुको भेटदेखि काठमाडौँबाट हरिभक्त कटुवाललाई विदाई गर्दासम्मका सामान्य घटनाको सम्झना गरिएको छ ।

नगेन्द्र शर्मा र हरिभक्त कटुवालका बीच पहिलो भेट पोषण पाण्डेले एक रेष्टुराँमा भएको पाइन्छ । नगेन्द्र शर्मा र हरिभक्त दुवै नेपाली मूलका विदेशमा जन्मिएका प्रवासी हुनाले पनि सम्बन्धमा गाढा आएको देखिन्छ । नगेन्द्र शर्माले हरिभक्तलाई विभिन्न क्षेत्रमा सहयोग गर्दै आएको र हरिभक्तले पनि शर्मालाई विभिन्न कार्यमा सहयोग गर्दै अगाडि बढ्ने क्रममा नर्सरीको भ्रमण गरेको पाइन्छ । शर्माले आफ्नो घर अगाडिको केराको गाछ, हरिभक्तले कीर्तिपुरको बागवानीबाट ल्याएर लगाइदिएको र त्यसैले अझ नियमित हरिभक्त आफ्नो आँखैमा भएको भन्दै "फैलिँदै गएको गाछले बाँचुञ्जेल मलाई हरिभक्तको नासोको काम गरिरहनेछ भन्ठानेको छु"(शर्मा काठमान्डूमा कायल कटुवाल : पृ. ५२८) भन्दछन् । नगेन्द्र शर्माले हरिभक्त कटुवाल गीत, कविता र चित्र तीनवटै विधामा उत्कृष्ट रहेको कुरा "तीन ताक गीतकारका रूपमा हरिभक्त जताततै हाइहाइ छँदै थियो । अझ अर्को रमाइलो आश्चर्य त मलाई त्यो दिन लाग्यो, जब हरिभक्तले आफै रचेको एक काव्यात्मक श्लोगन्लाई अत्यन्त आकर्षक चित्रमा पनि उतारे" भनेर आफ्नो संस्मरणमा लेखेका छन् ।

नगेन्द्र शर्माले हरिभक्त र आफ्नो साहित्यिक, स्वभाव तथा साथीत्वका साथै पारिवारिक एक नरमाइलो घटना पनि यस लेखमा लेखेका छन् । शर्माको छोरा सफल तीन/चार वर्षको हुँदा उसको हेरचाहमा एकजना महिला राखेको र ती महिलाको काखबाट कटुवाललाई देखेपछि सफल कटुवालको काखमा जाने गर्दा रहेछन् । त्यसरी छोराले कटुवालको काख रोज्दा शर्मालाई पनि आश्चर्य लाग्दो रहेछ । एकदिन पुतलीसडकको चोकमा बच्चासहितकी ती महिला र हरिभक्तको जम्का भेट भएछ । बच्चा (शर्माको छोरा सफल) हरिभक्तको साथ लागेछ । हरिभक्तले ती सुसारेलाई एकैछिन पछि ल्याइदिने वचन गरेर कटुवाल बच्चालाई बोकेर हिडेछन् तर ती सुसारे महिलाले कटुवाललाई नचिनेर दौडिँ घरमा आएर आत्तिँदै भनिछन् र नगेन्द्रको घरमा खैलाबैला भएछ । यसको केही समयपछि "एक परिचित

व्यक्ति दौडदै आइपुगेछ र भनेछ, लौन, चाँडो जानुस्, त्यो हरिभक्त भन्ने जड्याहाले बाबुलाई टुकुचाको पुलको रेलिङ्माथि बसाएर घरिघरि खोलमा खसाउला जस्तो गर्दैछ । भनेपछि नगेन्द्र शर्मा र केही साथी गएर कटुवाल र छोरालाई खोज्न गएछन् । तर कटुवाल रेष्टुरामा टेबुलमाथि राखेर खेलाइरहेको र बेन्चमा रक्सिको गन्ध भएको खाली गिलास शर्माले भेटेछन् केही नबोली छोरा सफललाई जुरुक्क उठाएर काँधमा राखेर घरतिर लगेछन् । “हरिभक्तले रोक्न खोज्दैथे, केही भन्न पनि खोज्दैथे । नगेन्द्रको छोरालाई हरिभक्तले किड्न्याप गर्न खोजेको थियो रे, भन्यो कसैले । कहाँ त्यतिमात्र टुकुचाको पुलबाटै खसाइदिन लागेको रहेछ । धन्न समयमै मान्छेले देखेछन् र मात्र वच्चो बाँचेछ आदि इत्यादि । त्यस्तै ग्याँईग्याँई जताततै टोलैभरि भएपनि नगेन्द्र शर्मा सम्भन्छन् विचरा हरिभक्तको कुनै दोष छैन । मैले सबैसँग भने बारम्बार तर एकलो वृहस्पति भुटा भएँ म । उल्टो एउटा खस्याहाले अर्को त्यस्तै साथीको दोष ढाकछोप गर्न खोजेको बात लाग्यो म माथि । कसैले त भन्यो पनि ‘खुब थैथै गरेर टाउकामा चढाएर राखेथ्यौ नि जगल्लेलाई, हेदै मुर्कुट्टा जस्तो मोरो . . .” जस्ता आरोप लगाएबाट कटुवालले त्यस टोलबाट आफ्नो बसाई सरेछन् र बिरामी परेका कटुवाललाई बटुटोलको एउटा होटलबाट नगेन्द्र शर्मा र नगेन्द्रराज शर्माले असाम पठाउदा भेट भएको र कटुवाले “अब काठमान्डू फिर्ने आशा मारेर गइरहेको छ, तपाईंहरूले चाँही माया नमार्नुहोला है” । सन् १९८० तिरको कुरा हो यो ।” भनेका कुरा यस लेखमा प्रस्तुत गरेबाट नै नगेन्द्र शर्मा र कटुवालको वास्तविकता स्पष्ट भएको छ । यो संस्मरण वास्तवमै यथार्थ घटनालाई लिएर लेखिएको पाइन्छ ।

## (२) धनुषदाइको धोको

धनुषदाइको धोको नगेन्द्र शर्माको संस्मरण लेख हो । यो गरिमा (वर्ष २५, अङ्क ८, पूर्णाङ्क २९६, साउन २०६४) पत्रिकामा प्रकाशित भएको छ । शर्माले यस लेखमा धनुषचन्द्र गोतामेसँगको पहिलो भेटदेखि मृत्युदेखि आर्यघाटमा पार्थिव शरीरलाई श्रद्धाञ्जली दिँदासम्मको घटना संस्मरण गरेका छन् ।

धनुषदाइसँग पहिलो भेट नगेन्द्र शर्माको कहाँ भयो भन्ने सम्बन्धमा हेक्का नभएको तर श्रीमती सोफियासँगको पुरानो सम्बन्ध गुरु र चेलीको कारण नजिकिने अवसर पाएको देखिन्छ ।

नगेन्द्र शर्मा र धनुषचन्द्र गोतामे बीचको सम्बन्ध सरकारको ठूलो र महत्वपूर्ण पदमा पुग्नलाई पनि नगेन्द्रलाई भन्याइको काम कहीं न कहीं गरेको पाइन्छ । धनुषचन्द्र सूचना विभागको निर्देशक हुँदा शर्मा गोरखापत्र संस्थानको अध्यक्ष भएको देखिन्छ । धनुषचन्द्र नेपाल प्रज्ञाप्रतिष्ठानको उपकुलपति हुँदा प्राज्ञको सदस्य बन्न शर्मालाई आग्रह गरेको तर नमानेको पाइन्छ । शर्मा र गोतामेको सम्पर्क कार्यालय, रेष्टुरा र घरसम्म कुनै समय नियमित जस्तै हुन थालेको देखिन्छ । धनुषचन्द्र गोतामेको 'उत्तरोत्तर' निबन्धसङ्ग्रहमा पनि नगेन्द्र शर्माको बारेमा चर्चा गरिएको छ । नगेन्द्र शर्माले धनुषचन्द्रको मृत्यु हुनुभन्दा तीन दिन अगाडि अर्थात २०६२ मङ्सिर १६ गते उनैको घरमा उनले भनेका कुरा आर्यघाटमा सम्झिएका छन् -

'हिङ्ने बेलामा धनुषदाइले सोध्नुभयो पनि बिसिनु त भएको छैन हगि ? पर्सी नातिकेटो पूर्ण फिर्छ, कलेज जोड्न । अनि बल्ल कम्प्युटर निर्धक्क मेरो डिस्पोजलमा हुन्छ । सिकाइदिने होइन त नेपाली टाइप गर्न ? 'किन नसिकाउने दाई ? म आइहाल्छु नि ।' आउन त आएँ तर आर्यघाटमा र यस्तो बेलामौकामा । अब के सिकाउनु र कहिले सिकाउनु ? उहाँको त्यो धोको अधुरै रहने भयो, मेरो पनि । केही वर्ष अघि धनुषदाइको अर्को पनि धोको थियो उहाँको ख्यातिप्राप्त उपन्यास घामका पाइलाहरूलाई अङ्ग्रेजीमा अनुवाद गराउने ।

#### ४.८.२ भाषा व्याकरण समीक्षात्मक

नगेन्द्र शर्माको आत्मपरक फुटकर निबन्ध **भाषा भाँड्ने म हो** । यो निबन्ध **मधुपर्क** ( वर्ष ४०, अङ्क २, पूर्णाङ्क ४५७, असार २०६४, पृ. १४-७) मा प्रकाशित छ । यो निबन्धमा निबन्धकारको आत्मपरकता बढी नै छ । यसमा निबन्धकारले **पश्चिम बङ्गाल** (सन् १९२४) पत्रिकामा काम गर्न थालेपछि नै भाषामा देखाएको नौलोपनाको चर्चा गरेका छन् ।

**पश्चिम बङ्गाल**मा शर्माको भाषिक प्रयोगलाई भाइचन्द्र प्रधानले सानुमती राईको नाममा शुद्धीकरण गरेर पठाउने गरेको, कमल दीक्षितले दरबारीया भाषाको प्रयोग गरेर राजा महेन्द्रको भ्रमणसम्बन्धी समाचार लेख्न अनुरोध गरेको तर आफूले कुनैपनि परिवर्तन नल्याएको बताएका छन् । शर्माले भाषाकै प्रसङ्गमा आफूले लघुलिपिको प्रयोग गर्दा ञ, ण, त्र, ज्ञ आदि वर्णलाई वर्जित गर्दा धेरैले बहुलट्टीको संज्ञा दिँदा पनि आफ्नो लेखन अगाडि नै बढाएको पाइन्छ ।

शर्माले आफ्नो तर्क वितर्क निबन्ध संग्रहमा नेपाली भाषा नेवारी लिपिको प्रयोग गर्दा बाहुन क्षेत्री साथीका साथै कृष्णचन्द्रसिंह प्रधानबाट समेत भ्रुपराइ खाएको तर आफ्नो भाषिक अभियान अगाडि बढाएको चर्चा गरेका छन् । शर्माले विभिन्न पत्रिकामा लेख, रचना लेख्दा भिन्न भाषामा लेख्ने र धेरै जनाबाट धेरै पटक गाली खाने गरेको पनि यस निबन्धमा बताएका छन् -“पत्रकार भएरै बाँच्नुपर्ने वाध्यता आइलागेपछि त मैले पाइलैपच्छे भनेभैँ गाली खान थालें । मुख्य आरोप भाषा भाँड्न खोजेको वा व्याकरण विथोलेको भने हुन्थ्यो । अघिअघि त कति जनाबाट कतिपल्ट र केकस्ता गाली खाँए यसको हिसाबै छैन ।” शर्मा आफूलाई जो-जोले जतिसुकै गाली गरे तापनि आफूले नछोडेको यसरी प्रस्ट पार्दछन् -“भाषा प्रयोगको क्षेत्रमा मेरो यो लिँडेढिपी गर्ने बानी, उमेर पाको हुँदै जाँदा त सप्रिनु र सुधिनु पर्ने नि । किन कहिल्यै त्यसो नभएको होला ? म आफैँ चकित हुन्छु ।”साहित्यकार नगेन्द्र शर्माले यस निबन्धमा पनि आफ्नो भाषिक अभियानलाई विभिन्न क्षेत्रबाट आक्रमण भैरहेको तर आफू नियमित लागिरहेको बताएका छन्

#### ४.९ निष्कर्ष

शर्माका संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा पनि विषयगत विविधता पाइन्छ । शर्माले जुनसुकै विषयमा पनि आफ्नो विद्वता र अनुभूतिलाई मजासँग फिटेर यस सङ्ग्रहका निबन्धको विषयवस्तु आफ्नै वरपरको सामाजिक परिवेशप्रति दृढतापूर्वक बौद्धिक तर्क गर्दै प्रतिक्रिया जनाउदै पाठकलाई पत्यारलाग्दो बनाउछन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा संस्मरण र व्यङ्ग्यलाई विषयवस्तु बनाइएको पाइन्छ । ‘अतितकालमा आफ्नो जीवनले खेपेका घटनाहरूलाई शर्माज्यूले एकै कोणबाट मात्र प्रस्तुत गर्नुभएको छैन । विवरणात्मक संस्मरण लेखाइ त वहाको आफ्नो रूचिक्षेत्र हुँदै होइन । वहाँ संस्मरण लेख्नुहुन्छ, युगीन यथार्थ उद्घाटन गर्न, घटनाको महत्व दर्शाएर मनोरञ्जन दिने होइन । वहाँ अतितको पृष्ठ पल्टाउनुहुन्छ कालजन्य सभ्यता र मान्यताको परिचय दिन वहाँ पृष्ठ पल्टाउदै जानुहुन्छ र हामी त्यहाँ नेपाली परिवेशका अध्यारा उज्याला पक्षहरू एकपछि अर्को गर्दै देखिदै गएको, जीवन सङ्घर्षको कथा उत्किर्ण हुँदै गएको र मानव जीवनको दुःख सुखको छायाँ प्रतिबिम्बित हुँदै गएको पाउछौँ भन्ने धारणा यस सङ्ग्रहमा पाइन्छ । उनका यस सङ्ग्रहका निबन्धहरू विषयगत गहिराईका दृष्टिले पनि मर्मस्पर्शी छन् ।

भाषा साहित्यिक तथा समीक्षात्मक निबन्धहरूमा पनि विषयगत विविधता पाइन्छ । जुनसुकै विषयमा पनि विचार प्रक्षेपण गर्ने एकमात्र साहित्यिक विधा निबन्धलाई उनले मूल रूपमा रुचाउनाको कारण पनि आफ्ना जीवनको भोगाइ र अध्ययनको चिन्तनबाट प्राप्त बौद्धिकतालाई व्यक्त गर्नुलाई देखिन्छ । उनका निबन्धमा व्यक्त गरिएको विषय वैज्ञानिकतामा आधारित र रुढिवादी छन् । यस सङ्ग्रहमा समाजमा अभैँ जूकोभैँँ टासिएर रहेका घृणित रुढिहरूलाई विषयका रूपमा लिएर आफ्नो चतुरतापूर्वक तर्क, दृष्टिकोण प्रयोग गर्दै गतिलो भाषण दिएर पाठकलाई पत्यार लाग्दो रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । आत्मपरक तथा निजात्मक निबन्धहरूमा आत्मपरक निबन्धमा निबन्धकारले आफ्ना भावसंवेग, अनुभूति र संवेदनालाई बौद्धिक चेतनाको विद्युत शक्ति प्रयोग गरी पाठकलाई जागरुक बनाउने विषयवस्तु प्रयोग गरेको पाइन्छ । त्यस्तै वस्तुपरक निबन्धमा पनि निबन्धकारले आफूभित्रको साहित्यिक संस्कारलाई बिम्भाई-बिम्भाई स्पर्श गर्दै मन र मस्तिष्कको सम्भौतापूर्ण विषयवस्तु पनि प्रयोग गरेको देखिन्छ । विचारपरक निबन्धहरूमा निबन्धसङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले साहित्यिक व्यक्तित्व, लोकसंस्कृति, साहित्य सिद्धान्त आदिलाई निबन्धको विषयवस्तुका रूपमा लिएका छन् ।

## नगेन्द्र शर्माका निबन्धको उद्देश्य

### ५.१ विषय परिचय

प्रस्तुत परिच्छेदमा नगेन्द्र शर्माको निबन्धको उद्देश्यको अध्ययन गरिएको छ । यहाँ उनका 'नगेन्द्रका निबन्ध' (२०२६), 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' (२०२४), 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' (२०४७) र 'अनुस्मरण' (२०६८) जस्ता चार निबन्धसङ्ग्रहका साथै 'सम्झाउनि बिसाउनि' (सन् २००५) र 'छासमिस मासमिस' (सन् २००५) र जस्ता दुई लघु निबन्धसङ्ग्रहका निबन्धको उद्देश्यको अध्ययन गरिएको छ ।

### ५.२ नगेन्द्र शर्माको निबन्धको उद्देश्य

नगेन्द्र शर्माका निबन्धमा विविध उद्देश्यहरू राखिएका छन् । उनका निबन्धमा निबन्धकारले समाजमा भोगेका विविध पाटाहरूलाई सुधार गर्ने उद्देश्य राखिएका छन् । यहाँ उनका प्रत्येक निबन्धका उद्देश्यहरूलाई यस प्रकार देखाइएको छ ।

#### ५.२.१. बौद्धिकता

नगेन्द्र शर्मा बौद्धिकताको प्रयोग गर्ने निबन्धकार हुन् । तार्किकताले सम्पन्न उनका निबन्धहरूमा विषयलाई समालोचकीय कोणबाट हेरिएको पाइन्छ । उनी आफ्ना मनका भाव तथा विचारलाई विवेचना र विश्लेषण गर्दै प्रस्तुत गर्छन् । कुनै पनि गलत मान्यता, संस्कार, भनाइहरूलाई आफ्नो बौद्धिकताको प्रयोग गरेर तार्किक र चित्तबुद्दो तरिकाले गलत साबित गरिदिन्छन् । शर्मा आफ्ना मनका भाव तथा विचारलाई विवेचना र विश्लेषण गर्दै प्रस्तुत गर्छन् । उनका 'नगेन्द्रका निबन्ध' (२०२६), 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' (२०२४), 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' (२०४७) र 'अनुस्मरण' (२०६८) जस्ता चार निबन्धसङ्ग्रहका साथै 'सम्झाउनि बिसाउनि' (सन् २००५) र 'छासमिस मासमिस' (सन् २००५) जस्ता निबन्धमा बौद्धिक उद्देश्य राखिएका निबन्धहरू यस प्रकार छन् :

‘नगेन्द्रका निबन्ध’ निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध गरेका छन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा समीक्षात्मक निबन्धहरूमा, देवकोटाले राखेका कोस-ढुङ्गा’ निबन्ध, ‘काजी नजरुल इस्लाम : एक परिचय’ निबन्ध, भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्धमा ‘उखेलनुपर्ने उखानहरू’ निबन्ध, ‘अ, आ...’ निबन्ध, ‘व्याकरणका बुँदा’ निबन्ध तथा भाषा लोकसाहित्यिक समीक्षात्मक निबन्धमा लोक गीत र लोक नाचहरू’ निबन्धको विश्लेषण जस्ता निबन्धहरू रहेका छन् ।

‘अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म’ भित्रका निबन्धहरूलाई तार्किक र बौद्धिक दृष्टिले उत्कृष्ट निबन्धका कोटीमा राख्न सकिन्छ । त्यसैले उनका निबन्धहरू अरूका निबन्ध भन्दा भिन्न पहिचान राख्न सफल छन् । शर्माको ‘ बोलचालको भाषा, काठमाडौँ र दार्जिलिङ्गमा, नेवारी भाषा, साहित्य, सङ्गीत र कवि गिरी, प्रतिष्ठान र सेमिनार,’ निबन्धहरूमा उनले बौद्धिकताको प्रयोग गरेका छन् ।

‘बनारसमा बेचिएकी बहिनी’ भित्रका निबन्धहरूलाई तार्किक र बौद्धिक दृष्टिले उत्कृष्ट निबन्धका कोटीमा राख्न सकिन्छ । जुनसुकै विषयमा पनि विचार प्रक्षेपण गर्ने एकमात्र साहित्यिक विधा निबन्धलाई उनले मूल रूपमा रुचाउनाको कारण पनि आफ्ना जीवनको भोगाइ र अध्ययनको चिन्तनबाट प्राप्त बौद्धिकतालाई व्यक्त गर्नुलाई देखिन्छ । उनका निबन्धमा व्यक्त गरिएको विषय वैज्ञानिकतामा आधारित र रुढिवादी छन् । ती निबन्धहरूमा भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्धमा म मानिसलाई ईश्वरीय श्रृष्टि मान्दिनँ र साहित्यिक चोरीको पक्षमा जस्ता दुई निबन्ध रहेका छन् ।

‘सम्झाउनि-बिसाउनी’ भित्रका निबन्धहरूलाई तार्किक र बौद्धिक दृष्टिले उत्कृष्ट निबन्धका कोटीमा राख्न सकिन्छ । ती निबन्धहरूमा ‘निम्ताकार देशहरू’ : खण्ड १ निबन्ध रहेको छ ।

‘छासमिस-मासमिस’ उनी भित्रका निबन्धहरूलाई तार्किक र बौद्धिक दृष्टिले उत्कृष्ट निबन्धका कोटीमा राख्न सकिन्छ । ती निबन्धहरूका समीक्षात्मक निबन्धहरूमा प्राचीन पुस्तकहरू, व्यक्ति समीक्षात्मक निबन्धमा पुरखा अधिका, पूर्व र पश्चिम र समवेदना र भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्धमा छिमेकी भाषा साहित्यहरू जस्ता निबन्धहरू रहेका छन् ।

‘अनुस्मरण’ भित्रका निबन्धहरूलाई तार्किक र बौद्धिक दृष्टिले उत्कृष्ट निबन्धका कोटीमा राख्न सकिन्छ । ती निबन्धहरूका राजनीतिक निबन्धहरू निबन्धहरूमा राणाकालीन काठमाण्डुमा, कलमी कसरत र सात, सत्र र छयालीस साल, भाषा व्याकरण समीक्षात्मक निबन्धमा भाषाहरूको भेलमा जस्ता निबन्धहरू रहेका छन् ।

### ५.२.२. सामाजिकता

जुनसुकै साहित्यकारले आफ्नो रचनाका विषयवस्तु समाजलाई बनाएका हुन्छन् । उनीहरूले आफू जन्मेको समाज, संस्कृति आदिलाई विषयवस्तु बनाएर विभिन्न साहित्यिक विधाहरूको रचना गरेका हुन्छन् । निबन्धकार शर्माले पनि आफ्ना निबन्धमा सामाजिक परम्परा, सामाजिक मान्यताहरू, समाजमा चलिआएका भनाइहरू आदिलाई विषयवस्तु बनाएका छन् । शर्माले समाजमा भएका नकारात्मक पक्षहरूलाई हटाएर सकारात्मक पक्षलाई लिन जोड दिएका छन् । उनका ‘नगेन्द्रका निबन्ध’ (२०२६), ‘अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म’ (२०२४), ‘बनारसमा बेचिएकी बहिनी’ (२०४७) र ‘अनुस्मरण’ (२०६८) जस्ता चार निबन्धसङ्ग्रहका साथै ‘सम्झाउनि बिर्साउनि’ (सन् २००५) र ‘छासमिस मासमिस’ (सन् २००५) र ‘अनुस्मरण’ जस्ता निबन्धमा सामाजिक उद्देश्य राखिएका निबन्धहरू यस प्रकार छन् :

‘नगेन्द्रका निबन्ध’ निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध गरेका छन् । समाजमा अभै जुको टाँसिएभै रहेका घृणित रुढिहरूलाई यी निबन्धले गतिलो भापट दिएका छन् र त्यसलाई आत्मकरक किसिमले प्रस्तुत गरेका छन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सामाजिक आत्मपरकता तथा संस्मरणत्मक निबन्धहरूमा सामाजिकताका उद्देश्य पाइन्छ । ती मध्ये सामाजिक आत्मपरक निबन्धहरूमा कसको चरित्र, कसको भाग्य ?, ‘कठै मेरो काठमाडौँ !’ तथा संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा म र मेरो बिहे’ निबन्धहरूमा सामाजिक उद्देश्य पाइन्छ ।

‘अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म’ निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध गरेका छन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सामाजिक, पौराणिक संस्मरणत्मक निबन्धहरू सामाजिक उद्देश्य अनुरूपका छन् । ती मध्ये सामाजिक

निबन्धहरूमा दोब्बर अफाप र अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म, पौराणिक निबन्धहरूमा 'सकली हिन्दूस्थापना', सांस्कृतिक निबन्धहरूमा बोलचालको भाषा, काठमाडौं र दार्जिलिङ्गमा, नेवारी भाषा, साहित्य, सङ्गीत र संस्कृति र छोयला-गुन्द्रुक, संस्मरणात्मक निबन्धहरू, मैले देखेको दार्जिलिङ्ग, कवि गिरी, प्रतिष्ठान र सेमिनार, आग्राको कुरा, गाग्राको कुरा, भी.आई.पी. यात्रु, के हुन्छ, के हुँदैन ?, अनेक मृत्यु : एकै प्रश्न, यहाँ एउटा 'क्लासिक' जन्मिएछ, म जस्तै चम्पा र दलवीर र गणित र म जस्ता निबन्धहरूमा सामाजिक उद्देश्यका रहेका छन् ।

**'बनारसमा बेचिएकी बहिनी'** यस सङ्ग्रहका निबन्धमा पुराना रुढिग्रस्त मान्यताहरूलाई गर्ल्याम-गुर्लुम पादै जातिगत समुदायहरू र विभिन्न धर्म तथा संस्कृतिहरूको हार्दिक समन्वय गर्नु पर्ने कुरालाई प्रस्तुत गर्न मूल उद्देश्य बनाइएको छ । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सांस्कृतिक तथा संस्मरणात्मक निबन्धहरू यस किसिमका निबन्ध रहेका छन् । ती निबन्धहरूमा सांस्कृतिक निबन्धहरूमा संस्कृतिका तीन नेत्र, पुराना विचार, नयाँ समय र संस्कृतको यो महंगो मोह तथा संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा अमेरिकी न्यायको नमूना : रसेलको सन्दर्भमा, गाई नखानु ? र राज्याभिषेक : एक अनुभूति जस्ता निबन्धहरूमा सामाजिक उद्देश्य रहेका छन् ।

**'सम्झाउनि-बिसाउनी'** यस सङ्ग्रहका निबन्धमा जीवनको गोरेटोमा अधि बढ्दै जाँदा पाइएका संघर्षका घुमाउराहरू, रमाइला क्षणहरू, रसिला पलहरू, आत्मीयताका स्पन्दनहरू, तीता-मीठा अनुभवहरू, अश्चर्य र आनन्दका स्पर्शहरू तथा मानसमनबाट नभोटिने केही प्रतिबिम्बहरूलाई सम्झिएर, सँगालेर साहित्यिक कोसेलीको रूपमा, समाजलाई प्रस्तुत गर्न मूल उद्देश्य रहेको पाइन्छ । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सांस्कृतिक तथा संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा यस किसिमका निबन्धहरू रहेका छन् । यस्ता निबन्धमा प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहका सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरूमा केही जिज्ञासाहरू खण्ड-३ र संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा सम्झानि-बिसाउनी : खण्ड-२ निबन्धहरू रहेका छन् ।

**'अनुस्मरण'** सङ्ग्रहमा निबन्धमा सांस्कृतिक तथा संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा सामाजिक उद्देश्य रहेका छन् । यस निबन्ध सङ्ग्रहका सामाजिक निबन्धहरूमा जङ्गला मुलुक भनेर नहेप, नारी समस्यामूलक निबन्धहरूमा आशक्तिको आयाम, संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा बुढा बा

साँगको बिछोड, बैसालु वय, जागिरका जंघारहरू, वकालती वरण, 'कर्कटरोगसाँग कुस्ती', गोकर्णको साँभ र जन्मभूमिको पाहुना निबन्धहरूमा सामाजिक उद्देश्य रहेका छन् ।

### ५.२.३. आत्मपरकता वा निजात्मकता

साहित्यकारले आफ्ना निजी अभिव्यक्ति वा विचारलाई विषयवस्तु बनाएर त्यसलाई सामुहिकीकरण गर्नुलाई नै निजात्मकता भनिन्छ । निजात्मकता लेखकको स्वानुभूतिसँग सम्बन्धित हुन्छ । निबन्धकार शर्माले पनि आफ्ना निबन्धमा निजात्मक अभिव्यक्ति प्रशस्त मात्रामा प्रकट गरेका छन् । उनका 'नगेन्द्रका निबन्ध' (२०२६), 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' (२०२४), 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' (२०४७) र 'अनुस्मरण' (२०६६) जस्ता चार निबन्धसङ्ग्रहका साथै 'सम्झाउनि बिर्साउनि' (सन् २००५) र 'छासमिस मासमिस' (सन् २००५) र 'अनुस्मरण' जस्ता निबन्धमा निजात्मक उद्देश्य राखिएका निबन्धहरू यस प्रकार छन्

'नगेन्द्रका निबन्ध' निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध गरेका छन् । समाजमा अभै जुको टाँसिएभै रहेका घृणित रुढिहरूलाई यी निबन्धले गतिलो भापट दिएका छन् र त्यसलाई आत्मकरक किसिमले प्रस्तुत गरेका छन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सामाजिक आत्मपरकता, पौराणिक आत्मपरकता, सांस्कृतिक आत्मपरकता, नारी समस्यामूलक आत्मपरकता तथा संस्मरणत्मक निबन्धहरू निजात्मक किसिमका रहेका छन् । ती मध्ये सामाजिक आत्मपरक निबन्धहरूमा कसको चरित्र, कसको भाग्य ?, 'कठै मेरो काठमाडौँ !' पौराणिक आत्मपरक निबन्धहरूमा 'बुद्ध, राधाकृष्णन् र फुचा' र मेरो रामायण : एक ट्रेजेडी !' निबन्ध सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरूमा 'बिना जनैको बाहुन' निबन्ध र को आउँछ मेरो जात खोस्न ?' निबन्ध, नारी समस्यामूलक आत्मपरक निबन्धहरूमा 'एक गन्धन, एक गुनासो' निबन्ध र ती अज्ञात अबलालाई खुलापत्र' निबन्ध तथा संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा म र मेरो बिहे' निबन्धमा निजात्मक उद्देश्य पाइन्छ ।

'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध गरेका छन् । समाजमा अभै जुको टाँसिएभै रहेका घृणित रुढिहरूलाई यी निबन्धले गतिलो भापट दिएका छन् र त्यसलाई आत्मकरक किसिमले

प्रस्तुत गरेका छन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सामाजिक आत्मपरकता, पौराणिक आत्मपरकता, सांस्कृतिक आत्मपरकता, तथा संस्मरणत्मक निबन्धहरू निजात्मक किसिमका रहेका छन् । ती मध्ये सामाजिक आत्मपरक निबन्धहरूमा दोब्बर अफाप र अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म, पौराणिक आत्मपरक निबन्धहरूमा 'सकली हिन्दूस्थापना', सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरूमा बोलचालको भाषा, काठमाडौँ र दार्जिलिङ्गमा, नेवारी भाषा, साहित्य, सङ्गीत र संस्कृति र छोयला-गुन्द्रुक, संस्मरणात्मक निबन्धहरू, मैले देखेको दार्जिलिङ्ग, कवि गिरी, प्रतिष्ठान र सेमिनार, आग्राको कुरा, गाग्राको कुरा, भी.आई.पी. यात्रु, के हुन्छ, के हुँदैन ?, अनेक मृत्यु : एकै प्रश्न, यहाँ एउटा 'क्लासिक' जन्मिएछ, म जस्तै चम्पा र दलवीर र गणित र म जस्ता निबन्धहरूमा निजात्मक तथा आत्मपरक उद्देश्य रहेका छन् ।

'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' यस सङ्ग्रहका निबन्धमा पुराना रुढिग्रस्त मान्यताहरूलाई गर्ल्याम-गुर्लुम पाउँ जातिगत समुदायहरू र विभिन्न धर्म तथा संस्कृतिहरूको हार्दिक समन्वय गर्नु पर्ने कुरालाई प्रस्तुत गर्न मूल उद्देश्य बनाइएको छ । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सांस्कृतिक आत्मपरकता तथा संस्मरणत्मक निबन्धहरू निजात्मक किसिमका रहेका छन् । ती निबन्धहरूमा सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरूमा संस्कृतिका तीन नेत्र, पुराना विचार, नयाँ समय र संस्कृतको यो महंगो मोह तथा संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा अमेरिकी न्यायको नमूना : रसेलको सन्दर्भमा, गाई नखानु ? र राज्याभिषेक : एक अनुभूति जस्ता निबन्धहरूमा आत्मपरक उद्देश्य रहेका छन् ।

'सम्भानि-बिसाउनी' यस सङ्ग्रहका निबन्धमा जीवनको गोरेटोमा अधि बढ्दै जाँदा पाइएका संघर्षका घुमाउराहरू, रमाइला क्षणहरू, रसिला पलहरू, आत्मीयताका स्पन्दनहरू, तीता-मीठा अनुभवहरू, अश्चर्य र आनन्दका स्पर्शहरू तथा मानसमनबाट नभोटिने केही प्रतिबिम्बहरूलाई सम्झिएर, साँगाेलेर साहित्यिक कोसेलीको रूपमा, समाजलाई प्रस्तुत गर्न मूल उद्देश्य रहेको पाइन्छ । यस सङ्ग्रहमा निबन्धमा सांस्कृतिक आत्मपरकता तथा संस्मरणत्मक निबन्धहरू निजात्मक किसिमका रहेका छन् । यस निबन्ध सङ्ग्रहमा सांस्कृतिक आत्मपरक निबन्धहरूमा केही जिज्ञासाहरू खण्ड-३ र संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा सम्भानि-बिसाउनी : खण्ड-२ निबन्धहरूमा आत्मपरक तथा निजात्मक उद्देश्य रहेका छन् ।

‘छासमिस-मासमिस’ सङ्ग्रहमा निबन्धमा पौराणिक आत्मपरक निबन्धहरूमा परिच्छेद-२ केही प्राचीन व्यक्तित्वहरू र परिच्छेद-३ पढे-सुनेका धर्ममतहरू निबन्धहरूमा आत्मपरक तथा निजात्मक उद्देश्य रहेका छन् ।

‘अनुस्मरण’ सङ्ग्रहमा निबन्धमा सांस्कृतिक आत्मपरकता तथा संस्मरणत्मक निबन्धहरू निजात्मक किसिमका रहेका छन् । यस निबन्ध सङ्ग्रहका आत्मपरक निबन्धहरूमा घर र घरजम, सामाजिक आत्मपरक निबन्धहरूमा जङ्गला मुलुक भनेर नहेप, नारी समस्यामूलक आत्मपरक निबन्धहरूमा आशक्तिको आयाम, संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा बुढा वा सँगको बिछोड, बैसालु वय, जागिरका जंघारहरू, वकालती वरण, ‘कर्कटरोगसँग कुस्ती’, गोकर्णको साँभ र जन्मभूमिको पाहुना निबन्धहरूमा आत्मपरक तथा निजात्मक उद्देश्य रहेका छन् ।

#### ५.२.४. प्रगतिशीलता

नगेन्द्र शर्मा प्रगतिशील निबन्धकार हुन् । उनका निबन्धमा समाजमा जरा गाडेर बसेका रुढि, अन्धविश्वास, गलत किसिमका संस्कारहरूलाई हटाउने; समयसापेक्ष, युगसुहाउँदो संस्कारहरूलाई मान्यता दिने; समाजमा प्रचलित असमानता, शोषण, रुढिवादी जस्ता सङ्कीर्ण मूल्य मान्यतालाई नवीन दृष्टिकोणबाट हेर्नुपर्ने धारणा राखिएको छ । उनका ‘नगेन्द्रका निबन्ध’ (२०२६), ‘अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म’ (२०२४), ‘बनारसमा बेचिएकी बहिनी’ (२०४७) र ‘अनुस्मरण’ (२०६८) जस्ता चार निबन्धसङ्ग्रहका साथै ‘सम्झाउनि बिर्साउनि’ (सन् २००५) र ‘छासमिस मासमिस’ (सन् २००५) र ‘अनुस्मरण’ जस्ता निबन्धमा प्रगतिशीलता भाव पाइएका निबन्धहरू यस प्रकार छन् :

‘नगेन्द्रका निबन्ध’ निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध गरेका छन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सामाजिक निबन्धहरूमा प्रगतिशीलता पाइन्छ । ती मध्ये कसको चरित्र, कसको भाग्य ?, ‘कठै मेरो काठमाडौं !’ तथा म र मेरो बिहे’ निबन्धमा प्रगतिशीलताको भाव पाइन्छ ।

‘अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म’ निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा निबन्धकारले समाजमा रहेका खराब संस्कार र चालचलनहरूको विरोध गरेका छन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सामाजिक निबन्धहरूमा प्रगतिशीलता पाइन्छ । ती मध्ये दोब्बर अफाप र अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म, ‘सकली हिन्दूस्थापना’, बोलचालको भाषा, काठमाडौं र दार्जिलिङमा, नेवारी भाषा, साहित्य, सङ्गीत र संस्कृति र छोयला-गुन्दुक, मैले देखेको दार्जिलिङ्ग, कवि गिरी, प्रतिष्ठान र सेमिनार, आग्राको कुरा, गाग्राको कुरा, भी.आई.पी. यात्रु, के हुन्छ, के हुँदैन ?, अनेक मृत्यु : एकै प्रश्न, यहाँ एउटा ‘क्लासिक’ जन्मिएछ, म जस्तै चम्पा र दलवीर र गणित र म जस्ता निबन्धहरूमा प्रगतिशीलता पाइन्छ ।

‘बनारसमा बेचिएकी बहिनी’ यस सङ्ग्रहका निबन्धमा पुराना रुढिग्रस्त मान्यताहरूलाई गर्ल्याम-गुर्लुम पाउँ जातिगत समुदायहरू र विभिन्न धर्म तथा संस्कृतिहरूको हार्दिक समन्वय गर्नु पर्ने कुरालाई प्रस्तुत गर्न मूल उद्देश्य बनाइएको छ । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सामाजिक निबन्धहरूमा प्रगतिशीलता पाइन्छ । ती निबन्धहरूमा संस्कृतिका तीन नेत्र, पुराना विचार, नयाँ समय र संस्कृतको यो महंगो मोह अमेरिकी न्यायको नमूना : रसेलको सन्दर्भमा, गाई नखानु ? र राज्याभिषेक : एक अनुभूति जस्ता निबन्धहरूमा प्रगतिशीलता पाइन्छ ।

‘सम्झाउनि-बिसाउनी’ यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सामाजिक निबन्धहरूमा प्रगतिशीलता पाइन्छ । यस्ता निबन्धमा प्रस्तुत निबन्ध सङ्ग्रहका केही जिज्ञासाहरू खण्ड-३ र सम्झानि-बिसाउनी : खण्ड-२ निबन्धहरू रहेका छन् ।

‘अनुस्मरण’ यस सङ्ग्रहका निबन्धमा सामाजिक निबन्धहरूमा प्रगतिशीलता पाइन्छ । यस निबन्ध सङ्ग्रहका जङ्गला मुलुक भनेर नहेप, आशक्तिको आयाम, बुढा बा सँगको विछोड, बैसालु वय, जागिरका जंघारहरू, वकालती वरण, ‘कर्कटरोगसँग कुस्ती’, गोकर्णको साँभ र जन्मभूमिको पाहुना निबन्धहरूमा प्रगतिशीलता पाइन्छ ।

### ५.३. निष्कर्ष

शर्माका निबन्धमा विविध उद्देश्यहरूमा केन्द्रित रहेका छन् । उनका निबन्धमा नेपाली समाजका विभिन्न अवस्थाका विविध पक्षमाथि व्यङ्ग्य गरिएको पाइन्छ । उनका निबन्धमा मानिसले आफूलाई समय अनुसार परिवर्तन र परिमार्जन गर्दै लैजानु पर्छ र निबन्धकारलाई आफू माथि आइ परेको विपतिको वर्णन गरेका छन् । उनका निबन्धमा हाम्रो धर्म सस्कृतिलाई रुढिवादी परम्पराबाट आधुनिक परम्परामा ढाल्दै लग्नु पर्दछ भन्ने भाव प्रस्तुत गरिएको छ । उनका निबन्धबाट प्राचीन पुस्तकहरू, पौराणिक व्यक्तित्वहरू, धर्ममतहरूप्रति देखिएका केही अन्योल हटाउनु पनि उद्देश्य राखेको पाइन्छ । साथै समाज सुधारक तथा राजनीतिक व्यक्तित्वहरू समेटेर समाजका विकार र विकृतिहरू फ्याकेर नयाँ समाज र संसारको सृजना गर्नु पर्छ भन्ने उद्देश्य रहेको पाइन्छ । आजका युवा-पिँडिहरू पाश्चात्य संस्कार र सभ्यतामा भन्-भन् भासिदै जान सक्ने देखी भोलिका हाम्रा सन्तानहरूलाई रोक्ने प्रयास पनि उनका निबन्धमा देखिन्छ । केही पूर्वेली र पश्चिममा विद्वान, अन्वेषक र अनुसन्धानकर्ताका दृष्टिकोणहरू समेत पस्किने उद्देश्य उनका निबन्धहरूमा रहेको छ । कुनै पनि जीवित भाषामा सामान्यतया व्याकरणिक नियममा विविधता देखिए पनि स्तरीय र मानक नियम निर्माण गर्न आवश्यक छ भन्नु यस निबन्धको उद्देश्य हो । उनको निबन्धहरूमा बोद्धिकाता, सामाजिकता, आत्मपरकता, प्रगतिशीलता जस्ता उद्देश्यहरू देखापरेका छन् । भाषाविद्हरूको जुँगाको लडाइँले साधारण भाषाका प्रयोक्ताहरूमा भ्रम सृजना गर्दछ भनी स्पष्ट पार्नु पनि उनका निबन्धको उद्देश्य हो । अरूको लहैलहैमा लाग्नुभन्दा वास्तविकतालाई मनन गर्नुपर्ने, लोकसंस्कृतिको संरक्षण, समाजमा नागरिकको योगदान विशिष्ट हुनुपर्ने आदि यी निबन्धहरूको उद्देश्यका रूपमा आएका छन् । यी निबन्धहरूको उद्देश्य समाजमा रहेका गलत मान्यता र संस्कारलाई युगसापेक्ष बनाउँदै लैजानु रहेको छ ।

## नगेन्द्र शर्माका निबन्धको भाषाशैली

### ६.१ विषय परिचय

प्रस्तुत परिच्छेदमा नगेन्द्र शर्माको निबन्धको भाषाशैलीको अध्ययन गरिएको छ। यहाँ उनका 'नगेन्द्रका निबन्ध' (२०२६), 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' (२०२४), 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' (२०४७) र 'अनुस्मरण' (२०६८) जस्ता चार निबन्धसङ्ग्रहका साथै 'सम्झाउनि बिसाउनि' (सन् २००५) र 'छासमिस मासमिस' (सन् २००५) र जस्ता दुई लघु निबन्धसङ्ग्रहका निबन्धको भाषाशैलीको अध्ययन गरिएको छ।

### ६.२ नगेन्द्र शर्माको निबन्धको भाषाशैली

यस निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धको भाषा सरल र पढ्न मिठास लाग्दो रहेको छ। यस निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा तत्सम्, तद्भव र आगन्तुक शब्दको प्रयोग भएको पाइन्छ। यहाँ शर्माका प्रत्येक निबन्धका भाषाशैली यस प्रकार देखाइएको छ :

#### ६.२.१. 'नगेन्द्रका निबन्ध' निबन्ध

यस निबन्धसङ्ग्रहमा भाषाशैलीका दृष्टिबाट हेर्दा 'कसको चरित्र, कसको भाग्य ?' निबन्धमा धेरै मात्रामा तत्सम शब्दको प्रयोग भएको छ भने केही मात्रामा तद्भव र आगन्तुक शब्दको पनि प्रयोग भएको छ। यस निबन्धमा मित्र, चरित्र, भाग्य, उपदेश, परिवर्तन, अमरवाणी, दैव, मनुष्य, सर्वज्ञ, परिवन्द जस्ता तत्सम शब्दहरू; सन्जोग, गोठाला, हात, आज, औंला जस्ता तद्भव शब्दहरू र चान्स, हुकुम, जज्मेन्ट, प्रमोशन, अनरेरी, फिल्म, नामेट जस्ता आगन्तुक शब्दहरू प्रयोग भएका छन्। लेखकले आफ्नो भनाइलाई थप पुष्टि गर्न पाश्चात्य जगत्का प्रसिद्ध लेखक, तिनका कृतिका पात्र र चर्चित व्यक्तिहरूका नाम पनि आगन्तुक नाम शब्दका रूपमा प्रयोग गरेका छन्। जस्तै : अलेक्जेन्डर क्युप्रिन, जेनेच्का, प्लेटोनोभ, जर्ज बनार्ड श, वारेन, टेनिसन, हिटलर, नेपोलियन, अन्ना करेनिना, एम्मा बोभरी, क्लेओपेट्रा, लेडी चेटर्ली

आदि छन् । शब्द प्रयोगका दृष्टिले यस निबन्धमा तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दहरूको समुचित प्रयोग भएको छ । निबन्धमा उखानहरूलाई उचित सन्दर्भमा अर्थपूर्ण रूपले राख्न सक्ने कला निबन्धकारमा देखिन्छ ।

रेडियो नेपालको नारी कार्यक्रमअन्तर्गत प्रसारित लेख सुनिसकेपछि त्यसको प्रतिक्रिया स्वरूप लेखिएको 'एक गन्धन, एक गुनासो' शीर्षकको निबन्ध प्रथमपुरुष कथन पद्धतिमा, आत्मपरक शैलीमा लेखिएको छ । यस निबन्धमा व्यङ्ग्यको प्रयोग पनि भएको छ । व्यङ्ग्यात्मक हिसाबले निबन्धकार यसमा सफल देखिन्छन् । गुनासै गुनासाले भरिएको लेख रेडियोबाट प्रसारण भएपछि सुरु भएको निबन्धकारको गन्धनले गर्दा निबन्ध पूर्ण भएको देखिन्छ र 'एक गन्धन, एक गुनासो' निबन्धको शीर्षक सार्थक पनि हुन्छ ।

भाषाशैलीका दृष्टिबाट हेर्दा 'बुद्ध, राधाकृष्णन् र फुचो' निबन्धमा तत्सम र आगन्तुक शब्दको प्राचुर्य छ भने त्यसका तुलनामा तद्भव शब्दको सङ्ख्या न्यून छ । यसमा लेख, ऐतिहासिक, सत्य, शङ्का, पक्ष, अनुमति जस्ता तत्सम शब्दहरू; आँखा, जेठ, पसिना, हात, पाना, जिब्रो जस्ता तद्भव शब्दहरूका साथै गर्मी, हजुर, अखबार, नोकरी, थिसिस, माफी, फिल्म जस्ता आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग भएको पाइन्छ ।

यो निबन्ध आत्मपरक शैलीमा लेखिएको छ । प्रथम पुरुष कथन पद्धति रहेको यस निबन्धमा बुद्धका विषयमा उठेका वैचारिक भिन्नता, राधाकृष्णन्का विचारको खण्डन अनि निबन्धकारले आफूलाई 'म फुचो'का रूपमा उभ्याएकाले शीर्षकको सार्थकता भएको देखिन्छ ।

यो निबन्ध आत्मपरक शैलीमा लेखिएको छ । प्रथम पुरुष कथन ढाँचामा आवद्ध यस निबन्धमा निबन्धकारले आफू बाहुनको छोरो भएर पनि जनै लगाउने वैज्ञानिकता नदेखेपछि उत्पन्न भएको जटिलतालाई निबन्धको आदिदेखि अन्त्यसम्म चर्चा गरेकाले निबन्धको शीर्षक सार्थक भएको छ । निबन्धमा तद्भव शब्दका तुलनामा तत्सम र आगन्तुक शब्दकै प्रचुरता देख्न सकिन्छ । यस निबन्धमा शासन, प्रजातन्त्र, प्रगति, वचन, शिष्टाचार, व्यक्ति, वर्ष, सम्भव जस्ता तत्सम शब्दहरू; काम, रिस, विहान, भात, जाँगर, बाहुन, निधार जस्ता तद्भव शब्दहरू र

क्यारेक्टर, तरिका, ढोका, गमला, साइज, पेसा, क्यासिनो जस्ता आगन्तुक शब्दहरू प्रयोग भएका छन् ।

भाषाशैलीका दृष्टिबाट हेर्दा 'म र मेरो बिहे' निबन्धमा तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दहरूको सुन्दर संयोजन भएको देखिन्छ । यस निबन्धमा वास्तव, दिन, स्वार्थ, अज्ञात, गोकर्ण, वन, त्रिलोक, औषधि जस्ता तत्सम शब्दहरू; बिहे, तीन, रात, पानी, तिर्खा, बीस, भुइँ, कान, मह जस्ता तद्भव शब्दहरूका अतिरिक्त महिना, प्लास्टर, स्काइस्केपर, रिलेटिभिटी, टेबल, विदा, फिट, ढोका जस्ता आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग भएको छ

### ६.३ 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' निबन्ध

यस निबन्धसङ्ग्रहमा ललित गद्य भाषाको प्रयोग भएको छ । वाक्यस्तरमा देखिने अनुप्रासबाट गद्यनिबन्धत्मक लयभङ्गकार पनि यसमा भेटिन्छ । यस सङ्ग्रहमा तद्भव, तत्सम र आगन्तुक शब्दकै प्रयोग पाइन्छ । यस सङ्ग्रहमा सरल, मिश्र र संयुक्त वाक्यको प्रयोग गरिएको छ । स्थानीय साँस्कृतिक र सामाजिक क्षेत्रका शब्दको प्रायोगका कारण भाषा प्रभावकारी देखिन्छ । भाषामा रागात्मकता, बौद्धिकता, तत्क्षणता र तार्किकता देखिनु निबन्धगत विशेषता पनि हुन् ।

यस सङ्ग्रहमा शैलीगत विविधता छ । लेखकले भाषाको तहमा अनुप्रासको प्रयोग गरेकाले यसमा आलङ्कारिक शैलीको प्रभूत्व भेटिन्छ । यसमा विषयको पुष्टिको लागि पुराण, महापुरुषका जीवनी तथा घटनावली ल्याएका अवस्थामा आख्यानात्मक शैली भेटिन्छ । आवश्यक परेका ठाउँमा उनले विवेचनात्मक, वर्णनात्मक, संस्मरणात्मक, तार्किक, व्याख्यात्मक आदि शैलीको अनुसरण गरेकै छन् । समग्रमा यस सङ्ग्रहमा सहज र सम्प्रेषणीय शैलीको प्रयोग छ ।

यस सङ्ग्रहमा पनि शिल्पगत विविधता देखिन्छ । उनको निबन्धात्मक धारा आत्मपरक र वस्तुपरक बनेको छ । विषयवस्तुमा लेखकीय धारणाले रङ्गाएर प्रथमपुरुष दृष्टिविन्दुमा उनी निबन्ध लेख्छन् । उनको 'म' सर्वनामलाई चिन्न कति पनि कठिन छैन, किनभने यसले आफ्ना चारै दिशाका ढोका खोलेर पाठक वर्गलाई आफ्नो वास्तविक अनुहार देखाएको छ । जुनसुकै

दिशाको ढोकाबाट हेरे पनि त्यो अनुहार इमान्दार, खुलस्त र विनित देखिने हुँनाले पाठक वर्ग त्यो सर्वनामबाट मोहित हुन पुग्दछ। यो नै शर्माको महत्वपूर्ण शिल्पगत विशेषता हो।

#### ६.४ 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' निबन्ध संग्रह

यस निबन्धसङ्ग्रहमा ललित गद्यभाषाको प्रयोग छ। वाक्यस्तरमा देखिने आन्तरिक अनुप्रासबाट गद्यनिबन्धत्मक लयभङ्गकार पनि यसमा पाइन्छ। यस सङ्ग्रहमा तद्भव, तत्सम र आगन्तुक शब्दको प्रयोग भएका छन्। यस सङ्ग्रहका निबन्धमा छोटो, लामा मिश्र र समासात्मक लामा शब्दहरूको प्रयोग भएका वाक्य छन्। भाषा सरल, सहज र सम्प्रेषणीय छ। भाषामा रागात्मकता, बौद्धिकता र तार्किकता पाइन्छ।

यस सङ्ग्रहमा शैलीगत विविधता छ। लेखकले भाषाको तहमा अनुप्रासको प्रयोग गरेकाले यसमा आलङ्कारिक शैलीको प्रभुत्व भेटिन्छ। यसमा विषय पुष्टि गर्नका लागि पूर्वीय, पाश्चात्य क्षेत्रका ग्रन्थ, महापुरुष, जीवनी तथा घटनावली ल्याएका अवस्थामा आख्यानात्मक शैली भेटिन्छ। त्यस्तै आवश्यक परेका ठाउँमा उनले विवेचनात्मक, वर्णनात्मक, तार्किक, व्याख्यात्मक आदि शैलीको अनुशरण गरेकै छन्। समग्रमा यस सङ्ग्रहमा सहज सम्प्रेषणीय शैलीको प्रयोग भएको छ।

यस सङ्ग्रहमा पनि शिल्पगत विविधता पाइन्छ। उनको निबन्धात्मक धारा वस्तुपरक र आत्मपरक दुवै देखिन्छ। आत्मपरकमा विषयवस्तुमा लेखकीय धारणाले रङ्गाएर प्रथम पुरुष दुष्टिविन्दुमा उनी निबन्ध लेख्छन्। यस सङ्ग्रहका निबन्ध शिल्पगत आधारमा पत्रात्मक, संस्मरणात्मक पनि छन्। कुनै-कुनै निबन्धमा व्यङ्ग्यात्मकता पनि लुकेको छ।

#### ६.५ 'सम्झाउनि-बिसाउनि' निबन्ध संग्रह

यस निबन्धसङ्ग्रहमा ललित गद्यभाषाको प्रयोग छ। वाक्यस्तरमा देखिने आन्तरिक अनुप्रासबाट गद्यकवितात्मक लयभङ्गकार पनि यसमा भेटिन्छ। यस सङ्ग्रहमा तद्भव र तत्सम शब्दकै आधिक्य रहेपनि बहुभाषि निबन्धकारले अङ्ग्रेजी, हिन्दी, उर्दु, फारसी जस्ता भाषिक श्रोतबाट आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरेका छन्।

यस सङ्ग्रहमा शैलीगत विविधता छ । लेखकले भाषाको तहमा अनुप्रासको प्रयोग गरेकाले यसमा आलङ्कारीक शैलीको प्रभूत्व भेटिन्छ । यसमा विषय पुष्टि गर्नका लागि पाश्चात्य पूर्वीय क्षेत्रका पुराकथा, महापुरुषका जीवनी तथा घटनावली ल्याएका अवस्थामा आख्यानात्मक शैली भेटिन्छ । त्यस्तै आवश्यक परेका ठाउँमा उनले विवेचनात्मक, वर्णनात्मक, व्याख्यानात्मक, तार्किक आदि शैलीको अनुसरण गरेकै छन् । समग्रमा यस सङ्ग्रहमा सहज र संप्रेषणीय शैलीको प्रयोग छ ।

यस सङ्ग्रहमा पनि शिल्पगत विविधता पाइन्छ । उनको निबन्धात्मक धारा वस्तुपरक र आत्मपरक बनेको छ । आफ्ना विगतका भ्रमणहरूलाई र आफ्ना नजिकका व्यक्तित्वहरूलाई संस्मरणात्मक शिल्प प्रयोग गरी निबन्धमा प्रस्तुत गरेको पाइन्छ । यस सङ्ग्रहका निबन्धलाई प्रश्नात्मक शिल्पगत रूपमा पनि प्रस्तुत गरिएको छ ।

#### ६.६ 'छासमिस्-मासमिस्' निबन्ध संग्रह

यस निबन्धसङ्ग्रहमा निबन्धकारले आफ्नो अध्ययनलाई अभिव्यक्त गरेका छन् । उनले हरेक विषयमा आफ्ना तर्क, अनुभूति र टिप्पणी मिसाएर निबन्ध लेखेका छन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा तद्भव, तत्सम र आगन्तुक शब्दको प्रयोग गरेका छन् ।

यस सङ्ग्रहमा शैलीगत विविधता छ । लेखकले भाषाको तहमा अनुप्रासको प्रयोग गरेकाले यसमा आलङ्कारीक शैलीको प्रभूत्व भेटिन्छ । समग्रमा यस सङ्ग्रहमा सहज र संप्रेषणीय शैलीको प्रयोग छ ।

प्रस्तुत निबन्ध आत्मपरक शैलीमा लेखिएको छ । आफ्ना निजी विचारहरूलाई विभिन्न सन्दर्भका माध्यमबाट निबन्धकारले यहाँ पुष्टि गरेका छन् । यस सङ्ग्रहमा पनि शिल्पगत विविधता पाइन्छ । उनको निबन्धात्मक धारा वस्तुपरक र आत्मपरक बनेको छ । आफ्ना विगतका भ्रमणहरूलाई र आफ्ना नजिकका व्यक्तित्वहरूलाई संस्मरणात्मक शिल्प प्रयोग गरी निबन्धमा प्रस्तुत गरेको पाइन्छ । यस सङ्ग्रहका निबन्धलाई प्रश्नात्मक शिल्पगत रूपमा पनि प्रस्तुत गरिएको छ । निबन्धकारले यसमा आफ्नो जीवनयात्राका अध्ययन, चिन्तन, दर्शन र

अनुभवबाट समाजमा रहेका रुढि परम्परा र अन्धविश्वासमाथि तर्क प्रस्तुत गर्ने क्रममा रोचक भाषाशैलीको प्रयोग गरेका छन् ।

यस सङ्ग्रहमा पनि शिल्पगत विविधता देखिन्छ । शर्माले आफ्नो अध्ययन र संस्मरणलाई शिल्पप्रविधी बनाएका छन् । निबन्धमा कहीं कहीं श्लोकको प्रयोग गर्नु उनका निबन्धको प्रयोगात्मक पक्ष हो ।

### ६.७ अनुस्मरण

यस निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धको भाषा सरल र पढ्न मिठास लाग्दो रहेको छ । यस निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको प्रयोग भएको पाइन्छ । वर्ष, विरोध, जीवन, स्थिति जस्ता तत्सम शब्दहरू, आँखा, हात, औला, काँध, बुढा, रिस जस्ता तद्भव शब्दहरू र डाक्टर, रेञ्जर तमाखु जस्ता आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग भएको छ । सरल वाक्यको साथै जटिल वाक्यको पनि प्रयोग गरेको पाइन्छ । पूर्णविराम अल्पविराम, प्रश्नवाचक चिन्ह उद्धरण चिन्हहरूको पनि प्रयोग भएको पाइन्छ । पूर्णविराम पछि आवश्यक रूपमा 'र' जस्तो संयोजकको प्रयोगले निबन्धमा विचलनलाई संकेत गर्दछ ।

यस निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा तत्सम तद्भव र आगन्तुक शब्दको प्रयोग भएको पाइन्छ । वर्ष, पुरुष विरोध जस्ता तत्सम शब्दहरू, एक आठ दश, आँखा, खोला, विहान, पानी,, बाहुन, बुढा, शिर, खुट्टा जस्ता तद्भव शब्दहरू र ड्राइभर, स्टेशन, दौरा, साहु, रेल, डेरा जस्ता आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग भएको पाइन्छ । भाषाशैलीको दृष्टिले राणाकालीन काठमाडौं निबन्धमा तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दहरूको सुन्दर संयोजन भएको देखिन्छ । यस निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा स्वरूप जीवन, इतिहास, वैभवपूर्ण, विसालजस्ता तत्सम शब्दहरू र रिस, कान, मुख, एक, ससुराली, आधा, आँखा, बाहुन, विहान, महिना, हिजो आज, एकदुई राती, साँझ आदि तद्भव शब्दहरू र स्कुल, स्टेसन, क्यान्सर, युनिफर्म, सिनेमा, डाइरेक्टर, कोटप्याण्ट, अफिस, सिपाही जस्ता आगन्तुक शब्दको प्रयोग भएको छ । भाषाशैलीको दृष्टिले हेर्दा 'कलमी कसर' निबन्धमा सरल, बोधगम्य भाषा प्रयोग भएको छ । शब्द प्रयोगका दृष्टिले यस निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा तत्सम, तद्भव र आगन्तुक शब्दको प्रयोग भएको छ । कार्यक्रम, घोषणा,

कृति, प्रकाशित, रचना, मायाँ, शीर्षक, प्रसिद्ध, लेख, भाषा जस्ता तत्सम शब्दहरू, साँउ, दश, पन्ध्र, विहान, हात, दुई बाहुन जस्ता तद्भव शब्दहरू र किताब, एक्सक्युजमी, अनलाइन, कमिसन्ड, करेस्पन्डेन्ट जस्ता आगन्तुक शब्दहरूको प्रयोग भएको छ । निबन्धकारले यस निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धमा आफूले कलम चलाएको र त्यस निबन्ध सङ्ग्रहका कलम चलाउन गर्नु परेको मेहनत, परिश्रम, दुःख, कष्ट आदिलाई उल्लेख गरी निबन्ध रचना गरेकाले यस निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धको शीर्षक सार्थक देखिन्छ । निबन्धकारको जीवनको बुद्ध्यौली सुरु पछि श्रीमतीको वियोग सहनु परेको कुरालाई उल्लेख गर्दा यो निबन्धको रचना गरिएको हुनाले यस निबन्ध सङ्ग्रहका निबन्धको शीर्षक 'बुढेसकालको बज्रपात' सार्थक छ ।

## ६.८ निष्कर्ष

यी निबन्धहरूको भाषा सरल र बोधगम्य रहेको छ । तत्सम, तद्भव र आगन्तुक तीनै स्रोतका शब्दहरूको समानुपातिक प्रयोग यस निबन्धसङ्ग्रहमा निबन्धकारले गरेका छन् । चर्चित सूक्ति, उखान-टुक्का, पूर्वीय एवम् पाश्चात्य जगत्का विद्वान्, राजनीतिक व्यक्ति, घटना, परम्परा तथा परिवेश आदिको आख्यानात्मक प्रस्तुतिले निबन्ध रोचक तथा पठनीय बन्न पुगेको छ । नगेन्द्र शर्माको यस निबन्धसङ्ग्रहमा शिल्पगत विविधता देखिन्छ । उनी बढी आत्मपरक र कमै मात्रामा वस्तुपरक निबन्धकार हुन् भन्न सकिन्छ । वाक्यगठनका दृष्टिले हेर्दा उनका अधिकांश निबन्धमा लामालामा जटिल वाक्यको प्रचुरता देख्न सकिन्छ । धेरै ठाउँमा पूर्णविरामपछि 'र', 'तर' जस्ता संयोजकको प्रयोग भएबाट उनका निबन्धमा भाषिक विचलन बढी मात्रामा देख्न सकिन्छ । यस परिच्छेदका निबन्धहरूको भाषा सरल र बोधगम्य रहेको छ । तत्सम, तद्भव र आगन्तुक तीनै स्रोतका शब्दहरूको समानुपातिक प्रयोग यस निबन्धसङ्ग्रहमा निबन्धकारले गरेका छन् । चर्चित सूक्ति, उखान-टुक्का, पूर्वीय एवम् पाश्चात्य जगत्का विद्वान्, राजनीतिक व्यक्ति, घटना, परम्परा तथा परिवेश आदिको आख्यानात्मक प्रस्तुतिले निबन्ध रोचक तथा पठनीय बन्न पुगेको छ । निबन्धकारका बौद्धिक तर्क तथा गहन अध्ययनको प्रभावका कारण उनका निबन्धले बौद्धिक पाठकहरूकै बढी अपेक्षा राख्छन् । नगेन्द्र शर्माको यस निबन्धसङ्ग्रहमा शिल्पगत विविधता देखिन्छ । उनी बढी आत्मपरक र कमै मात्रामा वस्तुपरक निबन्धकार हुन् भन्न सकिन्छ ।

परिच्छेद सात

## उपसंहार तथा निष्कर्ष

### ७.१ उपसंहार

पहिलो परिच्छेद अन्तर्गत नगेन्द्र शर्माको सङ्क्षिप्त परिचय दिइएको छ । पिता नन्दप्रसाद शर्मा र माता हरिप्रिया शर्माका सुपुत्रका रूपमा नगेन्द्र शर्माको जन्म वि.सं. १९८७ साल मङ्सिर ७ गते कृष्ण पक्ष दशमी तिथिका दिन भारतको दार्जिलिङको खरखाङअन्तर्गत डाउहिल रोडस्थित सिंहवाहिनी मन्दिरको पुजारी घरमा भएको हो । घरमा बुबा र हजुरबुबाबाट उनको अक्षरारम्भको वातावरण घरमा नै मिलेको देखिन्छ । प्राथमिक तहको शिक्षा 'डेभिस प्राइमरी स्कूल' डाउहिलबाट सुरु गरी शर्माले कलकत्ता युनिभर्सिटीबाट कानून र त्रिभुवन विश्वविद्यालयबाट स्नातकोत्तर तहमा नेपाली विषयको अध्ययनका साथै लन्डनमा ट्रेडमार्क विषयमा तालिम प्राप्त गरेका छन् । उनले औपचारिक शिक्षाका साथै अनौपचारिक शिक्षामा तिब्बती, फ्रान्सेली, जापानी, उर्दू, अङ्ग्रेजी, नेवारी आदि भाषाको अध्ययन गरेका छन् ।

शर्माले विद्यालय र क्याम्पसमा शिवकुमार राई, महानन्द सापकोटा, धरणीधर कोइराला, सूर्यविक्रम ज्ञवाली, ईश्वर बराल, पारसमणि प्रधान, लैनसिंह बाङ्देल आदिबाट लेखन प्रेरणा पाएका हुन् । शर्माका निबन्ध र अन्य विषयका गरी जम्मा बीसवटा कृतिहरू प्रकाशित छन् । शर्माले कथा, निबन्ध, संस्मरण, समालोचना, भाषा साहित्यका खोजकर्ताका रूपमा कलम चलाए पनि शर्मालाई नेपाली साहित्यमा परिचित गराउने विधा भने निबन्ध हो । नगेन्द्र शर्माको निबन्धयात्रालाई दुई चरणमा विभाजन गर्दा पहिलो चरणमा लामा निबन्धका सङ्ग्रहहरूलाई र दोस्रो चरणमा लघु निबन्धसङ्ग्रहहरूलाई राखिएको छ । शर्मा आफ्ना निबन्धमा बौद्धिक एवम् तार्किक भाषाशैलीको प्रयोग गर्छन् ।

दोस्रो परिच्छेद अन्तर्गत नगेन्द्र शर्माको निबन्ध यात्राको चरण विभाजनको विश्लेषण गरिएको छ । शर्मा निबन्ध विधाको आधुनिक कालमा देखापरेका निबन्धकार हुन् । वि.सं. २००६ सालमा 'हाम्रो अस्तित्व' नामक निबन्ध भारती पत्रिकामा प्रकाशित गरी निबन्ध लेखन प्रारम्भ

गरेका हुन् । शर्माले ६ दशक लामो निबन्ध यात्रामा चार निबन्धसंग्रहहरू र दुई लघुनिबन्धसंग्रहहरू प्रकाशित छन् । शर्माको निबन्ध यात्रालाई दुई चरणमा विभाजन गरिएको छ । प्रथम चरण (वि. सं. २००६- २०४७ सम्म) र दोस्रो चरण (वि.सं. २०४८- हालसम्म) । पहिलो चरणमा लामा निबन्धहरूका सङ्ग्रहहरूलाई राखिएको छ भने दोस्रो चरणमा लघु निबन्ध सङ्ग्रहलाई राखिएको छ । शर्माका प्रथम चरणका निबन्धहरू फुटकर रूपमा भारतीय पत्रिका भारती, अञ्जली, प्रगति,, हाम्रो संसार पत्रिकामा प्रकाशित छन् भने नेपाली पत्रिका गोरखापत्र, फूलपाती, रूपरेखा, हाम्रो संस्कृति, मधुपर्क, रेषा, सञ्चयन, नेपाली, गरिमा, परिवेशहरूमा प्रकाशित छन् । यिनै प्रकाशित फुटकर निबन्धहरूलाई सङ्ग्रह गरेर पुस्तकाकार कृतिका रूपमा निकालिएको छ । प्रथम चरणमा प्रकाशित निबन्धसंग्रहहरू : 'नगेन्द्रका निबन्ध' (२०२६), 'अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म' (२०४२), 'बनारसमा बेचिएकी बहिनी' (२०४७) रहेका छन् । प्रथम चरणमा प्रकाशित निबन्धहरूलाई हेर्दा समाजमा रहेका सबै प्रचलित सामाजिक, सांस्कृतिक, परम्परागत मान्यताहरू सधैं मान्य भएर रहिरहन सक्दैनन्; तिनीहरूलाई समयसँगै परिवर्तन गर्नुपर्छ भन्ने मान्यता निबन्धकारले राखेका छन् । यस चरणमा समाजको नारी समस्या, जातभात समस्या, धार्मिक र सांस्कृतिक समस्या, साहित्यिक समस्याका साथै त्यसमा देखिएका विकृति र विसङ्गतिको विरोध स्वरूप निबन्ध लेखिएका छन् । दोस्रो चरणमा शर्माले लघुलिपि र लघुनिबन्ध लेखनको आरम्भ गरेका छन् । यस चरणमा प्रकाशित कृतिहरू : 'सम्भाउनि-बिसाउनि' (सन् २००५), 'छासमिस-मासमिस' (सन् २००५), र 'अनुस्मरण' (२०४८) रहेका छन् । यी संग्रहका निबन्धहरू काठमाडौँबाट प्रकाशित हुने जनसत्ता साप्ताहिक, स्पेसटाइम, कान्तिपुर र नयाँ सडक दैनिक तथा सिलगढीबाट प्रकाशित हुने सुनचरी दैनिक पत्रिकामा छापिएका थिए । दोस्रो चरणका निबन्धसङ्ग्रहहरूमा 'सम्भाउनि-बिसाउनि' तीन खण्डमा विभाजित छ । यसमा निम्ताकार देशहरू, सम्भाउनि-बिसाउनि र केही जिज्ञासाहरू अलग-अलग खण्डमा प्रयुक्त छन् । 'छासमिस-मासमिस' निबन्धसङ्ग्रह सात परिच्छेदमा विभाजित छ । यसमा प्राचीन पुस्तकहरू, केही प्राचीन व्यक्तिहरू पढे-सुनेका धर्ममतहरू, पुरखा अधिका, छिमेकी भाषा साहित्यहरू, पूर्व र पश्चिम, समवेदना छन् । 'छासमिस-मासमिस'का विषयवस्तु प्राचीन पुस्तकहरू, केही पौराणिक व्यक्तिहरू, पढे-सुनेका धर्ममतहरू, छिमेकी भाषा साहित्यहरू आदि देखिन्छन् । यस सङ्ग्रहमा पूर्वीय ग्रन्थ, व्यक्तित्व, धर्म, भाषा, साहित्य आदिलाई समेटिएको छ । 'अनुस्मरण'मा आफ्नै

आत्माकथा लेखिएको छ । निबन्धकारले आफ्नो जीवन कालमा घटेका घटना र भोगेका भोगाईहरूको कथा अनुस्मरणमा छ ।

**तेस्रो परिच्छेद** अन्तर्गत निबन्धको सैद्धान्तिक परिचय को निरूपण गरिएको छ । कुनै पनि विधाको सक्षमता असक्षमताबारे चर्चा गर्दा त्यस विधाको सैद्धान्तिक विकास कतिसम्म भएको छ, त्यसमा निर्भर गर्दछ । विभिन्न विद्वान्हरूले स्थापना गरेका मूल्य मान्यताका आधारमा निबन्धको अन्य विधासँगको सम्बन्धका बारेमा चर्चा गरिएको छ । साहित्यका प्रमुख चार विधाहरूमध्ये निबन्ध एक हो । यसका दुई प्रमुख भेद छन्- आत्मपरक र वस्तुपरक । आफूलाई केन्द्र बनाई निबन्ध सिर्जना गरिन्छ, भने त्यो आत्मपरक र त्यो भन्दा भिन्न वा कुनै वस्तु विशेषलाई मुख्य विषय बनाई निबन्धको सिर्जना गरिन्छ, भने त्यो वस्तुपरक हुन्छ । निबन्धको उत्पत्ति पश्चिमबाट भएको हो । निबन्धको पहिलो सिर्जना गर्ने श्रेय फ्रान्सका मोन्तेयँलाई प्राप्त छ । उनले निबन्ध आत्मकेन्द्रित हुन्छ भनेका छन । पछि गएर इङ्ल्याण्डका विद्वान बेकनले निबन्धलाई वस्तुपरक ढङ्गबाट चिनाउदै छरिएको चिन्तन भन्छन् । यसरी आत्मपरक निबन्धका जन्मदाता मोन्तेयँ र वस्तुपरक निबन्धका जन्मदाता बेकन हुन पुगे । संरचनाका दृष्टिले निबन्ध छोटो छरितो विधा हो । निबन्धकारले आफ्ना निबन्धमा कुनै विषयको सूचना दिइरहेको हुन्छ, वस्तुको वर्णन गर्दछ, अथवा मनमा लागेका कुरा सर्सर्ती भन्छ, त्यसैले त निबन्ध मनको पोखाइ हो । सिर्जनात्मक विधामा निबन्ध विश्व साहित्यको कान्छो विधा हो तर यसको विकास छिटो र छरितो रूपमा हुन पुग्यो । साहित्यका अन्य विधाहरू निबन्ध, आख्यान (कथा र निबन्ध) र नाटक/एकाङ्कीसँग यसको नजिकको सम्बन्ध देखापर्दछ । निबन्धको कथ्य सामाजिक जनजीवनकै सेरोफेरोभिन्न अडिएको हुन्छ । त्यसैले जुनसुकै विषयमा स्वतन्त्र ढङ्गले सोचविचार गर्नु र आफ्नो भावनात्मक प्रवाहमा अनियन्त्रित रूपले पोखिनु निबन्ध हो भन्न सकिन्छ ।

**चौथो परिच्छेद** अन्तर्गत नगेन्द्र शर्माका निबन्धको विषय विश्लेषण गरिएको छ । शर्माका संस्मरणात्मक निबन्धहरूमा पनि विषयगत विविधता पाइन्छ । शर्माले जुनसुकै विषयमा पनि आफ्नो विद्वता र अनुभूतिलाई मजासँग फेटेर यस सङ्ग्रहका निबन्धको विषयवस्तु आफ्नै वरपरको सामाजिक परिवेशप्रति दृढतापूर्वक बौद्धिक तर्क गर्दै प्रतिक्रिया जनाउदै पाठकलाई पत्यारलाग्दो बनाउछन् । यस सङ्ग्रहका निबन्धमा संस्मरण र व्यङ्ग्यलाई विषयवस्तु बनाइएको

पाइन्छ । 'अतितकालमा आफ्नो जीवनले खपेका घटनाहरूलाई शर्माज्यूले एकै कोणबाट मात्र प्रस्तुत गर्नुभएको छैन । विवरणात्मक संस्मरण लेखाइ त वहाँको आफ्नो रुचिक्षेत्र हुँदै होइन । वहाँ संस्मरण लेख्नुहुन्छ - युगीन यथार्थ उद्घाटन गर्न, घटनाको महत्व दर्शाएर मनोरञ्जन दिनेहोइन । वहाँ अतितको पृष्ठ पल्टाउनुहुन्छ, कालजन्य सभ्यता र मान्यताको परिचय दिन । वहाँ पृष्ठ पल्टाउँदै जानुहुन्छ र हामी त्यहाँ नेपाली परिवेशका अध्यारा उज्याला पक्षहरू एकपछि अर्को गर्दै देखिँदै गएको, जीवन सङ्घर्षको कथा उत्कर्ष हुँदै गएको र मानव जीवनको दुःख सुखको छायाँ प्रतिबिम्बित हुँदै गएको पाउछौँ भन्ने धारणा यस सङ्ग्रहमा पाइन्छ । उनका यस सङ्ग्रहका निबन्धहरू विषयगत गहिराईका दृष्टिले पनि मर्मस्पर्शी छन् । भाषा साहित्यिक तथा समीक्षात्मक निबन्धहरूमा पनि विषयगत विविधता पाइन्छ । जुनसुकै विषयमा पनि विचार प्रक्षेपण गर्ने एकमात्र साहित्यिक विधा निबन्धलाई उनले मूल रूपमा रूचाउनाको कारण पनि आफ्ना जीवनको भोगाइ र अध्ययनको चिन्तनबाट प्राप्त बौद्धिकतालाई व्यक्त गर्नुलाई देखिन्छ । उनका निबन्धमा व्यक्त गरिएको विषय वैज्ञानिकतामा आधारित र रुढिवादी छन् । यस सङ्ग्रहमा समाजमा अझै जूकोझैँ टाँसिएर रहेका घृणित रुढिहरूलाई विषयका रूपमा लिएर आफ्नो चतुरतापूर्वक तर्क, दृष्टिकोण प्रयोग गर्दै गतिलो भापड दिएर पाठकलाई पत्यार लाग्दो रूपमा प्रस्तुत गरेका छन् । आत्मपरक तथा निजात्मक निबन्धहरूमा आत्मपरक निबन्धमा निबन्धकारले आफ्ना भावसंवेग, अनुभूति र संवेदनालाई बौद्धिक चेतनाको विद्युत शक्ति प्रयोग गरी पाठकलाई जागरुक बनाउने विषयवस्तु प्रयोग गरेको पाइन्छ । त्यस्तै वस्तुपरक निबन्धमा पनि निबन्धकारले आफूभित्रको साहित्यिक संस्कारलाई विम्भाई-विम्भाई स्पर्श गर्दै निबन्धसङ्ग्रहभित्रका निबन्धहरूमा निबन्धकारले साहित्यिक व्यक्तित्व, लोकसंस्कृति, साहित्य सिद्धान्त आदिलाई निबन्धको विषयवस्तुका रूपमा लिएका छन् । अरूको लहैलहैमा लाग्नुभन्दा वास्तविकतालाई मनन गर्नुपर्ने, लोकसंस्कृतिको संरक्षण, समाजमा नागरिकको योगदान विशिष्ट हुनुपर्ने आदि यी निबन्धहरूको उद्देश्यका रूपमा आएका छन् । यस परिच्छेदमा भएका निबन्धहरूको विषयवस्तु प्रचलित समाजमा रहेका सूक्तिहरू, सामाजिक र सांस्कृतिक मान्यता आदि रहेका छन् । यस परिच्छेदका निबन्धहरूको उद्देश्य समाजमा रहेका गलत मान्यता र संस्कारलाई युगसापेक्ष बनाउँदै लैजानु रहेकोछ ।

**पाँचौँ परिच्छेद** अर्न्तगत नगेन्द्र शर्माको निबन्धको उद्देश्यका अध्ययन गरिएको छ । शर्माका निबन्धमा विविध उद्देश्यहरूमा केन्द्रित रहेका छन् । उनका निबन्धमा नेपाली समाजका विभिन्न अवस्थाका विविध पक्षमाथि व्यङ्ग्य गरिएको पाइन्छ । उनका निबन्धमा मानिसले आफूलाई समय अनुसार परिवर्तन र परिमार्जन गर्दै लैजानु पर्छ र निबन्धकारलाई आफू माथि आइपरेको विपतिको वर्णन गरेका छन् । उनका निबन्धमा हाम्रो धर्म सस्कृतिलाई रुढिवादी परम्पराबाट आधुनिक परम्परामा ढाल्दै लग्नु पर्दछ भन्ने भाव प्रस्तुत गरिएको छ । उनका निबन्धबाट प्राचीन पुस्तकहरू, पौराणिक व्यक्तित्वहरू, धर्ममतहरूप्रति देखिएका केही अन्योल हटाउनु पनि उद्देश्य राखेको पाइन्छ । साथै समाज सुधारक तथा राजनीतिक व्यक्तित्वहरू समेटेर समाजका विकार र विकृतिहरू फ्याकेर नयाँ समाज र संसारको सृजना गर्नुपर्छ भन्ने उद्देश्य रहेको पाइन्छ । उनका निबन्धका उद्देश्यहरू बौद्धिकता, सामाजिकता, आत्मपरकता/निजात्मकता, प्रगतिशीलता जस्ता रहेका छन् । आजका युवा-पिँडिहरू पाश्चात्य संस्कार र सभ्यतामा भन्-भन् भासिदै जान सक्ने देखी भोलिका हाम्रा सन्तानहरूलाई रोक्ने प्रयास पनि उनका निबन्धमा देखिन्छ । केही पूर्वेली र पश्चिममा विद्वान, अन्वेषक र अनुषन्धानकर्ताका दृष्टिकोणहरू समेत पस्कने उद्देश्य उनका निबन्धहरूमा रहेको छ । कुनै पनि जीवित भाषामा सामान्यतया व्याकरणिक नियममा विविधता देखिए पनि स्तरीय र मानक नियम निर्माण गर्न आवश्यक छ भन्नु यस निबन्धको उद्देश्य हो । भाषाविद्हरूको जुँगाको लडाइँले साधारण भाषाका प्रयोक्ताहरूमा भ्रम सृजना गर्दछ भनी स्पष्ट पार्नु पनि उनका निबन्धको उद्देश्य हो ।

**छैटौँ परिच्छेद** नगेन्द्र शर्माको निबन्धको भाषाशैलीका बारेमा अध्ययन गरिएको छ । यी निबन्धहरूको भाषा सरल र बोधगम्य रहेको छ । तत्सम, तद्भव र आगन्तुक तीनै स्रोतका शब्दहरूको समानुपातिक प्रयोग यस निबन्धसङ्ग्रहमा निबन्धकारले गरेका छन् । चर्चित सूक्ति, उखान-टुक्का, पूर्वीय एवम् पाश्चात्य जगत्का विद्वान्, राजनीतिक व्यक्ति, घटना, परम्परा तथा परिवेश आदिको आख्यानात्मक प्रस्तुतिले निबन्ध रोचक तथा पठनीय बन्न पुगेको छ । नगेन्द्र शर्माको यस निबन्धसङ्ग्रहमा शिल्पगत विविधता देखिन्छ । उनी बढी आत्मपरक र कमै मात्रामा वस्तुपरक निबन्धकार हुन् भन्न सकिन्छ । वाक्यगठनका दृष्टिले हेर्दा उनका अधिकांश निबन्धमा लामालामा जटिल वाक्यको प्रचुरता देख्न सकिन्छ । धेरै ठाउँमा पूर्णविरामपछि 'र',

‘तर’ जस्ता संयोजकको प्रयोग भएबाट उनका निबन्धमा भाषिक विचलन बढी मात्रामा देख्न सकिन्छ । यस परिच्छेदका निबन्धहरूको भाषा सरल र बोधगम्य रहेको छ । तत्सम, तद्भव र आगन्तुक तीनै स्रोतका शब्दहरूको समानुपातिक प्रयोग यस निबन्धसङ्ग्रहमा निबन्धकारले गरेका छन् । चर्चित सूक्ति, उखान-टुक्का, पूर्वीय एवम् पाश्चात्य जगत्का विद्वान्, राजनीतिक व्यक्ति, घटना, परम्परा तथा परिवेश आदिको आख्यानात्मक प्रस्तुतिले निबन्ध रोचक तथा पठनीय बन्न पुगेको छ । निबन्धकारका बौद्धिक तर्क तथा गहन अध्ययनको प्रभावका कारण उनका निबन्धले बौद्धिक पाठकहरूकै बढी अपेक्षा राख्छन् । नगेन्द्र शर्माको यस निबन्धसङ्ग्रहमा शिल्पगत विविधता देखिन्छ । उनी बढी आत्मपरक र कमै मात्रामा वस्तुपरक निबन्धकार हुन् भन्न सकिन्छ । वाक्यगठनका दृष्टिले हेर्दा उनका अधिकांश निबन्धमा लामालामा जटिल वाक्यको प्रचुरता देख्न सकिन्छ । धेरै ठाउँमा पूर्णविरामपछि ‘र’, ‘तर’ जस्ता संयोजकको प्रयोग भएबाट उनका निबन्धमा भाषिक विचलन बढी मात्रामा देख्न सकिन्छ ।

सातौँ परिच्छेदमा यस शोधपत्रको उपसंहार तथा निष्कर्ष प्रस्तुत गरिएको छ ।

## ७.२ निष्कर्ष

समग्रमा शर्माका निबन्धहरूमा आफूले घुमेका ठाउँबाट पाठकलाई ती ठाउँको दृश्य, समाज, राजनीति, शिक्षा आदिको प्रत्यक्ष प्रसारणको रूपमा अनुभव दिलाउने तथा यात्रा बिसाएर फुर्सदको समयमा घोट्लिएर लेखेको भान हुने स्मरणकारी विषयवस्तु पाइन्छ । उनका निबन्धहरूमा शैक्षिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, भौतिक आदिका विभिन्न पाटाहरूलाई टपक्क टिपेर प्रस्तुत गरेको पाइन्छ । यस्तो यात्रामा लेखकको निजात्मक संवेदनाभित्रका विषयहरू पनि झल्किएका देखिन्छन् । शर्माको निबन्ध यात्राको पहिलो चरणमामा लेखिएका निबन्धहरूको भाषामा कतैकतै कसरमसर रहेका देखिन्छ । केही निबन्धहरू गफजस्ता मात्र रहेका देखिन्छन् । यसै चरणका केही निबन्धहरूमा शीर्षकसँग निबन्धको विषयवस्तुको तालमेल पनि रहेको देखिँदैन भने दोस्रो चरणका निबन्धहरू भने कसिलो र परिष्कृत भाषाशैलीमा लेखिएका देखिन्छन् । यिनै विशेषताले गर्दा शर्मा एक सफल निबन्धकारका रूपमा नेपाली निबन्धका क्षेत्रमा स्थापित भएका छन् ।

## सन्दर्भसामग्री-सूची

अधिकारी, रविलाल. २०४७, नेपाली निबन्धको विकासक्रम. गरिमा (वर्ष ९ : अङ्क ५. पूर्णाङ्क १००. चैत्र). पृ. ६२-७० ।

अधिकारी, रामलाल. सन् १९७५, नेपाली निबन्ध यात्रा. दार्जिलिङ : नेपाली साहित्य संचयिका ।  
उपाध्याय, केशवप्रसाद. २०५९, साहित्य प्रकाश (छैटौँ संस्करण), ललितपुर : साभा प्रकाशन ।

गौतम, देवीप्रसाद र खगेन्द्र प्रसाद लुइटेल्. २०५४, नेपाली निबन्ध, काठमाडौँ : नवीन प्रकाशन  
थापा, मोहनहिमांशु. २०५०, साहित्यको परिचय (चौथो संस्करण), काठमाडौँ : साभा प्रकाशन ।  
देवकोटा, लक्ष्मीप्रसाद. २०५३, लक्ष्मी निबन्धसङ्ग्रह (चौथो संस्करण), ललितपुर: साभा प्रकाशन  
पराजुली, कृष्णप्रसाद. २०५२, पन्ध्रतारा र नेपाली साहित्य (आठौँ संस्करण), काठमाडौँ : साभा प्रकाशन ।

प्रधान, प्रमोद. २०६६, नेपाली निबन्धको इतिहास, काठमाडौँ : रत्न पुस्तक भण्डार ।

बराल, ईश्वर (सम्पा.) २०४६, सयपत्री (चौथो संस्करण), काठमाडौँ : साभा प्रकाशन ।

भट्टराई, घटराज. २०५१, नेपाली साहित्यकार कोश, काठमाडौँ : नेशनल रिसर्च एशोसियेट्स ।

भण्डारी, तेजप्रसाद. २०६५, नगेन्द्र शर्माको जीवनी, व्यक्तित्व र कृतित्वको अध्ययन, अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोधपत्र. त्रि.वि.वि. कीर्तिपुर

राकेश. सन् १९६५, निबन्ध दर्शन, इलाहाबाद : खालियर किताबघर ।

रेग्मी, दीनदयाल. २०६२, रामचन्द्र गौतमको निबन्धकारिता, अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोधपत्र त्रि.वि.वि. कीर्तिपुर

शर्मा, गोपीकृष्ण. २०६३, नेपाली निबन्ध परिचय (चौधौं संस्करण), काठमाडौं : रत्न पुस्तक भण्डार ।

शर्मा, तारानाथ. २०५६, नेपाली साहित्यको इतिहास (चौथो संस्कार), काठमाडौं : अक्षर प्रकाशन ।

शर्मा, मोहनराज. २०५५, समकालीन समालोचना सिद्धान्त र प्रयोग, काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान ।

शर्मा, नगेन्द्र. २०२६, नगेन्द्रका निबन्ध, काठमाडौं : साभा प्रकाशन ।

शर्मा, नगेन्द्र. २०४२, अण्डादेखि भ्यागुतोसम्म, काठमाडौं : साभा प्रकाशन ।

शर्मा नगेन्द्र. २०४७, बनारसमा बेचिएकी बहिनी, काठमाडौं : क्रस इन्टर -मिडिया ।

शर्मा, नगेन्द्र. २०६८, अनुस्मरण, काठमाडौं ओरिएन्टल पब्लिकेशन ।

शर्मा, नगेन्द्र. २०३२, नेपाली जनजीवन, काठमाडौं : श्री अचला प्रकाशन ।

शर्मा, नगेन्द्र. २०३९, ईसाई पुराण : नेपाल खण्ड, काठमाडौं : सामदान प्रकाशन ।

शर्मा नगेन्द्र. २०६६ कथा क्यानाडा, काठमाडौं : नेपाल प्रिन्टिङ सपोर्ट ।

शर्मा नगेन्द्र. सन् २००५, छ्वासमिस मासमिस, सिलगढी : पुष्पा प्रकाशन ।

शर्मा नगेन्द्र. सन् २००५, सम्झाउनि -बिसाउनि, सिक्किम : निर्माण प्रकाशन ।

सिग्देल, भगवती. २०६९, नगेन्द्रका निबन्ध, निबन्धसङ्ग्रहको कृतिगत अध्ययन. अप्रकाशित स्नातकोत्तर शोधपत्र. त्रि.वि.वि.

सुवेदी, राजेन्द्र. २०५८, साष्टा सृष्टि : द्रष्टा दृष्टि, (तेस्रो संस्करण). ललितपुर : साभा प्रकाशन

श्रेष्ठ, दयाराम र मोहनराज शर्मा. २०३४, नेपाली साहित्यको सङ्क्षिप्त इतिहास, काठमाडौं : नेपाल राजकीय प्रज्ञा प्रतिष्ठान ।